मिथिलाक आर्थिक विकास



नरेन्द्र झा

राज्य छोट हो आ कि पैघ, महत्वपूर्ण बात ई अछि जे ओ आर्थिक रूप स' सुदृढ़ हो । किसान अपन खेती स', छोट-पैघ उद्योग स' जुड़ल लोक उपलब्ध औद्योगिक संसाधन ओ वातारवण स' आ युवा अपन शिक्षा आ रोजगार स' प्रसन्न हो । संभव छैक जे सुदूर भविष्यमे मिथिलांचल सेहो एकटा अलग राज्य बनि जाय, मुदा अलग राज्य बनि जायब ओतेक प्रन्नताक बात नहि छैक जतेक कि एकरा आत्मनिर्भर आ सुखी-सम्पन्न राज्य बनब । वर्षों पूर्व बिहार त' एकटा अलग राज्य बनले छल, मुदा कि एकरा आत्मनिर्भर आ सुखी-सम्पन्न राज्य कहल जा सकैत अछि । नहि, कियेक त' सुविचारित आर्थिक नीति नहि अपनाओल गेल आ उपलब्ध संसाधनक समुचित उपयोग नहि कयल गेल ।

समस्त मिथिलांचलक नदी, प्राचीन ओ अर्वाचीन उद्योग-धंधा, ऊर्जा आ यातायात कें सुविचारित नीति स' व्यवस्थित कयला पर एखनो एहि क्षेत्र कें खेती ओ उद्योगक माध्यमे धन-धान्यपूर्ण कयल जा सकैत अछि । बेरोजगारी आ श्रम-शक्तिक अन्य राज्यमे पलायन रोकल जा सकैत अछि ।

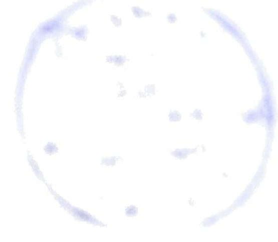
प्रस्तुत पोथी अदौमे आत्मनिर्भर मिथिला कें विपन्न मिथिलामे परिवर्तित भ' जेबाक दुखद व्यथा-कथाक संगहि फेर एक बेर एकरा महिमामंडित करबाक लेल अपनाओल जायवला आयास पर एकटा शोधपूर्ण प्रस्तुति अछि - अग्निपुष्प

मिथिलाक आर्थिक विकास

मिथिलाक आर्थिक विकास

नरेन्द्र झा

शिखा प्रकाशन



अनुक्रम

नाम, क्षेत्रफल ओ आर्थिक विकासक संभावना

वैदिक कालहिस', जाहि भूभागक प्रतिष्ठा ब्रह्मज्ञानक विकासक केन्द्रक रूपमे इतिहासक पृष्ठ-पृष्ठमे अंकित अछि, जकर अनुशासनधारा स्मार्त कालहुमे देश-देशक आचार-क्षेत्रमे प्रेरक भेल, जे जनपद अपन दर्शनक विचार-रश्मि स' सम्पूर्ण भारतकें आलोकित कयलक ओ जकर काव्य-कल्पना भारतीय साहित्यक रसस्रोतकें निरन्तर समद्ध कयलक ओहि महत्वमयी मिथिलाक एखन अधोगति किएक। ऋग्वेदक दस मंडलमे तीन, प्रथम, तृतीय ओ चतुर्थ, एतयक ऋषि गौतम, विश्वामित्र ओ हिनका लोकनिक पुत्र-पौत्रक रचल अछि। एहिमे विश्वामित्रक बनाओल प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र, याज्ञवल्क्यक शुक्ल यजुर्वेद; वेदान्तक आदि ओ आधार ग्रन्थ ईशावास्योपनिषद् सहित शतपथ ब्राह्मण जाहिमे अछि वेदान्तक द्वितीय महाग्रन्थ वृहादारण्यकोपनिषद्, अनेक श्रौत, गुह्य ओ धर्मसूत्र, स्मृति ओ पुराण जैन ओ बौद्ध धर्मक प्राकृत ओ पाली साहित्य, जैमनिक पूर्वमीमांसा ओ शवरक भाष्य, कपिलक सांख्य; गौतमक न्याय ओ कणादक वैशेषिक दर्शन, कुमारिलक वार्तिक ओ टीका; मडनक मीमासा ओ वेदान्तवार्तिक, वाचस्पतिक भामती; उदयनक किरणावली; गगेश-बर्द्धमान-पक्षधर-शकर-वाचस्पतिक नव्यन्याय; लक्ष्मीधर, हलायुध, श्रीदत्त, चंडेश्वर आदिक निबध; मुरारी, जयदेव, विद्यापति आदिक काव्य; जनक, हरिसिंह, शिवसिह सन राजा; चाणक्य सन नीतिकुशल मेधावान मनीषीक स्मरण घमंड लेल नहि सत्कर्मक प्रेरणा लेल। एते दीप्तिमान भ' हमरा लोकनि कतौ पतित रही।

ई भूभाग इक्ष्वाकुतनय निमि महाराजक पुत्र मिथि महाराजस' बसाओल गेल तें एकर नाम मिथिला भेल। एहि नदी मातृक देशमे नदीक बाहुल्य अछि एवं एहि नदी सभक तीरमे लोकसभ बसैत गेलाह तें तीरभुक्ति भेल जकरा देशभाषामे तिरहुति वा तिरहुत लोक कहैत छथि। मिथिला नाम स' बहुत नव तीरभुक्ति नाम थिक। बृहद्विष्णु-पुराणमे मिथिलाक चतु:सीमाक उल्लेख अछि। मिथिला खंड-(C 500 AD)। उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गंगा नदी, पूब मे महानन्दा ओ पश्चिममे गंडक नदी अछि। हिमालय स' गंगा धरि 100 मील ओ पूब स' पश्चिम धरि 250 मील; क्षेत्रफल 25,000 वर्गमील। ई क्षेत्र 25.3 अंश उत्तर अक्षांश स' 27.5 अंश उत्तर अक्षांश धरि एव 83.80 अंश स' 88.80 अंश पूर्व देशान्तर धरि व्याप्त अछि। पूर्वी चम्पारण, पश्चिमी चम्पारण, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, शिवहर, वैशाली, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, बेगूसराय, किसनगज, सुपौल, सहरसा, कटिहार, पूर्णिया, अररिया, खगड़िया, मधेपुरा ओ तराई क्षेत्रक मोरंग, सप्तरी, महोत्तरी, सरलाही, रौतहाट, बारा ओ परसा जिला अछि। जिलाक परिचयात्मक विवरण देखू।

मिथिलांचलक जिलाक परिचयात्मक विवरण (जनगणना रिपोर्ट 1991 क अनुसार)

क्रम संख्या	जिला	क्षेत्रफल वर्ग कि. मी.	जनसंख्या (लाख मे)			घनत्व व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मि.	साक्षर व्यक्तिक प्रतिशत			महिला प्रति हजार पुरुष	कार्यरत आबादी कुल आबादीक प्रतिशत	कृषि तथा संबद्ध क्षेत्र	कार्यरत गैर घरेलू क्षेत्र	आबादीक विभाजन		
			पुरुष	महिला	कुल		पुरुष	महिला	कुल					घरेलू क्षेत्र	निर्माण क्षेत्र	सेवा क्षेत्र
1.	बेगूसराय	1,918	9.55	8.58	18.13	945	39.71	19.11	29.96	898	28.23	81.00	2.75	2.53	0.86	12.79
2.	दरभंगा	2,279	13.11	11.98	25.09	1101	39.07	16.74	28.41	913	29.49	84.10	1.89	1.43	0.49	12.05
3.	कटिहार	3,057	9.54	8.68	18.22	596	31.20	13.23	22.64	910	33.71	86.55	1.20	0.97	0.43	10.84
4.	मधुबनी	3,501	14.64	13.65	28.29	808	39.26	13.77	29.96	933	32.49	88.80	1.08	1.59	0.32	8.19
5.	मुजफ्फरपुर	3,172	15.46	14.01	29.47	929	39.65	18.62	29.65	906	28.94	82.57	2.18	1.22	0.66	13.34
6.	पश्चिमी चम्पारण	5,228	12.41	10.90	23.31	446	32.50	12.00	22.91	879	34.95	89.41	0.99	1.17	0.28	8.11
7.	पूर्वी चम्पारण	3,968	16.16	14.26	30.42	767	30.87	13.52	22.74	883	30.86	90.36	0.89	0.96	0.31	7.45
8.	पूर्णियां	3,229	9.85	8.91	18.76	581	31.26	13.23	22.70	905	36.42	89.98	0.84	0.71	0.23	8.24
9.	अररिया	2,830	8.45	7.67	16.11	569	29.52	11.03	20.72	908	35.11	91.36	0.96	0.65	0.19	6.83
10.	किशनगंज	1,884	5.12	4.75	9.87	524	26.42	8.82	17.95	929	32.98	90.17	1.32	0.37	0.17	7.95
11.	सहरसा	1,692	13.30	11.85	25.15	612	37.43	12.16	25.52	891	37.49	91.01	0.68	0.65	0.29	7.36
12.	सुपौल	2,420														
13.	मधेपुरा	1,788	6.24	5.54	11.78	659	32.09	11.93	22.62	887	37.68	92.68	0.52	0.69	0.16	5.94
14.	समस्तीपुर	2,904	14.09	13.07	27.15	935	40.29	17.22	29.19	928	28.10	83.27	2.21	1.85	0.46	12.17
15.	सीतामढ़ी	2,643	12.68	11.20	23.89	904	31.85	12.71	22.87	883	29.88	87.97	1.57	1.20	0.54	8.69
16.	शिवहर															
17.	वैशाली	2,036	11.15	10.29	21.44	1053	44.40	19.36	32.38	923	25.55	83.81	2.03	1.72	0.60	11.82
18.	खगड़िया	1,486	5.28	4.59	9.87	664	39.26	13.77	26.96	868	32.72	88.20	1.01	1.47	0.39	8.85
19.	नवगछिया (भागलपुर)	870	2.48	2.13	4.61	530	39.64	18.42	29.83	859	29.27	88.27	2.67	0.42	0.21	8.37

आदिकालमे देशक बंटवाराक आधार पहाड़, नदी ओ समुद्र छल। बादमे पाया, देवाल, तार आदि स' घेरक' विभाजन होब' लागल। एहि भूभागमे एहिना भेल। उत्तरी सीमा पर ईस्ट इंडिया कम्पनी एवं गोरखास' 1816 मे सन्धि भेल। उनैसम शताब्दीक प्रारम्भमे अंग्रेज लोकनि शक्तिशाली भ' गेल छलाह। यूरोपमे नेपोलियनक संग युद्ध चलि रहल छलै एवं भारतक पश्चिममे मराठा ओ राजपूत ब्रितानियाक आधिपत्य स्वीकार करबाक हेतु प्रस्तुत नहि छलाह। भारतक उत्तर-पूबमे बंगाल ओ अवधक नवाब स' ई सभ उलझल छलाह। नेपालक गोरखा लोकनि पहाड़ टपिकय जनजाति (TRIBAL) लोकनिके निकाल बाहर कयलनि ओ पश्चिममे सतलज, पूबमे तिस्ता करीब 700 मील क्षेत्र एवं 100 मील क्षेत्र उत्तर-दक्खिन तिब्बत ओ भूटान धरि 70,000 वर्ग मील क्षेत्र 1768 मे पृथ्वी नारायण शाहक कार्यकालमे कब्जा कयलनि। पलासी युद्धक 11 वर्षक बाद गोरखा एवं अंग्रेजक विरुद्ध घमासान युद्ध होइत रहल। दिसम्बर 1815 में दुनूक बीच सन्धि भेल मुदा गोरखा सरकार एकरा नहि मानलक। यूरोपक लड़ाइमे अंग्रेज सफल भेलाह। गोरखा लोकनि किछु सहमि गेला एवं मार्च 1816 मे सुगौलीक (चम्पारण) सन्धि कार्यान्वित भेल। बीच-बीचमे कोस-आधकोस पक्का ईटक स्तूप बनाबाओल गेल एवं ओहिपर नम्बर सेहो देल गेल। पायाक दू बगली नौ-दस गज भूमि बाटक हेतु परता अछि। पाया पर बांस, आम, पीपर, पाकड़ि, बड़, डुमरि वृक्ष लगाओल अछि। स्थिति यैह अछि जे ओतयक लोकक खेत भारतमे त' दलान नेपालमे अछि। जेनरल ओक्टरलोनीक ई समय छल एवं एकरे फलस्वरूप 1817 मे ब्रितानिया सरकार हिनका 'नाइटहुड'क पदवी स' सम्मानित कयलक। एखनहु ई भूभाग विवादग्रस्त अछि एवं एहि अंचलक विकासमे बाधक सिद्ध भ' रहल अछि। करीब 5,000 वर्गमील जमीन नेपालक अधीन अछि, जे गोआ (1400 वर्गमील) या पांडिचेरी (100 वर्गमील) स' कतेको बेसी अछि।

ई भूभाग भारतवर्षक उत्तर-पूबमे अछि। भूमि नव-निर्मित छैक। पांच लाख वर्ष पूर्व एतय समुद्र छल। पूबमे बंगालक खाड़ी स' अरब समुद्र धरि तथा उत्तरमे हिमालय स' विन्ध्यपर्वत धरि। गंगा, गंडक, कोसी, बागमती एवं हिमालय स' निःसृत अन्य नदीसभ माटि, पांक ओ बालू स' एहि समुद्र के भरलक। भूमि उत्तर स' दक्षिण आ दक्षिण स' पूब ढलाउ होइत गेल। माटि बलुआर, दोरस, मटियार, चिकनी ओ ऊसर अछि। धनहर आ भीठ भूमि सेहो अछि। औसत 54 इंच वर्षा होइछ। जनवरी-अक्टूबरमे 48 इंच, नवम्बर-फरवरीमे 1.5 इंच ओ मार्च-मइ मे 4.5 इंच। कुल 55 स' 65 दिन वर्षा होइछ। जलवायु उत्तरमे हिमालय आ दक्षिणमे हिन्द महासागर स' प्रभावित होइछ। गर्मकाल मे अप्रैल स' जुलाइ धरि एवं शीतकालमे नवम्बर स' फरवरी धरि। कठिन श्रम कर' जोगर जलवायु नहि अछि। खेती जीविकाक मुख्य साधन ते कृषि आधारित उद्योगक विकास एत' संभव। औद्योगिक संरचनाक अभाव। सस्त श्रम-शक्तिक सदुपयोग नगण्य। विद्युत

शक्तिक पूर्ण संभावना। यातायातक समुचित विकास बाधित। सब संभव अछि। मात्र सुनियोजित आर्थिक विकासक मार्ग गत् पचास वर्ष स' अवरुद्ध राखल गेल।

आजुक युगमे सम्पूर्ण विश्वमे अधिकाधिक मात्रामे अनुभव कयल जा रहल अछि जे आर्थिक विकास मानवक सब आवश्यकता एवं आकांक्षाक पूर्तिक एकमात्र साधन थिक। विकसित, अविकिसित ओ अर्द्धविकसित देशमे जीवनक आवश्यकताक पूर्ति तथा बेरोजगारी एव निर्धनता सदृश विकट समस्याक समाधानक हेतु मात्र आर्थिक विकास एकमात्र साधन अछि। द्वितीय महायुद्धक बादक परिस्थिति आर्थिक विकासक महत्वके एक नवीन स्वरुप प्रदान कयलक। अंग्रेजक शासनकालमे भारतीय अर्थव्यवस्था स्वार्थी, शोषक एवं दोषपूर्ण नीतिक कारण आर्थिक दिवालियापनक शिकार बनल। उनैसम शताब्दीमे भारत स' इंगलैडक खजानामे धनक-प्रवाह होइत रहल एवं ई देश नियमित रुप स' सम्पतिविहीन राष्ट्र बनि गेल। जे देश सतरहम एवं अठारहम शताब्दीक पूर्वार्द्ध धरि सम्पन्ताक चरम विन्दु पर छल। एतयक कृषक भूमिकें 'धरती माता' मानैत छलाह से कार्ल मार्क्सक मतानुसार अंग्रेजक शासन कालमे भारतीय कृषि व्यवस्थाके तानाशाहीक शिकंजामे जकड़ि देल गेल जकर फलस्वरुप कृषक भयंकर शोषण स' ग्रसित भ' गेलाह। कृषकक समृद्धता हीनतामे परिवर्तित भ' गेल। फलस्वरुप ओ भूखाएल, अर्द्धनग्न, बेकार ओ सर्वथा असहाय भ' गेला। एकर पूर्ण प्रभाव मिथिलांचलमे सेहो भेल। की ई शोषण स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद रुकि सकल; की सरकार बेमातर भाइक संबंध नहि राखलक; की एतयक संसाधनक पूर्ण सदुपयोग कयल गेल। ससाधनक सही पहचान कयल गेल, अमलमे आनयक हेतु शत्रुवत् नहि वरन् मित्रवत् व्यवहार कयल गेल। मात्र जल संसाधन पर ध्यान देला स' ई स्पष्ट भ' जायत। दामोदर, भाखड़ा-नांगल, हीराकुंड, नागार्जुन सागर, रिहान्ड आदि बहुउद्देशीय योजना बनल। ओतय जनसमुदाय लाभान्वित भेल छथि मुदा एतय की कोसी, गंडक, बागमती, कमला ओ अधवारा समूहक नदी द्वारा बाढ़ि नियंत्रण ओ पटौनी व्यवस्था सफल भ' सकल। बीसम शताब्दीमे नहि भ' सकल। की एकैसम शताब्दी मे आशा कयल जा सकैछ।

आर्थिक विकास एक दीर्घ प्रक्रियाक परिणाम थिक। देशक साधनक उपयोग अधिकाधिक कुशलतापूर्वक कयल जाइछ। आर्थिक विकासक हेतु राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक तत्व जतेक महत्वपूर्ण अछि ततबे आर्थिक तत्व। प्राकृतिक साधन जे प्रकृति प्रदत्त नि:शुल्क देन अछि तकर आर्थिक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ैत छैक आ से मिथिलांचलमे भरल अछि जे एहि अध्ययन स' स्पष्ट भ' जायत।

प्राचीन कालमे मिथिलांचल आर्थिक दृष्टिस' स्वावलम्बी छल। प्रत्येक आवश्यक वस्तुक उत्पादन ओ निर्माण एतय भ' जाइत छल। समाजक खास वर्ग उद्योग विशेषमे सलग्न छलाह। सम्प्रति भ्रामक प्रचार कयल जाइछ जे ई भूभाग सर्वथा अनुपयुक्त अछि

औद्योगिक विकास करबामे एव आर्थिक दृष्टि स' आत्मनिर्भर नहि भ' सकैछ। गण्डकी, कोसी आदिक नहरस, खेत पटतै, पर्याप्त अन्न उपजतै, किये किओ भूखल रहत? हिमालयक पाथर स' चलय लेल बढ़िया सड़क ओ रहय लेल नीक घर बनतै। जल-विद्युत स' अपन कल-कारखाना, रेल मोटर आदि सवारी चलतै। रोगी आरोग्य लेल आधुनिक अस्पताल ओ धियापुताक साधारण स' उच्चतम शिक्षा लेल अत्याधुनिक स्कूल कालेज ओ विश्वविद्यालय बनतै। एखन धरि एहि वस्तु सभक खोज कहा केलियै जे भेटत? कोन देश, कोन समाज आलस्य, औदासीन्यमे सम्पन्न भेल अछि? कर्ममे चित्त ओ हृदयमे उत्साह राखि चलू, कल्याण के छीनि सकत?

■



नदी घाटी परियोजना

नदी के संस्कृति ओ सभ्यताक जननी कहल गेल अछि। प्रत्येक सांस्कृतिक आरोह-अवरोह एवं सभ्यताक उत्थान-पतन नदीक कल-कल-छल-छल करैत अविरल धाराक इतिहासमे नुकायल अछि। मिथिलांचलमे नदीक बाहुल्य अछि। नदी सभक तीरसँ लोकसभ बसैत गेलाह तें 'तीरभुक्ति, तिरहुति वा तिरहुत नामानसँ एहि अंचलक क्षेत्र। पूब सँ पच्छिम धरि प्रधान नदी 15 टा अछि और छोट-छोट नदी बहुतो। यथा, कौशिकी (चनरा) एकर छाहन बहुत अछि, पीनवाहा (गेरुआ), अह कुशी (पहुआ-मय), अडधिका (घेमुडा), त्रियुगा, वर्तनी (बलान), स्वर्णवती (सोनी), कमला, जीवछन्या (जीवछ), यमुनी, बिल्पवती (बेलौनी) धुयसी, बिमला, गौरिका, जलाधिका, दुग्धवती (खिरोई), व्याघ्रमुखी (छोटी बागमती), गण्डक, हरिद्रा, करेह, विरजा, मण्डना, अर्धबारा (अधोबारा), इक्षुमती, लक्ष्मणा (लखन्दै), बाग्वती, गण्डकी (शालग्रामी)। दक्षिण भागमे भारतक प्रमुख नदी गंगा अछि एवं छोट नदी बाया। सोनपुरक लग गंगा-गण्डकी संगम अछि जतय कार्तिक पूर्णिमामे विख्यात हरिहर क्षेत्रक मेला होइत अछि तथा दक्षिण-पूबमे गंगा-कौशिकीक संगम अछि।

उत्तर बिहारक नदी



एहि नदीमातृक भूभागक आर्थिक विकास बाढ़िक रोकथाम, पटौनीक अत्याधुनिक व्यवस्था, पनबिजलीक समुचित विकास ओ सहायक उद्योगक स्थापना आ समुचित आधुनिक व्यवस्था पर निर्भर अछि। गंगाक बाम किनार सँ हिमालयक तराइ धरि चौड़ा एवं पच्छिमी चम्पारण सँ कटिहार धरि लम्बा करीब 58,500 किलोमीटर

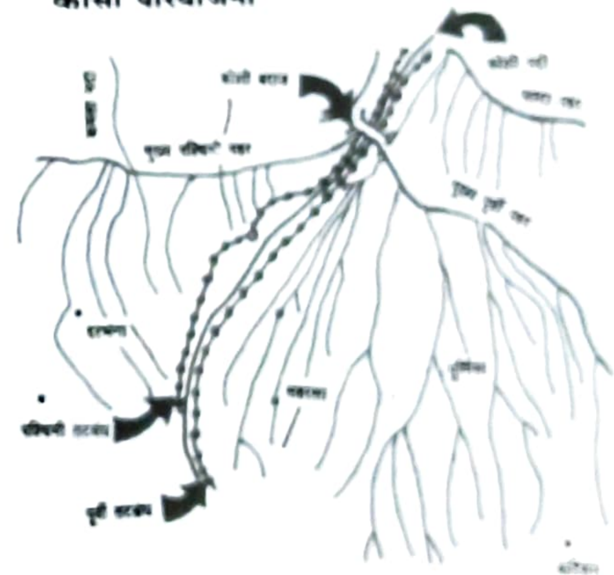
मिथिलांचलक [illegible] अछि। औसतन 16 प्रतिशत क्षेत्रफल प्रत्येक वर्ष बाढ़िसँ [illegible] ई बिहारक क्षेत्रफलक [illegible] अछि। [illegible] कुल बाढ़ि प्रभावित आबादीक 56% [illegible] बिहार राज्य मे [illegible]

1993 मे एहि अंचलमे बाढ़िसँ एहि प्रकारक क्षति भेल

18 जिलाक 124 प्रखंड, 1263 पंचायत, 14.22 [illegible] एवं 51.51 लाख [illegible] प्रभावित भेल तथा 15.64 लाख हेक्टर क्षेत्रफल एवं 11.35 लाख हेक्टर कृषिक [illegible] नष्ट भेल। 2,19,826 मकान क्षतिग्रस्त, 105 मनुष्य एवं 425 पशुक प्राण गेल। बाढ़ि एहि क्षेत्रक अभिशाप [illegible] एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक प्रक्रिया अछि। ई एकर अस्तित्वक संवाहक अछि। हिमालय सँ निकलल कोसी, गंडक, बागमती, कमला-बलान, बूढ़ी गंडक, महानन्दा ओ अधवारा समूहक नदी सब वर्षों सँ एकरा तीर-तीर के उर्वरक माटि ओ पानी सँ सिंचैत रहल। एहि नदी सबहक [illegible] 61 प्रतिशत जलग्रहण क्षेत्र हिमालयमे पड़ैछ। हिमालयक [illegible] एवं औसत [illegible] वर्षा एहि नदी सबहक जलस्रोत अछि। हिमालयसँ [illegible] ई नदी सब पूर्ण मात्रामे गाद-गाद लबैछ जे एतयक [illegible] होइछ। एहि [illegible] सब नदी भौगोलिक स्थितिक कारणे अपन पृथक परिचय रखैत अछि।

कोसी परियोजना

कोसी नदी नेपालक पूर्वी भाग आ [illegible] हिमालय [illegible]



22,888 वर्गमील सम्पसारक संग तिब्बत ओ नेपाल होइत निकलैछ ओ जलक बहाव 9,5,000 क्यूसेक। चतरा स' कुरसेला धरि 170 मील बहैछ। प्रतिवर्ष 55 मिलियन सेडीमेन्ट जलक संग अनैछ जाहिमे 37 मिलियन टन अपन दुनू कछेड़मे जमा करैत कुरसेला लग गंगामे विलीन भ' जाइछ।

ई नदी बिहारक 'शोक' कहल जाइछ किन्तु 'चिरयौवना' एवं एकर अल्हड़पन मोहक आ मारक दुनू अछि। चतरा नामक स्थानमे मैदानमे उतरैत ओतय स' 42 किलोमीटर दक्षिण बहैत सप्तरी जिलाकें पारकय सहरसा जिलामे प्रवेश करैछ। मधुबनी ओ दरभंगा जिलाक सीमावर्ती इलाका होइत सहरसा जिलामे प्रवाहित कुल 254 कि.मी. यात्रा करैत कटिहार जिलाक कुरसेला लग गंगा मे समाहित होइछ। एकर कुल जलग्रहण क्षेत्र 70,409 वर्ग कि.मी. अछि। तिब्बत ओ नेपालमे ई 59,339 वर्ग किमी क्षेत्रक हिमखंड एवं वर्षाक जल समेटैत कुल जलग्रहण क्षेत्र 11,000 वर्ग कि.मी. छैक। कोसी हिमालयक अनेक हिमपोषित धारा स' मिलक' बनैछ। एकर हिमखंड जलग्रहण क्षेत्र तीन अलग-अलग इलाकामे अवस्थित अछि। सुन कोसी पहिल उद्‌गम धारा मानल जाइछ जकरा 1900 वर्ग कि.मी. क्षेत्रक हिमखंड स' जल भेटैछ। दोसर धार अरुण-जकर जल ग्रहण क्षेत्र 3146 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल हिमखंड। तेसर प्रमुख धार तामूर जाहिमे 656 वर्ग कि.मी. हिमखंड। सुन, अरुण ओ तामूर धारा स' कोसीक मुख्य प्रवाहकें-क्रमशः 32, 58 ओ 10 प्रतिशत जल भेटैछ। सभ स' पैघ जल स्रोत अरुण अछि। विभिन्न उद्‌गम स' गंगाक संगम स्थल धरि कोसीक लम्बाइ 725 कि.मी. अछि जाहिमे ई पहाड़मे 425 कि.मी. आ मैदानमे मात्र 300 कि.मी. अपन यात्रा तय करैत अछि। कोसी अपन धार परिवर्तनक लेल प्रसिद्ध अछि। जे 1731 मे फारबिसगंज ओ पूर्णिया लग बहैत छल, 1892 में मुरलीगंज लग, 1922 मे मधेपुरा लग, 1936 मे सहरसा लग एवं 1952 में सहरसा ओ मधुबनी जिलाक सीमा पर पहुँचि गेल छल। लगभग सवा दू सय वर्षमे ई 110 कि. मी. पश्चिम खिसकि गेल अछि। पुनः पूब भागमे धार परिवर्तनक संभावना छैक।

कोसीक बाढ़ि के रोकथाम करबाक हेतु 10-12 नवम्बर 1937 मे पटनाक सिन्हा लाइब्रेरीमे तत्कालीन राज्यपाल श्री हैबेटक अध्यक्षतामे सम्मेलन भेल। एहिमे सामाजिक-राजनैतिक कार्यकर्ता, नेतागण, बाढ़ि विशेषज्ञ, अभियंता ओ सरकारी पदाधिकारी उपस्थित भेल छलाह। डा. राजेन्द्र प्रसाद अस्वस्थ हेबाक कारणें उपस्थित नहि भ' सकला, किन्तु पत्र द्वारा समितिकें अपन विचार प्रस्तुत कयने छलाह। एहिस' पूर्व 1893 मे डब्लू.ए. इंगलिस बंगालक तत्कालीन अधीक्षण अभियंता कोसी समस्याक निदानक अध्ययन कयने छलाह। तत्पश्चात् 1945 मे भारतक तत्कालीन वाइसराय लार्ड वैवेल एहि क्षेत्रक हवाई सर्वेक्षण कयने छलाह। 1946 मे केन्द्रीय जल, सिचाई और परिवहन आयोगक अध्यक्ष श्री खोसला कोसी नियंत्रण योजना पर एकटा प्राथमिक रपट प्रस्तुत कयने छलाह। 6 अप्रैल 1947 कें निर्मलीमे एहि सिफारिश पर विचारार्थ कोसी

पीड़ितक एक सम्मेलन भेल, जाहिमे सी एच भाभा कोसी योजनाक नव प्रारूप प्रस्तुत कयलनि। एहि प्रारूपक अनुसार चतरा घाटीमे बाराह क्षेत्र लग 750 फीट ऊँच आ

कोसीक धारा परिवर्तन

1,10,000 एकड़ फुट संचय क्षमतावला कंक्रीटक बान्ह बनयबाक छल। 1200 मेगावाट क्षमतावला पनबिजली संयंत्र तथा नेपाल ओ बिहार मे 30,00,000 एकड़ भूमि सिंचाईक प्रावधान छल। सिंचाईक हेतु चतराक ठीक नीचा भारत-नेपाल सीमा पर एक बराजक प्रस्ताव छल। 100 करोड़ लागत स' बनयबला ई योजना 10 वर्षमे पूरा होयबाक छल।

'बाराह परियोजना' 1946 स' 1951 धरि टलैत रहल। राजनैतिक पेंच एवं अर्थाभावक कारणें एहि योजना पर काज नहि भेल। 5 जून 1951 मे बंगालक अभियंता एस.सी. मजुमदारक अध्यक्षतामे एकटा सलाहकार समिति बनल जकर मुख्य उद्देश्य छल बाराह योजना पर विपरीत मत देब एवं वैकल्पिक व्यवस्था प्रस्तुत करब। ई समिति 'बेलका जलाशय परियोजना' क प्रारूप प्रस्तुत कयलक। जाहिमे चतरा स' 14 कि.मी. नीचा कंक्रीटक स्पिलवेक संग 85 फीट ऊँच माटिक बान्ह बनायब छल। जकर जल संचय क्षमता 18.35 लाख एकड़ फुट आकल गेल। एहि स' नेपाल ओ बिहारक लेल

68,000 किलोवाट पनबिजली भेटितै। पूर्वी कोसी नहर प्रणाली स' मिथिलांचलक 15.2 लाख एकड़ क्षेत्रमे सिंचाई ओ नहर तीन इकाइक माध्यम स' 30,000 किलोवाट बिजलीक उत्पादन। पश्चिमी कोसी नहर द्वारा नेपाल ओ मिथिलांचलमे 11.6 लाख एकड़ भूमिमे सिंचाईक व्यवस्था। कोसीक पश्चिमवर्ती विस्थापन के रोकबाक हेतु कुसहा स' भगवानपुर धरि 56 कि.मी. तटबंधक निर्माण सेहो प्रस्तावित छल। एहि परियोजनाक प्रबल विरोध भेल। बिहार विधान सभा मे चर्चा भेल आ एहि परियोजनाके लागू होयबाक सभ संभावना समाप्त भ' गेल।

सरकार पर पुन: कोसी नदीक बाढ़ि नियंत्रणक हेतु जोरगर दबाव देल गेल। तखन 1953 मे 'कोसी तटबंध योजना' बनायल गेल जाहि पर काज भेल। एहि योजनाक अन्तर्गत हनुमाननगरमे 1148.5 मीटर एकटा बराज और कोसीक मुख्य धाराक दुनू कात 120 कि.मी. लम्बा पश्चिमी तटबंध एवं 100 कि.मी. लम्बा पूर्वी तटबंध बनयबाक योजना स्वीकृत भेल। 37.32 करोड़क लागत स' एहि योजनाकें कार्यान्वित करबाक हेतु प्रथम पंचवर्षीय योजनामे शामिल कयल गेल। एकर उद्घाटन तत्कालीन मुख्यमंत्री डा. श्रीकृष्ण सिंह 14 जनवरी 1955 मे भूतहा गाममे (निर्मली) एक छिट्टा माटि स' पश्चिमी कोसी तटबंधक निर्माण प्रारम्भ कयलनि। उद्घाटनक पश्चात् तटबंधक लगभग 800 मीटरक आरम्भिक लम्बाई स्थानीय जनता ओ छात्र लोकनि श्रमदान स' पूरा कयल। 3 फरवरी 1955 के बैरिया गाम (सुपौल) मे पूर्वी कोसी तटबंधक निर्माण काज प्रारम्भ भेल।

कोसी तटबंधक निर्माणमे मुख्यत: तीन प्रकार स' जनसहयोग जुटाओल गेल। प्रथम, बिना पारिश्रमिक के हजारों स्कूली छात्र, ए.सी.सी. ओ एन.सी.सीक कैडेट, स्थानीय ग्रामीण, महिला लोकनि, साधू-संन्यासी एवं दूरदराज स' आयल नर-नारी। दोसर, ग्राम पंचायत एवं श्रमिक सहयोग समितिक माध्यमस' जुटायल गेल। न्यूनतम मजदूरीक आधार पर एहि तरहक संस्थाक सहयोग तटबंधक निर्माणमे भेटल। तेसर सर्वाधिक जनसहयोग भारत सेवक समाज जुटौलक। 1959 धरि प्रथम चरणक कुल निर्मित 220 कि.मी. तटबंधमे 90 कि.मी. भारत सेवक समाज द्वारा और शेष 130 कि.मी. तटबंधक निर्माण श्रमदान, ग्राम पंचायत, श्रमिक समितिक जनसहयोग एवं एहि परियोजनाक विभागीय प्रयास स' निर्मित कयल गेल। 1959 धरि तटबंधक निर्माण पर कुल 7.25 करोड़ टाका खर्च भ' गेल।

करीब 80 करोड़ घनफुट माटि काटल गेल। लगभग 101 कि.मी. लम्बा पूर्वी कोसी तटबंध भीमनगरस' मैना (सहरसा) धरि एवं 118 कि.मी. लम्बा पश्चिमी कोसी तटबंध भारदा स' भन्थी धरि बनायल गेल। कोसीक मुख्य धाराक मध्य 5 स' 16 कि.मी. क दूरी राखल गेल। 1962 मे पश्चिमी तटबंधक लम्बाइ 4 कि.मी. घोंघैयपुर धरि बढ़ाओल गेल। पूर्वीय तटबंधके मैना स' कोपड़िया धरि 25 कि.मी. बढ़ायल गेल। एहि तरहें पूर्वीय कोसी तटबंधक लम्बाई 126 कि.मी. ओ पश्चिमी कोसी तटबंधक लम्बाई 122कि.मी. अछि।

बराज निर्माण 56 फाटकवला 1149 मीटर लम्बा जाहिस' बाढ़िक रोक-थाम एवं पटौनी व्यवस्था संभावित छैक, तकर स्वीकृति 18 फरवरी 1958 मे योजना आयोग, भारत सरकारक तकनीकी समिति क' देलक। एकर शिलान्यास नेपालक तत्कालीन महाराज महेन्द्र 30 अप्रैल 1959 क' भारतक प्रधान मंत्री जवाहर लालक उपस्थितिमे कयलनि। नेशनल प्रोजेक्ट्स कंस्ट्रक्शन कारपोरेशन लिमिटेड (भारत सरकारक उप-क्रम) कें बराज निर्माणक काज देल गेल। सर्वप्रथम 43 कि.मी. लम्बा पूर्वी नहरक निर्माण 1957 मे प्रारम्भ भेल। बराजक वाम भाग स' बथनाहा धरि निकालल गेल एहि मुख्य नहरि स' मुरलीगंज, जानकीनगर, पूर्णिया ओ सहरसामे सिंचाईक हेतु राजपुर शाखा नहरि निकालल गेल, जे परियोजनाक मूल प्रारूपमे नहि छल एवं एहि स' 1968 मे सिंचाइ शुरू भ' सकल। पूर्व निर्मित चारू शाखा नहरि स' 9 जुलाई 1964 स' पटौनी होमय लागल। एहि नहरि प्रणाली द्वारा सहरसा, मधेपुरा, पूर्णिया ओ कटिहार जिलाक 22.69 एकड़ क्षेत्रफलमे 2887 कि.मी. लम्बा नहरिक जाल स' कम स' कम 15.13 लाख एकड़ भूमिक सिंचाई संभव भ' सकल।

भारत-नेपाल सहायता कार्यक्रमक अधीन 1962 मे चारि करोड़क अनुमानित लागत स' कोसी नदीक पूबमे एकरा नहर प्रणाली विकसित करबाक योजना बनल जे 1962 मे शुरु कयल गेल जे 1970 मे 15 करोड़क लागत स' पूरा भेल। एहि नहरिस' तराइक मोरंग ओ सप्तरी जिलाक 2,70,000 एकड़ भूमि मे सिंचाइक व्यवस्था 422 कि.मी. लम्बा नहरि निकालिक' कयल गेल। 1975 मे नेपाल सरकारकें ई हस्तांतरित क' देल गेल। भारत-नेपाल मैत्रीक प्रतीक एहि नहरिकें बादमे चीनी विशेषज्ञ द्वारा आधुनिकीकरण कयल गेल।

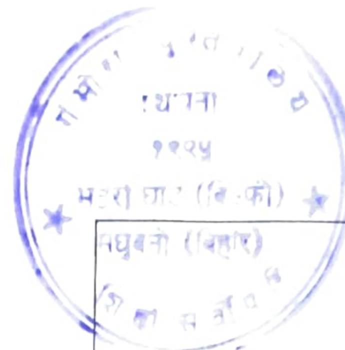
कोसी परियोजनाक मूल प्रारुपमे दरभगा ओ मधुबनी जिलामे नहरि सिंचाइ प्रणालीक प्रावधान नहि छल। बादमे एकटा सर्वेक्षण ओ अनुसन्धान प्रमंडलक स्थापना कयल गेल जे 1959 स' 1961 धरि अध्ययन कयलाक बाद नहरि प्रणालीक प्रारूप तैयार कयलक। 112 कि.मी. मुख्य नहरिमे 32 कि.मी. नेपालमे आ 80 कि.मी. मधुबनी जिलामे बनयबला छल जे अन्तमे बेनीपट्टी स' 6.4 कि.मी. उत्तर धौसक सहायक नदी थोमनेमे मिला देल जाइत। एहि नहरि प्रणाली स' नेपाल (तराइ) ओ भारतक 9.76 लाख एकड़ कमांड क्षेत्रक कुल 6.45 लाख एकड़ जमीनक सिंचाइ करैत। लागत मात्र 12.50 करोड़ टाका आंकल गेल छल। पुन: 1965 मे कवर सेनक अध्यक्षतामे कोसी तकनीकी समिति बनल, जो डगमारा (सुपौल) नामक स्थान पर बराज बनयबाक विकल्प देलक। एकर लागत 20 करोड़ टका आकल गेल। एकर पुनरीक्षण 1974 मे कयल गेल ओ लागत बढ़िक' 41.62 करोड़ भ' गेल जे 1980 मे 201.79 करोड़ भ' गेल ओ 1984 मे 311 करोड़ टाका लागत स' 1995 धरि कार्य पूरा करबाक योजना बनल। कोसीक पश्चिमी नहरि प्रणालीक उद्घाटन क्रमश: जगजीवन राम, बिनोदानन्द झा, लालबहादुर शास्त्री, इन्दिरा गाधी ओ अन्तिम बेर अब्दुल गफूरक मुख्यमंत्रित्व कालमे ललित नारायण मिश्र द्वारा कयल गेल, किन्तु पाँ॰ ने

कोसी नहरि प्रणाली मार्च 1999 मे निर्माणाधीने अछि। नेपालमे एहि नहरि प्रणालीक अधिकाश काज पूरा भ' गेल अछि। मिथिलांचलमे मुख्य नहरि सहित वितरण प्रणालीक महत्वपूर्ण निर्माण काज एखनो संपन्न नहि भेल अछि।

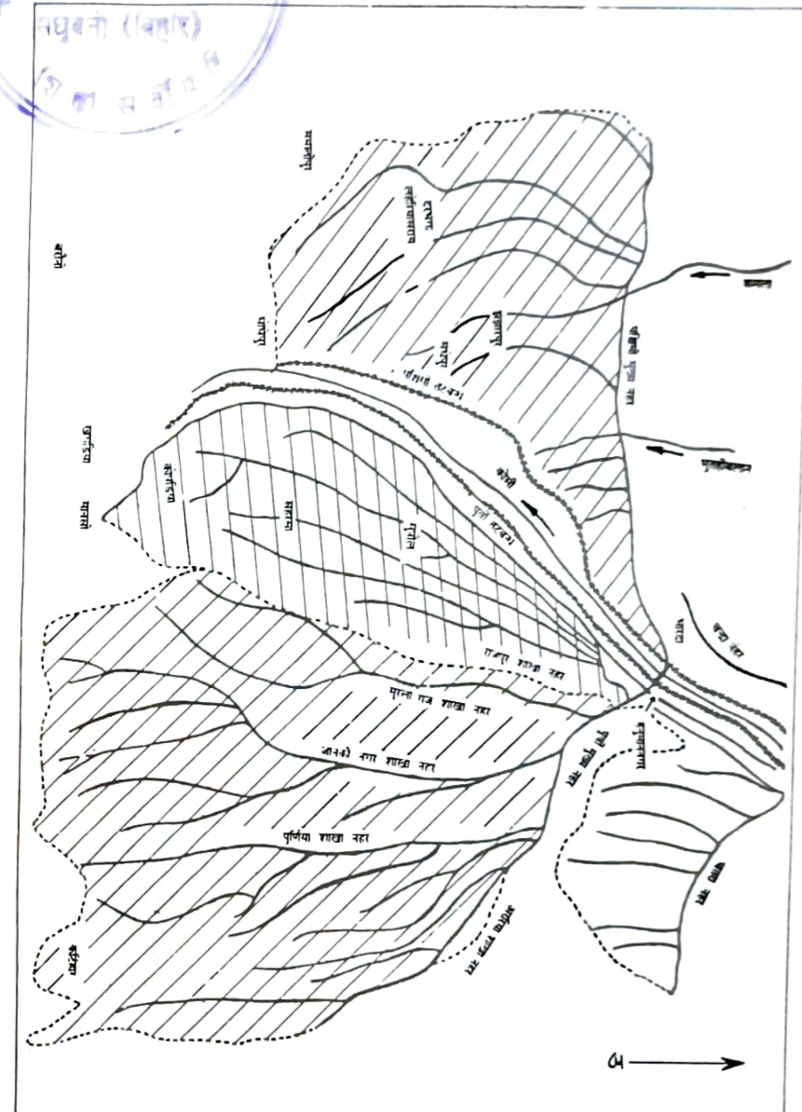
पूर्वी एवं पश्चिमी कोसी तटबंधक बीच बसल सहरसा, दरभंगा ओ मधुबनी जिलाक 304 गामक लोकके नारकीय जीवन जीवाक हेतु छोरि देल गेल अछि। जहिना दुनू तटबंधक बाहर सुरक्षाक व्यवस्था कयल गेल तहिना एहि मध्य बसनिहारक घोर उपेक्षा। सहरसा जिलाक सात प्रखंड आंशिक रूपस' तटबंधक बीच अवस्थित अछि। महिषिमे 46 गाम, नवहट्टा मे 37 ग्राम, सुपौल मे 29 ग्राम, किशनपुर मे 32 ग्राम निर्मली मे 42 गाम, मरौना मे 36 गाम, तथा बीरपुर मे 21 गाम एहिमे सम्मिलित अछि। बाद बांकी गाम दरभंगा तथा मधुबनी मे अछि। दुनू तटबंधक बीचक क्षेत्रफल लगभग 2.60 लाख एकड़ एवं तटबंधक निर्माणक काल जनसंख्या लगभग 1,92,000 छल जे आइ 4,77,200 भ' गेल छैक। वर्षाकालमे नदीक औसत प्रवाह 3 लाख घनसेक स' 9 लाख घनसेकक आसपास रहैछ। व्यावहारिक दृष्टि स' एतेक पैघ आबादीक सुरक्षाक हेतु पूरा जमीनक व्यवस्था कयला स' राजस्व पर एगारह करोड़ टाकाक बोझ पड़ैत, जे 1957 मे 2.12 करोड़ आंकल गेल एवं तदनुकूल स्थायी पनुर्वासक निम्न व्यवस्था कयल गेल।

1. रिहायसी जमीनक बराबर जमीन तटबंधक बाहर एहि तरहें प्रदान कयल जाय जाहि स' ओलोकनि तटबंधक भीतर अपन जोत जमीनक समीप रहि सकथि।
2. सम्मिलित काज यथा सड़क, चौपारि, गोशाला, खेलक मैदान आदिक हेतु कुल रिहायसी जमीनक 40% जमीन अर्जनक प्रस्ताव।
3. तटबंधक अन्दर लागतक अनुसार पूर्व गृह निर्माणक अनुदान विस्थापितकें देल जाय।
4. पुनर्वास स्थल मे पेयजलक व्यवस्था।
5. नव पुनर्वास स्थल स' खेतीक जमीन धरि यातायातक हेतु नाव आदिक व्यवस्था।
6. जाधरि नव पुनर्वासक व्यवस्था नहि होइछ ताधरि वर्षा ओ बाढ़िक दौरान अस्थायी व्यवस्थाक प्रावधान।

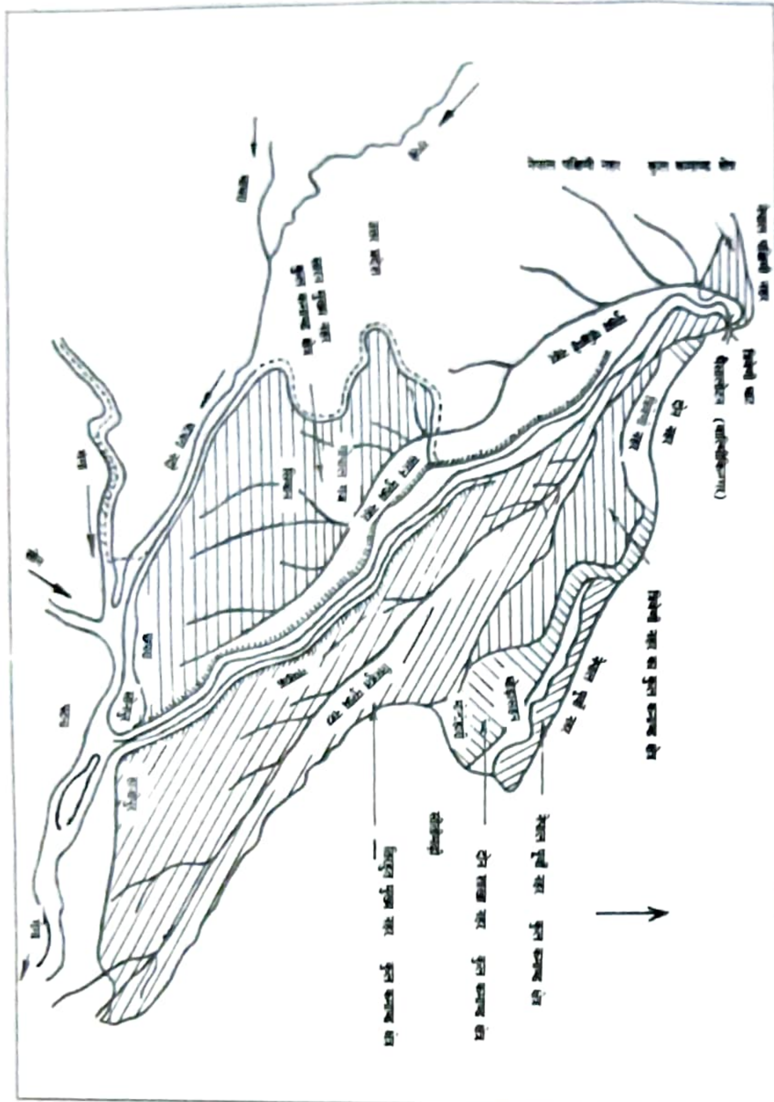
उपर्युक्त पुनर्वास योजनाक अन्तर्गत 1970 धरि 6550 परिवारकें तटबंधक बाहर बसायल गेल। लगभग 35,000 परिवार एखन धरि दुनू तटबंधक अन्दर रहि गेल छथि। बिहार विधान सभाक लोक लेखा समिति अपन 45 म प्रतिवेदनमे स्पष्ट कहलक जे सम्प्रति जे पुनर्वास योजना चलि रहल अछि से सब तरहें अनुपयुक्त अछि। फरबरी 1982 मे सरकार द्वारा गठित चन्द्रकिशोर पाठकक अध्यक्षतावला समिति एहि क्षेत्रक पीड़ित जनमासक पुनार्वासक अनुशंसा कयलक, जकरा 30 जनवरी 1987 के बिहार मत्रिमडलक स्वीकृति भेटल। दोसर ओ तेसर श्रेणीक नौकरी मे 15% आरक्षण एहि दुनू तटबंधक बीच बसयवलाक हेतु अछि।



कोसी परियोजनाक सूचक रेखाचित्र



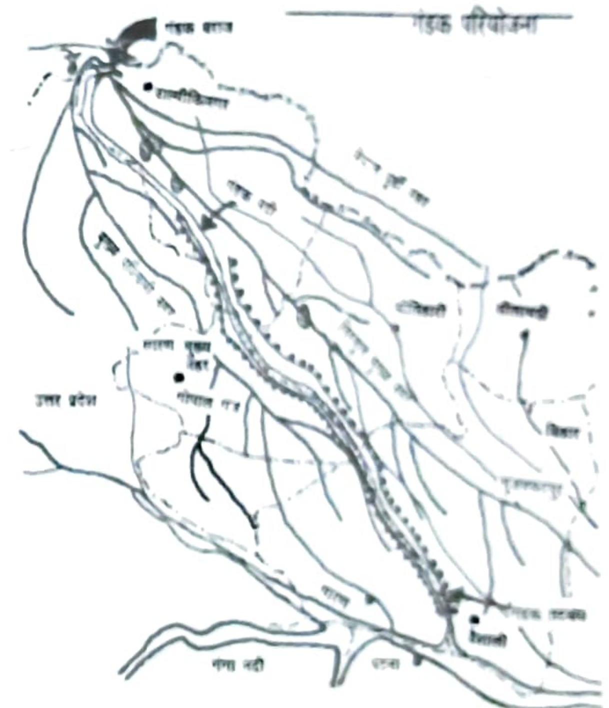
गंडक परियोजनाक सूचक रेखाचित्र



गंडक परियोजना

नेपालमे नारायणी आ शालग्रामीक नाम स' प्रसिद्ध गंडक नदी हिमालयक केन्द्रीय भाग स' पश्चिममे धौलागिरीक चोटी ओ पूबमे धन्जा और गृ-अन्नपूर्णाक चोटी स 14612 वर्गमील जलग्रहण क्षेत्रक संग निःसृत होइछ। तराईमे नाम स' बेसी ई जानल जाइत अछि। एहिमे सात गोट धार अछि तें सप्तगंडकी कहबैछ एवं सोमेश्वर पहाड़क दक्षिण भाग द' क' मैदानमे प्रवेश करैछ जे त्रिवेणी नाम स' जानल जाइछ। दक्षिण पश्चिमाभिमुख वाल्मीकिनगर (भैसालोटन) मे मिथिलांचलमे प्रवेश करैछ। नेपालक सीमा स' गंगाक संगम धरि एहि नदीक लम्बाई 277 कि.मि.। नेपाल डगर प्रवेश गोपालगंज एवं सिवान लांचलमे बहैत सोनपुर लग कोनहरा घाटमे गंगामे विलीन भ' जाइत अछि। मानसूनक प्रभाव स' बारहो मास एहिमे जल रहैछ। जलक बहाव एक घनफीट प्रति सेकेण्ड एवं अधिक स' अधिक 7,00,000 घनफीट धरि भ' जाइत छैक। कुल जलग्रहण क्षेत्र 46.5 हजार वर्ग कि.मी. तराइ नेपालमे 7620 वर्ग कि.मी. मिथिलांचल ओ गोपालगंजमे अवस्थित छैक। गंडक घाटीमे मही गंडकी हाला झाझा पुन झरही नेन बोन

गंडक परियोजना



बाया केहाने, जमुआरी, फरदो आदि पैघ-छोट लगभग 40टा धार एहि नदीमे समाहित होइछ।

उनैसम शताब्दीक पूर्व अंग्रेजक शासन कालमे सुखाड और बाढ़िक कारण अकालक स्थितिमे राहत कार्यक प्रचलन नहि छल। सर्वप्रथम 1897 मे सुखाड़ स'राह-तक हेतु चम्पारण जिलामे गंडक नदी स' त्रिवेणी और ढाका नहरिक निर्माण काज भेल। त्रिवेणी नहरिक इलाका के छोरि सिंचाइक अभावमे सम्पूर्ण इलाकामे कृषि कार्य चौपट छल। 1947 मे डा. राजेन्द्र प्रसाद भारत सरकारक खाद्यान्न एवं कृषि मंत्री बनला। ओ चम्पारण, मुजफ्फरपुर ओ सारण जिलामे सिंचाइक व्यवस्था पर ध्यान देलनि एवं 1954 मे 31.94 करोड़ लागतवला गंडक योजना सरकार के समर्पित कयलनि। बाद मे 1956 मे केन्द्रीय सिंचाइ ओ ऊर्जा मंत्री हाफिज मुहम्मद इब्राहिमक सत्प्रयास स' उत्तर प्रदेशक भैंसासलोटनमे बराज बनयबाक हेतु सहमति भेल। 4 नवम्बर 1959 क' नेपाल सरकारक संग समझौता कयल गेल। योजनाक रुपांकन पर कार्य शुरू होयबाक लगभग 17 वर्षक अन्तरालक बाद 4 मइ 1964 क' तत्कालीन महाराधिराज महेन्द्र एहि योजनाक उद्घाटन वाल्मीकिनगर लग बराजक शिलान्यास कयल। मुजफ्फरपुर, वैशाली, समस्तीपुर, पूर्वीय चम्पारण, पश्चिमी चम्पारण जिला मिथिलांचलक तथा गोपालगंज, सीवान ओ सारन जिलाक 33.93 एकड़ एवं तराइ नेपालमे बारा, रौतहट, परसा ओ मैरवा जिलाक 1,56,000 एकड़ आ उत्तरप्रदेशक 11 लाख एकड़ भूमिमे गंडक परियोजना स' पटौनीक लक्ष्य राखल गेल। एकर अतिरिक्त सूरजपुरा (नेपाल तराइ) मे 15 मेगावाट क्षमतावला एक विद्युत गृहक निर्माण पश्चिमी मुख्य नहरि पर निर्धारित छल।

त्रिवेणी नहरिक मुख्य नियामक स' लगभग 800 मीटर नीचा गंडक नदी पर 739.14 मीटर लम्बा गंडक बराज बनायल गेल जे काज 4 दिसम्बर 1963 क नेशनल प्रोजेक्ट्स कन्स्ट्रक्शन कॉरपोरेशन द्वारा शुरू कयल गेल एवं 1969-70 मे पूरा भेल। बराजक उपर नदीक पश्चिमी कछेड़ स' मुख्य पश्चिमी नहरि, जे करीब 23 कि. मी. नेपालक तराइमे पड़ैत अछि, झुलनीपुलक निकट भारतक सीमामे उत्तर प्रदेशमे प्रवेश करैत अछि। ओतहि दूटा नहरिमे बांटि उत्तर प्रदेशमे नहरिक जाल बिछायल गेल छैक। एतहि स' देवरिया शाखा नहरि भागीपट्टी गामक निकट गोपालगंजमे प्रवेश करैत अछि जतय सारण मुख्य नहरिक नाम स' जानल जाइत अछि। बिहार आ उत्तर प्रदेशक सीमा पर एहि नहरिक बाहव 8500 क्यूसेक एवं लम्बाई 61 कि.मी. भूमि जे गोपालगंज, सिवान ओ छपरा जिलाक अन्तर्गत 14.08 लाख एकड़ भूमि मे सिंचाइ हेतु जलापूर्ति करैत अछि। मुख्य पूर्वी नहरि, जे गंडक नदीक बामा छोर स' निकलैत अछि, 1.83 कि. मी. पक्की छैक, जत' स' दोन शाखा नहरि निकालल गेल छैक। आगू चलिक' 2.74 कि.मी. त्रिवेणी नहरिके जालपूर्तिक' गंडक नहरि पद्धतिक अन्तर्गत कय देल गेल छैक। एकर उद्गम प्रारम्भमे गंडक नदी स' छल। मुख्य पूर्वी नहरि 1.83 कि. मी.

क बाद तिरहुत मुख्य नहरिक नामस' बनल जे 165 कि. मी. लम्बा एवं 16.95 लाख एकड़ भूमिमे सिंचाइक हेतु 15000 क्यूसेक पानिक बहावक क्षमता रखैत अछि। एकर अलावा दोन शाखा नहरि के नेपाल तराइमे 1,03,517 एकड़मे सिंचाइ हेतु समर्पण कयल गेल। पश्चिम चम्पारणक 68,296 एकड़मे पटौनी होइत अछि। एहि तरहें गंडक परियोजनाक अन्तर्गत बिहारमे 95 कि. मी. लम्बा दोन शाखा स' 68,296 एकड़, 165 कि. मी. लम्बा तिरहुत नहरि स' 16,95,000 एकड़ एवं 61 कि.मी. लम्बा सारण मुख्य नहरि स' 14,08,000 एकड़ भूमिमे सिंचाइक प्रावधान भ' गेल छैक। 40.47 करोड़ टाका व्ययक प्रावधान छल जे बिहार सरकार के वहन करबाक छलै। ई प्रति एकड़ 152 टाका छल। 1969-70 मे मात्र मुख्य नहरि एवं शाखा नहरि तैयार भ' सकल। जे काज 1966 मे पूरा करबाक लक्ष्य छल से मार्च 1985 मे पूरा कयल गेल एवं लागत 365.59 करोड़ टाका भ' गेल। एहि स' प्रति एकड़ लागत सिंचाइमे 152 टाका स'बढ़िक 1218 टाका भ'गेल। एहि तरहें परियोजनाक प्रथम चरण समाप्त भेल एवं समस्त निर्माण काज बन्द कय देल गेल।

बागमती परियोजना

बागमती हिमालयक दक्षिणी ढलान नेपालघाटीक उत्तरी-पूर्वी भाग काठमाडू लग 8 हजार मीटर उचाइ गोसाईनाथ शिखर स' 1700 वर्गमील सम्भ्यसारक संग नि सृत होइत

अछि। नेपालमे गंगाक समतुल्य ई मानल जाइछ एवं प्रसिद्ध तीर्थस्थल पशुपतिनाथक मन्दिर एकर कछेड़ पर अवस्थित अछि। मिथिलाचलमे ई आदम बांध गाम लग प्रवेश करैत मुख्यतः सीतामढ़ी, दरभंगा, सहरसा आ खगड़िया जिलामे प्रवाहित होइत कुशेश्वर स्थानक दक्षिण-पूब बेलाही लग कोसीमे विलीन भ' जाइछ।

एहि नदीक कुल जलग्रहण क्षेत्र 13,400 वर्ग कि.मी. अछि, जाहिमे नेपालमे 7080 वर्ग कि.मी. तथा मिथिलाचलमे 6320 कि.मी. अछि। काठमांडू स' पहिने एवं समीपस्थ एहि नदीमे हिमालयक हनुमती, मनोहरा, मणिमती, विष्णुमती, भद्रमती, रुद्रमती ओ धोबी खोला सदृश पहाड़ी नदी सबहक संगमक कारणें नेपालमे सप्तबागमतीक नाम स' सेहो ई जानल जाइछ। हिमालय स' निकलय वाली लाल बकेया, लखनदेइ और अधवारा समूहक नदी सभ मिथिलाचल प्रवाहक्षेत्रक प्रमुख सहायक नदी अछि। लालबकेया सीतामढ़ीक पिपराही प्रखंडक अदउरी गाममे, लखनदेइ कटरा गाम लग एवं अधवारा समूहक नदी आपसमे मिलैत दरभंगाक हायाघाटमे एहि नदीमे विलीन भ' जाइछ। अधवारा नदी समूहक संगमक बाद ई करेह नाम स' जानल जाइत अछि। हायाघाटक बाद सहरसा-महिषी रेललाइन के बदलाघाटमे पार करैत कोसीमे विलीन भ' जाइछ। बागमतीक क्षेत्र भारतक अतिउर्वर भूभागक रुपमे प्रसिद्ध अछि।

1953-54 मे बागमती नदीक दहिना-बामा तट पर दूटा तटबंधक निर्माण शुरु भेल। 1956 धरि एहि नदीक बामा तट पर सिरसिया स' फुहिया धरि 73 कि.मी. एवं दहिना तट पर सुरगार हाट स' हायाघाट धरि 17 कि.मी. एवं हायाघाट स' बदलाघाट धरि 86 कि.मी. तटबंध बना देल गेल। बाढ़ि नियंत्रण ओ सिंचाइक तकनीकी एवं गैर-तकनीकी परियोजना बनल। बाढ़ि नियंत्रणमे 3.17 करोड़ एवं सिंचाइक हेतु 5.78 करोड़ टाकाक लागतवला योजना बनल। 1974-75 मे बाढ़ि नियंत्रणक एकटा योजनाक प्रारुप 26.72 करोड़ टाकाक लागत पर बनल, जकर पुनर्मूल्यांकन 1976 मे 36.20 करोड़ आकल गेल। 1973 मे बागमती सिंचाइ योजनामे परिवर्तन क' देल गेल, जे 5.78 करोड़क लागत स' 22.55 करोड़ भ'गेल। 1977 क अंतमे पुनः 45.05 करोड़ टाकाक परियोजना बनल मुदा काज चालू नहि भेल। 1981 मे ढेंग रेलपुलक तीन किलोमीटर नीचा बराज बनायब तय भेल एवं कुल 185.69 करोड़ टाकाक लागत स' योजनाक प्रारुप तैयार भेल जाहिमे सिंचाइ, बराज आ नहरिक संग बाढ़ि नियंत्रणक प्रावधान कयल गेल। 24 मार्च 1984 मे बिहारक तत्कालीन मुख्यमंत्री चन्द्रशेखर सिंह एकर शिलान्यास कयलनि किन्तु बराज निर्माण काज शुरु नहि भ' सकल। 11 मई 1990 मे पुनः मुख्यमंत्री लालू प्रसाद बेलवाघाट पर डाइवर्सन बराज–बाढ़ि नियामकक शिलान्यास कयल, किन्तु जल संसाधन मंत्रीक वक्तव्य आयल जे बागमती परियोजना आठम पंचवर्षीय योजनामे सम्मिलित नहि कयल गेल एवं कहिया पूरा कयल जायत से अनिश्चित अछि। ई मात्र बिहारक सालाना योजनामे शामिल अछि। सरकार लगभग 60 लाख टाका प्रतिवर्ष व्यय करैत अछि जे 1989 मे सवा करोड़ भ' गेल छल।

सम्प्रति हायाघाट स' नीचा कोसीक संगम धरि तटबंध बनल अछि। ढेंग लग प्रस्तावित बराज स्थल स' रुन्नीसैदपुरक पश्चिमोत्तर आ मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी मार्गक पश्चिम धरि तटबंधक निर्माण भ' गेल अछि, किन्तु रुन्नीसैदपुर स' हायाघाट धरि लगभग 79 किलोमीटर धरि निर्माण काजकें पूरा नहि कयल गेल। फलस्वरूप तटबंधक कारण सुरक्षित बैरगनिया प्रखंड, हायाघाट-एकमीघाटक पार्श्ववर्ती गाम तथा दरभंगा-नरकटियागंज रेल लाइनक उत्तर ओ दक्षिण बसल गाम सभमे लगभग 5-6 मास धरि जलजमाव रहैछ। बागमती बाढ़ि नियंत्रण परियोजनाक अन्तहीन कथा एखनो चलि रहल अछि।

बगमती परियोजनामे नदीक कछेड़मे बनल तटबंधमे 95 टा गाम बसल छैक जाहिमे 14,000 परिवारक 85,000 विस्थापित भेल लोकक पुनर्वासक प्रश्न उठल। 1975 मे बिहार सरकारक योजना छल जे एहेन प्रत्येक परिवारकें हुनक गृह स्थानक बरोबरि भूमि तटबंधक बाहरी क्षेत्र मे सुरक्षित कयल जाय। एहिमे सड़क, विद्यालय तथा पेयजल आदिक सार्वजनिक व्यवस्था हो। 1985 क अन्त धरि 49 गाममे 5094 परिवार कें आंशिक रुपस' बसायल गेल अर्थात 11,836 परिवार के पुनर्वासित कयल गेल जे कुल विस्थापित परिवारक 85% अछि ओ बाकी 15% भगवान भरोसे। किन्तु बराज स्थल लग बागमतीक बामा तटबंधक बाहर बसायल गेल गाम रामपुरकंठ, सोनाखान, अखता, पिपराही, बसाढ, कोठिया टोलक निवासीक व्यथा-कथा अनन्त अछि। यैह स्थिति हसौड़, माडर, मौलानगर, दरियापुर, ननौरा, पचनौल, डुमरा आदि गामक अछि। फलस्वरुप दरभंगा जिलाक कुशेश्वरस्थान, घनश्यामपुर, बिरौल तथा हायाघाट, सहरसा जिलाक नवहट्टा, महिषी, कहरा, सलखुआ ओ सिमरी बख्तियारपुरक निवासी अपन जीविकाक हेतु दिल्ली, पंजाब, हरियाना आदि स्थानमे पलायन कय गेल छथि।

अधवारा समूहक नदी

मिथिलाचलक सीतामढ़ी, शिवहर, मधुबनी ओ दरभंगा जिलाक भूभाग पर करीब दू दर्जन पैघ-छोट नदीक जाल अछि जे अधवारा समूहक नाम स' जानल जाइछ। एहिमे अधवारा, हरदी, लखनदेई, बघोर, मरहा, धाउस जमूने, खिरोई, झीम, माढ़ा, कटवा, हरसिंघी, बुढनद, रातो, घोमने, कोकराहा, सिंघवाहिनी, गोगा, बकी, शिकाओ, बरदे, करेह, बागमती (दरभंगा) आदि नदी सम्मिलित अछि। एहि नदी समूहक प्रमुख जलस्रोत हिमालय एवं तराइ स' निःसृत होबयवला बरसाती नदी अछि। कुल जलग्रहण क्षेत्र लगभग 5000 वर्ग कि.मी. छैक। प्रवाहक दृष्टि स' एकरा दू धारामे बाटल जा सकैछ। पहिल धारामे झीम, अधवारा, सिंघवाहिनी, गोगा, बकी, जमूने, शिकाओ आदिक संगम। दोसरमे दरभंगा-बागमती, हरदी, कटवा, बरदे, माढ़ा, हरसिंघो, बुढ-नद, धाउस, कोकराहा, रातो, घोमने आदि। दुनू प्रमुख धार दरभंगाक एकमीघाटमे मिलैत अछि एवं आगू जा कय हायाघाट लग बागमतीमे समाहित भ' जाइछ। एहि

समूहक नकदी उथर छैक जाहि स' बरसात मे बाढ़िक सृजन पैघ पैमानामे करैछ ओ सुखाड़मे नदीक धारके ताकल नहि जा सकैछ।

उनैसम शाताब्दीक प्रारम्भमे अंग्रेज लोकनि नीलक खेती बड़ पैघ स्तर पर करैत छलाह एवं बाढि स' बचबाक प्रयास ओसभ कयलनि। 1838 क बाढ़िक बाद लगभग 80 कि.मी. लम्बा तटबंध एहि क्षेत्रमे बनायल गेल। दरभंगा राज ओ नानपुरक चौधरी लोकनि सेहो एहिमे सहयोग कयलनि। 1954 क भीषण बाढ़िक पश्चात् एहि समूहक नदी कें नियंत्रित करबाक योजना बनल। लगभग 65 लाख टाकाक अनुमानित लागत स' सोनबरसा स' एग्रोपट्टी धरि तटबंध पूरा कयल गेल जाहि स' 68,500 एकड़ भूमिकें बाढ़ि स' सुरक्षाक अनुमान कयल गेल। एकर बाद एग्रोपट्टी स' एकमीघाट धरि खिरोईक धार के गहीर कयक' एकर दुनू तटबंध कें दरभंगा-बागमतीमे मिला देल गेल। एकर अतिरिक्त दरभंगा-लहेरियासराय शहरक सुरक्षाक दृष्टि स' 1976 मे मब्बी स' सिरनियां धरि तटबंध बनायल गेल आ एकरा करेहक बामा तटबंध स' जोरि देल गेल।

1989 मे बिहार सरकार अधवारा समूह बाढ़ि नियंत्रण योजनाक अन्तर्गत लगभग 250 कि.मी. लम्बाइ वला तटबंध कें स्वीकृति देलक एवं एकर शिलान्यास 18 अक्टूबर 1989 क तत्कालीन जल संसाधन मंत्री कृष्णानन्द झा कयलनि। ई योजना तीन चरण मे बांटल गेल। पहिलमे सर्वाधिक बाढ़िग्रस्त सौलीघाट स' मब्बी धरि दरभंगा-बागमतीक बामा कछेड़ पर 52 कि. मी. लम्बा तटबंध ओ दहिना कछेड़ पर एकमीघाट स' हिरौली धरि 66 कि.मी. तटबंधक निर्माण। दोसरमे धाउस, रातो, धौंस आदि नदीक दुनू कछेड़ पर 88 कि.मी. एवं तेसर चरणमे जमूने नदीक दुनू कछेड़ पर कुल 56.5 कि.मी. लम्बा तटबंधक निर्माणक प्रारुप बनल छैक। संगहि पुरान तटबंधकें ऊंच करब, नदी मार्ग कें सोझ करब सन छोट-मोट काज सेहो एहिमे शामिल कयल गेल। 29 करोड़ टाकाक लागत एवं एहि स' लगभग 17 लाख आबादी एवं 3 लाख एकड़ भूमि कें बाढ़ि स' सुरक्षित करबाक योजना बनल, जे एखन धरि लड़खड़ाइत अछि।

लखनदेई नदी

लखनदेई (लक्ष्मणा) सिन्धुलगढ़ीक पश्चिम-दक्षिण पहाड़ स' निःसृत मारसंड गाम लग भारतक सीमामे प्रवेश करैछ। ई नदी मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी सड़ककें सैदपुर लग पार कय राजखंड होइत कलेंजर धारक समीप बागमतीमे विलीन भ' जाइछ। नेपाल तराइ मे 42 मील एवं मुजफ्फरपुरमे 93 मील लम्बा बहैत अछि एवं एहिमे सालोभरि पानि रहैछ। यदि एहि नदीमे सैदपुर स' आगू राजखंडक समीप कोनो उपयुक्त स्थान पर बियर बनाक' पटौनीक व्यवस्था कयल जाय त' बागमती योजना स' वंचित दक्षिण ओ पूबक एक क्षेत्रमे पटौनीक व्यवस्था भ' सकैछ, जाहिस' मुजफ्फरपुर जिलाक सैदपुर, औराई, राजखंड, कटरा एवं दरभंगा जिलाक जाले ओ कल्याणपुर प्रखंड लाभान्वित होयत। बाढ़िक रोक-थाम सेहो एहि स' होयत।

बूढ़ी गण्डक

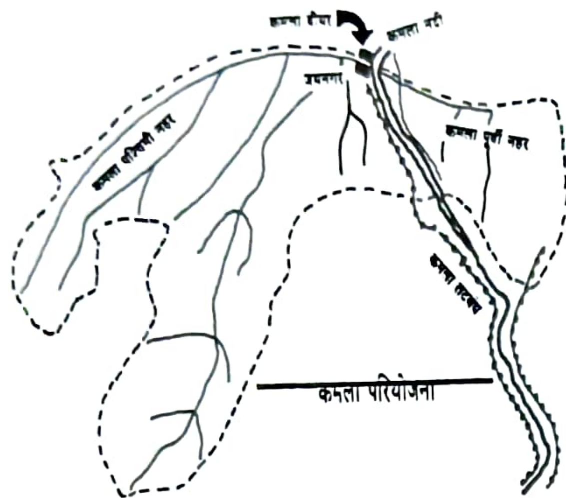
बूढ़ी गंडक नदी सोमेश्वर पहाड़क पश्चिम भाग हरहा दर्राक समीप स' 900 वर्गमील सम्मसारक संग निकलैत अछि। पश्चिमी चम्पारणमे पाडरखाप गामक समीप चौतरवा चौर स' मिलैत अछि। चौर लग तियर नदी स' संबंध होइछ। एकर बाद एहि नदीमे हरहा, कापन, बाणगंगा, मनियरी, तेलावे, पसाह, उरिया, करटाहा आदि 32 धारक पानि समाहित होइछ। मसान ओ पण्डेय एकर सहायक नदी अछि। एहि नदीक कुल जलग्रहण क्षेत्र लगभग 12,500 वर्ग कि.मी. अछि, जाहिमे 10,150 वर्ग कि.मी. मिथिलांचलमे एवं 2,350 वर्ग कि.मी. नेपाल तराइमे अछि। बाढ़ि एहि क्षेत्र के अत्यन्त प्रभावित करैछ एवं बाढ़िप्रवण क्षेत्र लगभग 8.21 लाख हेक्टेयर अछि। नदीक लम्बाइ 580 किलोमीटर अछि एवं चम्पारण स' खगड़िया धरि 415 कि.मी. बाढ़ि सुरक्षा तटबंध दुनू तरफ बनल छैक। एहि स' पश्चिम चम्पारण, पूर्वी चम्पारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, समस्तीपुर, बेगूसराय आ खगड़िया जिला प्रभावित होइत अछि। तटबंध स' बाढ़ि सुरक्षा भेल, मुदा नहरि निकालि क' सिंचाइक व्यवस्था स' ई क्षेत्र एखनो वंचित अछि।

एहि नदीक पश्चिमी-दक्षिणी भाग गंडक सिंचाइ योजनाक अन्तर्गत अछि। यदि जलक सदुपयोग कयल जाय त' चम्पारण जिलाक पूर्वी-उत्तरी भाग, मुजफ्फरपुर जिलाक पूर्वी-उत्तरी हिस्सा एवं दरभंगा जिलाक पश्चिमी भागमे सिंचाइक व्यवस्था भ' सकैछ। चम्पारण जिलाक लालबेगिया घाट तथा बरनाबा घाटक मध्य कोनो उपयुक्त स्थल पर बराज निर्माण कयला स' एहि नदीक उत्तरी-पूर्वी भाग–छोड़ादानो, घोड़ासाहन, ढ़ाका, चिरैया, पताही, मधुबन तथा मेहसी प्रखंडमे पटौनीक व्यवस्था भ' सकैछ। यदि एहि नदीक समानान्तर बाम भाग स' एकटा नहरि निकालि मधुबन प्रखंड होइत बागमती नदीक दहिना नहरि स' मीनापुर प्रखंड कें संयोजित कयल जाय त' मुजफ्फरपुर जिलाक बोचहा, गायघटी, कटरा, राजखंड तथा दरभंगा जिलाक कल्याणपुर, बरौली, पूसा ओ समस्तीपुर प्रखंडमे सुविधा पूर्वक पटौनीक व्यवस्था कयल जा सकैछ।

कमला नदी परियोजना

कमला नदी नेपालक सगरमाथा अंचलक उदयपुर जिलाक उत्तरी छोरमे हिमालय पहाड़क महाभारत पर्वत-माला शिखर स' निःसृत होइत अछि। पहाड़मे 29 कि.मी. प्रवाहित भेलाक बाद नेपालक तराइमे 32 कि.मी. बहलाक बाद मिथिलांचलक सीमामे मधुबनी जिलाक जयनगरमे प्रवेश करैछ। कुल जलग्रहण क्षेत्र 5545 वर्ग कि.मी. छैक, जाहिमे मात्र 3000 वर्ग कि.मी. मिथिलामे एवं बाकी क्षेत्र नेपाल तराइ मे छैक। मिथिलामे लक्ष्मी नाम स' ई नदी जानल जाइछ, तें संभवतः कमला माई सेहो कहल जाइछ। धार्मिक ओ सांस्कृतिक महत्वक अलावा मिथिलांचलमे एहि नदीक आर्थिक महत्व छैक। एहि अंचलक भूमि के उर्वर बनबैत ओ ऊसर भूमिकें उपजाउ बनाबयमे

बागमतीक बाद एहि नदीक योगदान अद्‌भुत छैक। प्रति बीघा कम स' कम 80-85 मन फसिल होइत छैक।



नदी अपन जल-धारा मे खूब परिवर्तन करैत अछि। अठारहम शताब्दीमे ई नदी जयनगर आ मधुबनीक पश्चिम तथा दरभंगा स' 5 कि.मी. पूब गौसाघाट सं' प्रवाहित होइत फुहिया गामक समीप करेह नदीमे समाहित भ' जाइत छल। कालान्तरमे कमलाक प्रवाह जयनगर स'-पूब होइत बलथरमा गाम लग तिलयुगामे मिल गेल छल। 1922 मे एकर एकटा धार झमटा गामक समीप जीवछ नदीमे मिल गेल। पुनः 1930, 1939 ओ 1940 मे धारमे परिवर्तन भेल। 1954 क बाढ़िमे ई बलान नदीमे समाहित भ' गेल ओ बलान आगू चलिकय कोसी मे विलीन भ' जाइछ। ई नदी 'कमला बलान' नाम स' सेहो जानल जाइछ। एकर एक शाखा, जे मनीगाछी लग रेललाइनकें पार कय झमटाक पास कोसी मे मिल जाइछ। एतय पैटघाट कमलाक नाम स' जानल जाइछ।

1954 मे मिथिलाञ्चलक 4.73 लाख एकड़ भूमिके बाढ़ि सुरक्षाक हेतु कमला बलान पर तटबंध बनयबाक निर्णय राज्य सरकार लेलक। 1956 मे 1.11 करोड़ टाकाक लागत स' एहि तटबंधक निर्माण शुरु भेल एवं 1959 मे प्रथम चरणक काज सम्पन्न भेल। द्वितीय चरणक काज तृतीय पंचवर्षीय योजना कालमे चालू भेल। तटबंध निर्माण कार्य लगभग 76 प्रतिशत पंचायत द्वारा एवं बाकी 24% कार्य ठेकेदार स' करायल गेल। 1941 क आसपास 17 लाख टाका स' निर्मित 'किंग्स नहर प्रणाली' क जीर्णोद्वार योजनाक उद्‌घाटन 1951 मे तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल द्वारा करायल

गेल। कमला बलान तटबंधक उत्तरी सीरामे 48.67 लाख टाकाक लागत स' 300 मीटर लम्बा एक बीयर बनायल गेल एवं बीयरक दुनू छोर स' एक मुख्य नहरि निकालल गेल। एहि नहरिके किंग्स कैनल स' जोरि देल गेल एवं नव नहरक निर्माण तृतीय पंचवर्षीय योजना कालमे कयल गेल। एहि तरहें 45 कि.मी. लम्बा किंग्स कैनल, 24.20 कि.मी. लम्बा मुख्य नहर आ 163 कि.मी. लम्बा शाखा नहर स' पूरा कमला बलान नहर प्रणाली तैयार कयल गेल। एकर कुल कमांड क्षेत्र 1.69 लाख एकड़ अछि।

कमला बलान सिंचाइ परियोजना स' मुख्यतः मधुबनी जिलाक भूमिक सिंचाइ होइत अछि। 1964-65 मे खेतमे पानी पहुंच' लागल। 1969-70 मे 85% क्षमता स' खरीफक मौसममे 77,168 एकड़ भूमिमे सिंचाइ संभव भ' सकल। किन्तु ई तटबंध 1963, 1964, 1971 एवं 1987क बाढ़ि स' कतेको ठाम टूटि गेल। 1987 क बाढ़िमे पूर्वी ओ पश्चिमी तटबंध पिपराघाट स' झंझारपुर धरि 27 ठाम ढहि गेल छल। जाहिमे मुरहद्दी, अमोलागाछी, बैठोनी, अदलपुर, बेहट, नवटोल, नरुआर, इमामगञ्जी ओ भटगामा गाममे तटबंधक नामोनिशान नहि रहल। रेल लाइन ओ सड़क मार्ग क्षतिग्रस्त भ' गेल छल। एहि विनाशक मुख्य कारण छैक जे मूल परियोजनाक निर्माण शीशापानी (नेपाल) स' 9 कि. मी. दक्षिण मिरचइया स' आरम्भ करक छलैक जे जयनगर स' प्रारम्भ कयल गेल। दिसम्बर 1990 मे भारत आ नेपालक बीच सामूहिक नदी जल आयोग बनयबाक सहमति भेल छल जाहिमे शीशापानीमे तटबंधक योजना छल जे एखनो धरि क्रियान्वित नहि भ' सकल।

मधुबनी जिलाक खजौली गाम लग कमला सिफनक निर्माण भ' रहल अछि। एहि पर 55 करोड़ टाकाक व्यय अनुमानित अछि एव मार्च 2000 धरि पूरा भ' जेबाक छलैक। एहि स' दरभंगा एवं समस्तीपुर जिलाक 2.34 लाख हेक्टर अतिरिक्त भूमिक सिंचाइक व्यवस्था भ' सकत।

महानन्दा नदी

कर्सियांगक पूब 2060 मीटरक ऊंचाई स' महाल्दीराम पहाड़क समीप महानन्दा नदीक उद्‌गम स्थान छैक एव मालदह (बंगाल) जिला होइत गंगामे समाहित होइछ। कुल जलग्रहण क्षेत्र करीब 25000 वर्ग कि.मी. अछि। मैदानी इलाकामे मुख्यतः ई नदी कोसी ओ तीस्ता (बंगालक) बीच प्रवाहित होइछ। पूर्णिया ओ कटिहार जिलामे एहि नदीक गहराई दू-अढ़ाई मीटर स' अधिक नहि अछि। एहि कारणे एहि दुनू जिलाक लगभग 5 हेक्टर क्षेत्रमे नदीक बाढ़िक फैलाव छैक। ई नदी पूर्णिया जिलाक पोठिया प्रखंडमे प्रवेश कय ठाकुरगंज प्रखंडक सीमा पर नेपाल स' निःसृत मेची नदी स' संगम करैत अछि। मेची संगम धरि ई नदी पूर्णिया जिलामे 34 कि.मी. प्रवाहित होइछ। तदुपरान्त ई किसनगंज आ बाइसी प्रखंडमे प्रवाहित होइत कटिहार जिलाक कदवा प्रखंडमे प्रवेश करैत अछि। एतय महानन्दा दू धारामे विभाजित अछि। एक धारा सोझ

दक्षिण दिस आजमनगर, प्राणपुर, मनिहारी एवं अमदाबाद प्रखंडमे प्रवाहित होइत कटिहार जिलाक सीमा पार करैत अछि। टांसर धार पूब दिस मुड़िकय कटिहार-बारसोई रेललाइन के बारसोईक समीप कटिहार जिलाक सीमास' बाहर निकलैत अछि। कंकई, नागर, परगान, मेची एवं दाउक महानन्दाक सहायक नदी अछि।

महानन्दा नियंत्रण परियोजना

1965 मे सर्वप्रथम महानन्दा तथा कारी कोसी पर तटबंधक प्रस्ताव भेल जाहिमे गंगा नदीक उत्तरी कछेड़ पर तटबंध सेहो शामिल छल। बिहार तथा पश्चिम बंगालक मुख्य अभियंता तथा केन्द्रीय जल एवं ऊर्जा आयोगक अधिकारी सभक बैठकमे बिहार राज्यमे एहि योजनाक स्वरुप एहि तरहे निर्धारित कयल गेल।

1. कटिहारक रेलवे बांध स' शुरु कयके मनिहारीक परित्यक्त रेलवे बांध धरि कारी कोसीक पूर्वीतट पर तटबंधक निर्माण कयल जाय तथा तटबंध पर 2 मीटरक फ्री बोर्ड राखल जाय।
2. कारी कोसीक पश्चिमी किनार पर तटबंध बनायल जाय एवं एकरा गंगा नदी पर बनल काढ़ागोला तटबंध स' जोड़ि देल जाय।
3. महानन्दाक पश्चिमी छोड़ पर खाजा हाट स' चौकिया पहाड़पुर धरि, जतय गंगा नदी स' संगम करैछ, तटबंध बनायल जाय।
4. महानन्दाक बारसोई शाखा पर बागडोब स' कुशीदह (पश्चिम बंगालक सीमा) धरि तटबंध बनायल जाय।
5. महानन्दाक पूर्वी किनार पर बागडोब स' दिल्ली दीवानगंज (पश्चिम बंगालक सीमा) धरि तटबंध बनायल जाय एवं एहिमे 1.50 मीटरक फ्री बोर्ड बनायल जाय।
6. गंगा नदीक उत्तरी तट पर चौकिया पहाड़पुर स' टोपरा धरि तटबंध बनायल जाय जाहिमे 1.2 मीटर फ्रीबोर्ड राखल जाय।

प्रस्तावित छल जे महानन्दाक दुनू तटबंधक बीच 1830 मीटरक फासिला राखल जाय जाहि स' ई तटबंध प्रणाली पचास वर्षमे आबयबला बाढ़ि चक्र कें सम्हारि सकय। गंगानदी पर मात्र 1.20 मीटरक फ्रीबोर्ड एहि हेतु राखल गेल जे एकर दक्षिणी छोर पर तटबंधक प्रस्ताव नहि छल एवं ओहि दिस एहि नदी के बहबाक हेतु स्वतंत्र राखल गेल छल। कारण अपेक्षा कयल गेल जे टोपरा आ चौकिया पहाड़पुरक बीचक रेलवे बांध ओहि क्षेत्रक सुरक्षाक हेतु पर्याप्त होयत।

1970 धरि एहि परियोजनाक स्वीकृति भेल एवं बिहार पब्लिक इरीगेशन तथा ड्रेनेज ऐक्ट, 1947 क अन्तर्गत 1972 मे एहि योजना पर काज प्रारम्भ भेल। लगभग 1982 धरि काज पूरा भ' गेल। किन्तु छोट-मोट काज 1987 धरि चलैत रहल। आब

मात्र रख-रखाव भ' रहल अछि। 1970 मे एहि योजनाक लागत 530.13 लाख आंकल गेल छल जे मार्च 1993 धरि 5247.94 लाख टाका भ' गेल। एहि खर्चमे स्थापना खर्च कारी कोसी, बरण्डी ओ गंगा पर बनायल गेल तटबंधक खर्च शामिल नहि अछि।

गंगा पर बनल काढ़ागोला तटबंध तथा कुरसेला-तीनिया बरण्डी तटबंध ओ बरण्डी नदीक दुनू कछेड़ पर बनल तटबंध के आब महानन्दा परियोजनामे सम्मिलित कय लेल गेल छैक। एहि स' महानन्दा प्रणालीक तटबंधक लम्बाइ आब 336 किलोमीटर भ' गेल छैक। किन्तु, योजनाक कार्यान्वयनक पहिने बाढ़ि प्रभावित क्षेत्र 1009 लाख हेक्टेयर क्षेत्र छल से योजना पूरा भेला पर 0.81 लाख हेक्टेयर रहि गेल। तहिना बाढ़ि प्रभावित क्षेत्रक 8.40 लाख जनसंख्या छल जे योजना क्रियान्वयनक बाद 40 हजार रहि गेल।

महानन्दा तटबंधक बीचक दूरी लगभग 2 किलोमीटर अछि। विस्थापित लोकनि मे मुख्यत: बारसोई शाखाक बागडोबक दक्षिणमे बसल लोक छथि। एहिमे सात गाम परैत छैक। संसारपुर (55 परिवार), सहजना (43 परिवार), सहजना कदमगच्छी (24 परिवार), तीयर पाड़ा (20 परिवार), पोरला अराजी (92 परिवार), बासागांव (49 परिवार) एवं कटहर टोल (10 परिवार)। कुल विस्थापित 293 परिवार भेलाह। एहि नदीक तटबंधक फलस्वरुप विस्थापित परिवारक स्थायी पुनर्वासक हेतु परियोजना कार्यालय द्वारा निर्धारित क्षेत्रफल 853.50 एकड आकल गेल मुदा भू-अर्जन कार्यालयक अनुसार निर्धारित क्षेत्रफल 466.06 एकड अछि, जखन कि विस्थापित के भुगतानित जमीनक क्षेत्रफल मात्र 429.08 एकड अछि।

■



आठम पंचवर्षीय योजनामे मिथिलांचलक वृहद् सिंचाई योजनाक अद्यतन स्थिति

स्रोत : जल संसाधन विभाग, बिहार सरकार, पटना

क्र० सं०	परियोजनाक नाम	लाभान्वित जिला	प्रारम्भ वर्ष	मूल प्राक्कलन करोड़मे	चालू प्राक्कलन करोड़मे	1995 धरि कयल गेल व्यय	मूल योजना अनुसार पूरा करबाक वर्ष	योजना पूरा करबाक वर्तमान अनुमान	सिंचाइक लक्ष्य (हेक्टरमे)	
									मूल योजना	वास्तविक उपलब्धि
1.	कोसी परियोजना (राजपुर नहरि सहित)	सहरसा, सुपौल पूर्णिया, अररिया मधेपुरा	1955	37.31	फेज एकक समाप्तिक बाद 180 करोड़ तथा 123.83 करोड़क अतिरिक्त मांग	232.00 करोड़ (1995)	1963	पता नहि	702400	189,000 (1995)
2.	गंडक परियोजना	पूर्वी तथा पश्चिमी चम्पारण, मुजफ्फपुर, समस्तीपुर (सारण सिवान ओ गोपालगंज सेहो शामिल)	1961	40.43	फेज एकक सम्पातिक बाद 1985 मे 366 करोड़ तथा 445.23 करोड़क अतिरिक्त मांग	427.00 करोड़ (1995)	1969	पता नहि	11,53000	3,42000 (1995)
3.	पश्चिमी कोसी नहरि	दरभंगा, मधुबनी	1962	13.24	568.37(1955) 125.21 (1881) मात्र सिंचाइ	238.00 (1995) 33.85 सिंचाइ पर खर्च)	1979	1997	2,61,000	15471 (1995)
4.	बागमती परियोजना	सीतामढ़ी, शिवहर	1965	5.78	मात्र सिंचाइ	मात्र सिंचाइ	1972	नवम योजनाक अंत धरि	121000	शून्य

जनसंख्या एवं आर्थिक विकास

कोनो भूभागक जनसंख्या ओहि अंचलक सम्पत्ति बूझल जाइछ। जनशक्ति साधक पूंजी अछि। मानवीय संसाधन मानवीय पूंजीक एक महत्व सम्पन्न अंग थिक जकरा अर्थव्यवस्थाक विकासक मार्गमे प्रभावी रुप सं विनियोग कयल जा सकैछ। यदि एहि जनशक्तिक उचित उपयोग नहि होयत तं नव रोजगारक अवसर नहि प्राप्त होयत एवं ई साधन भार भ' जायत। उत्पादनमे मानव सक्रिय सहयोग करैत अछि। ओ उत्पादनक साधन एवं साध्य दुनू अछि। मिथिलांचल निर्धन अछि। प्रति व्यक्ति आय बहुत निम्न एवं जीवन-स्तर विश्वक सब सुसभ्य देश सं निम्न छैक। हमरा लोकनिक निर्धनता प्राकृतिक विपुलताक बीच बनल अछि। नि सन्देह प्राकृतिक साधन, पूंजी, विदेशी सहायता एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार आर्थिक विकासमे अपन सबल भूमिका रखैछ, किन्तु एहिमे सं कोनो एतेक महत्वपूर्ण नहि अछि जतेक मानव शक्ति।

एहि अंचलक जनसंख्यामे महत्वपूर्ण बात अछि एकर वृहत् आकार। तेजी स बढ़ैत जनसंख्या एहि अंचलक आर्थिक विकासमे सबस' पैघ बाधा अछि। जाहि गति स' जनसंख्यामे वृद्धि भ' रहल अछि ओहि गति स' उत्पादन नहि बढ़ि रहल अछि। फलतः प्रति व्यक्ति औसत आय कम भ' जाइछ। लोकक जीवन-स्तर निम्न स' निम्नतर होइत जाइत अछि एवं कार्यकुशलतामे ह्रास होइछ। बेकारी बढ़ैत छैक। एहि अंचलमे विवेकपूर्ण जनसंख्या नियोजन तत्काल आवश्यक अछि, अन्यथा जनसंख्या वृद्धि आर्थिक प्रगति के पूर्णतया अवरूद्ध क' देत एवं विभिन्न समस्या यथा, खाद्यान्न पूर्तिक समस्या, आय, बचत ओ विनियोगक दर मे कमी, जनोपयोगी सेवा अस्पताल, रेल, परिवहन, विद्युत, जल, मकान-भाड़ामे वृद्धि, श्रम शक्तिमे वृद्धि स' रोजगारक साधनक कमी, आश्रितक भारमे वृद्धि कृषि एवं उद्योगक विकासमे बाधा उत्पन्न करैत अर्थव्यवस्थाके कमजोर बना देत अछि। एहि समस्याक समाधान हेतु शिक्षा सुविधाक विस्तार, कन्या ओ बालकक वैवाहिक नियमक कठोरता स' पालन, परिवार कल्याण कार्यक्रमके प्रभावी बनायल जाय, गर्भपात सुविधामे वृद्धि, सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रममे वृद्धि, ग्रामीण विकास कार्यक्रम एवं परिवार कल्याण योजनामे समन्वय, कृषि ओ अन्य उद्योगमे उत्पादन वृद्धिके प्रोत्साहन, आदि के प्रभावी बनयबा पर जोर देल जेबाक चाही।

एतयक जनसंख्या नेपाल, लंका, बर्मा, अफगानिस्तान, आस्ट्रेलिया ओ न्यूजीलैंड स' बेसी अछि। जनसंख्याक घनत्व दरभंगा मे सबस' बेसी ओ पूर्णिया मे सबस' कम अछि। पुरुषक संख्या स' स्त्रीगणक संख्या बेसी अछि–1000 पुरुष पर 1013 महिला। ग्रामीण जनसंख्या 97 प्रतिशत अछि। 21,000 गाम अछि। 90 प्रतिशत ग्रामीण लोक खेती स' गुजर करैत छथि। 25 प्रतिशत कृषि श्रमिकके जीवन यापनक कोनो आधार

नहि छन्हि। जन्म दर तथा मृत्यु दरमे विशेष रूप स' कमी भेल अछि जे विश्वक दर स' एखनो कम अछि। नागरिक जनसंख्याक अनुपात सर्वत्र समान नहि अछि। गुजरातमे 31.1 प्रतिशत आ अपना ओतय मात्र 12.5 प्रतिशत। साक्षरतामे सेहो कमी अछि जाहिमे पुरुषक अपेक्षा महिला बेसी अशिक्षित छथि।

एहि अंचलक जिलावार क्षेत्रफल ओ जनसंख्या 1991 क जनगणनाक आधार पर

क्रमांक	जिला	क्षेत्रफल (वर्ग कि. मी.)	जनसंख्या	जनसंख्याक वृद्धि दर	जनसंख्याक घनत्व
1.	अररिया	2830	16,11,638	26.65	569
2.	बेगूसराय	1918	18,14,773	24.50	945
3.	दरभंगा	2279	25,10,959	24.94	1101
4.	पूर्वी चम्पारण	3968	30,43,091	25.43	767
5.	पश्चिमी चम्पारण	5228	23,33,066	18.51	446
6.	कटिहार	3057	18,25,380	27.51	596
7.	खगड़िया	1486	9,87,227	28.37	664
8.	किसनगंज	1884	9,84,107	22.52	524
9.	मधेपुरा	1788	11,77,706	22.20	659
10.	मधुबनी	3501	28,32,024	21.62	808
11.	मुजफ्फरपुर	3172	29,53,903	24.99	929
12.	पूर्णिया	3229	18,78,885	23.58	581
13.	सहरसा	1692	11,32,413	26.38	612
14.	सुपौल	2420	13,42,841		
15.	समस्तीपुर	2904	27,16,929	28.27	935
16.	सीतामढ़ी	2643	20,13,795	23.64	904
17.	वैशाली	2036	21,46,065	28.98	1053
18.	शिवहर (सीतामढ़ीमे शामिल)		3,77,699		
	कुल जनसंख्या :		**3,36,82,501**		

उत्तरी भागलपुर एवं उत्तरी मुंगेर उपरक तालिकामे नहि अछि। संगहि नेपाल तराइक 7 जिलाक आंकड़ा सम्मिलित नहि अछि।

आजुक सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक पुनर्निमाणक कोनो योजनामे जनाधिक्यक समस्या महत्वपूर्ण अछि। अंचलक आर्थिक पुनर्निर्माणमे वर्तमान जनसंख्या पैघ रुकावट सिद्ध भ' रहल छैक। जनसंख्याक कमी अथवा भविष्यमे कम स' कम वृद्धि अनिवार्य अछि। अधिकांश निवासीक स्थिति एहन दारुण छन्हि जे ओ अपन जीवनक न्यूनतम आवश्यकताक पूर्तिमे असमर्थ छथि। एतयक अधिकांश व्यक्ति

आधा भुखायल, आधा नांगट आ अस्वस्थ छथि। कम स' कम दू-तिहाई व्यक्तिके पर्याप्त मात्रामे भोजन नहि उपलब्ध छन्हि। एहि स्थितिमे 'सादा जीवन ओ उच्च विचार' जे एतयक आदर्श रहल अछि वैह जीवनक आदर्श होयबाक चाही। जनाधिक्यक समस्या आर्थिक विकास ओ सामान्य तथा विशेष दुनु प्रकारक शिक्षाक प्रसार स' कम कयल जा सकैछ। परिवार नियोजन सर्वाधिक महत्वपूर्ण अछि। एकर समाधान हेतु 20 सूत्री कार्यक्रममे परिवार नियोजन पर अत्यधिक महत्व देल गेल छल। आठम पंचवर्षीय योजनामे सेहो एहि पर पर्याप्त जोर देल गेल छैक। प्रमुख अर्थशास्त्री डा. ज्ञानचन्दक शब्दमे ''द्रुतगति स' बढ़ैत जनसंख्या एतयक आर्थिक विकासक मार्गमे सब स' पैघ बाधा सिद्ध भ' रहल अछि।

■

कृषि

आर्थिक विकासमे कृषिक योगदान

मानव सभ्यताक विकासक आरम्भ स' कृषि विशाल जनसंख्याक जीविकाक प्रधान साधन रहल अछि। वास्तवमे कृषि सब उद्योगक जननी ओ मानव जीवनक पोषक थिक। विश्वक विकसित महत्वपूर्ण राष्ट्र के तीव्र गति स' कृषिक विकास उद्योगीकरणके सुदृढ़ आधार प्रदान कयलक। कोनो अल्प-विकसित भूभाग खाद्यान्नमे आत्मनिर्भरता प्राप्त कयने बिना अपन आर्थिक विकासक कल्पना नहि कय सकैछ। आर्थिक विकास मे कृषिक भूमिका एहि तथ्य स' परिलक्षित होइछ–बढ़ैत जनसंख्याक हेतु पर्याप्त खाद्य-सामग्री उपलब्ध करब, औद्योगिक कच्चा मालक आपूर्ति, पूजी निर्माणमे सहायक, विदेशी विनिमयक स्रोत, औद्योगिक मालक हेतु बाजार एव अन्य पूजी-प्रधान उद्योगक हेतु श्रम-शक्ति उपलब्ध करब। कृषि उत्पादकतामे सुधार उद्योगीकरण के प्रोत्साहित करबामे ठोस साधन साबित भेल अछि। कृषि एव आर्थिक विकासमे अत्यन्त घनिष्ठ सबध छैक। कृषि एव उद्योग दुनू क्षेत्रक विकास अन्तरसंबंधित अछि। प्रत्येक एक दोसर पर निर्भर अछि। विश्व बैकक एक रपटक अनुसार बिना कृषि विकासके आर्थिक विकास सभव नहि अछि। मिथिलाचलोक आर्थिक विकास कृषिक समग्र विकासक बिना सभव नहि अछि। कृषि-व्यवस्थामे आमूल परिवर्तनक योजनाके कार्यान्वित करय परतै।

गगा, गडक, बूढ़ी गडक, बागमती, कमला, कोसी, अधवारा समूह, महानन्दा आदि अनेक नदी स' पोषित मिथिलाचलक भूमि बड उपजाऊ अछि। ई नदी सब प्रति वर्ष बाढ़िमे पाक आनि भूमिक उत्पादन शक्तिके अक्षुण्ण रखने रहैत अछि। एतय बलुआर, दोरस, मटियार, चिकनी माटि अथवा ऊसर माटि अछि। माटिमे चूनक अंश छैक। बलुआर माटि गहूम, जव, जई, दलहन ओ तेलहनक हेतु उपयुक्त अछि। दोरस माटि धान, भदै ओ रबी फसलक हेतु, मटियार धानक हेतु, चिकनी माटि उपरारिमे भदै फसलक हेतु एव नीचामे धानक खेती हेतु श्रेयस्कर अछि। दरभगा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर ओ उत्तरी मुगेरक बलुआर माटिबला जमीन रबी फसलक हेतु, किन्तु कोसी क्षेत्रक बलुआर माटि बेसी उपजाउ नहि अछि। पूर्णिया, सहरसा ओ मधेपुराक जमीन कम उपजाउ छैक। सरिसो, तोरी, राहरि, कुर्थी, तिल आदि औस, मकई, जनेर बूढ़ी गडक ओ लखनदेईक उत्तर मुजफ्फरपुर, मोतिहारी ओ बेतियाक बलुआर भूमिमे होइछ। एकर अलावा एहि भूभागक माटि मटियार ओ दोरस अछि। धनहर ओ भीठ माटिक वर्गीकरण छैक–पहिल नीचाक भूमि धानक हेतु ओ भीठमे रब्बी होइछ।

एहि भूभागक कृषि बहुत पछुआएल या निम्न उत्पादकताक मुख्य चारिटा कारण अछि–प्रथम प्राकृतिक, दोसर तकनीकी, तेसर आर्थिक एव चारिम सस्थागत। एतयक कृषि प्रकृति पर निर्भर करैछ।

कुल भूमिक आकार एहि तरहें अछि

जोत जमीन	—	43.16 प्रतिशत
बंजर भूमि	—	17.66
गाछ-वृक्ष	—	1.54
चरागाह	—	2.79
कृषि काजमे		
नहि लागल	—	11.88
कृषियोग्य नहि	—	5.86
जंगल	—	14.86
कृषि योग्य बेकार भूमि		2.24
		100

मुख्यत: रौदी ओ दाहीक बीच सिंचित भूमिक क्षेत्र कम अछि। बाढ़िक रोकथाम हेतु तटबध बनल, मुदा उचित स्थान पर नहि। नहरि बनल किन्तु ओहिमे पटौनीक हेतु पर्याप्त जलक अभाव। तकनीकी कारणमे उत्पादनक पुरान पद्धति, बढ़िया बीया खादक आभाव एव फसलक असुरक्षा। अधिकांश कृषक लकड़ीक हर, खुरपी कोदारि, करीन स' पटौनी आदिक प्राचीन तकनीकक प्रयोग करैत छथि। लोहाक हर ट्रैक्टर, थ्रेसिंग मशीन, डीजल पम्प आदि आधुनिक कृषि हथियारक उपयोग नहि कय पबैत छथि। बढ़िया उन्नत बीजक उपयोग नहि होइछ। अपने जमीनमे उत्पादित बीया जे अधिकाशत: बढ़िया नहि होइछ ओ जकर उत्पादकता कम होइत छैक, प्रयोग करैत छथि। रासायनिक खादक प्रयोग अत्यल्प अछि। फसलक सुरक्षा कीड़ा मकोड़ा एव रोग स' नहि भ' पबैत अछि। लगभग 20 प्रतिशत फसिल एहि स' नष्ट होइछ। आर्थिक कारणमे मुख्य अछि–कृषि-ऋण। एतयक कृषक कृषि कर्ज स' दबल रहैत छथि। फलस्वरूप, उत्पादन वृद्धिक हेतु धनक विनियोजनमे असमर्थता। जाहि स' कृषिमे आधारभूत आदानक कमी। वांछित उत्पादनक कमी। जोत जमीनक छोट आकार एव दोषपूर्ण भूमि व्यवस्था सस्थागत कारण अछि। जमीन्दारी प्रथा समाप्त भ' गेल, मुदा भूमि-सुधार कानूनक पालन समुचित ढग स' नहि भ' सकल छैक। जिनका पैघ जोत जमीन छन्हि ओ खेत पट्टेदारी एव बटाई दैत छथि। पट्टेदार अथवा बटेदार सभ के जमीनक स्वामित्व नहि रहला स' कृषि-कार्य सही ढग स' नहि होयबाक कारणे उत्पादन कम होइत अछि। कृषकक परम्परावादी दृष्टिकोण, कृषि पर जनसंख्याक वृद्धिक भार, सामाजिक सगठन यथा सयुक्त परिवार ओ जाति प्रथा, एव कृषि अनुसन्धानक जानकारीक अभाव सेहो पिछड़ल खेती-बारीक कारण अछि।

एहि भूभागमे औसत वर्षा 54 इंच–48 इंच जून-अक्टूबरमे, 1.5 इंच नवम्बर-फरवरीमे ओ 4.5 इंच मार्च-मइमे। 55 स' 65 दिन वर्षा होइछ। मानसून स' वर्षा जे बंगालक खाड़ी स' चलिकय उत्तर-पूबमे हिमालय स' टकराइत अछि। उत्तरी पहाड़मे वर्षा बेसी होइछ। खेतीक हेतु पर्याप्त वर्षा होइत छैक मुदा पर्याप्त जल बेकार भ' जाइत छैक। एकरा संचय कय पटौनीक व्यवस्था समुचित नहि भेल अछि। कुल खेतीयोग्य भूमि ओ सिंचित क्षेत्र एहि तरहें अछि:

जिलावार भूमिमे भेल कृषिक एवं पटौनीक व्यवस्था 1991 क जनगणानाक आधार पर

क्रमांक	जिला	भेल कृषि कार्य	सिंचित भूमि (वर्ग कि. मि.)
1.	कटिहार	1613.84	613.89
2.	अररिया	अनुपलब्ध	
3.	बेगूसराय	1220.16	507.27
4.	दरभंगा	1374.37	309.75
5.	खगड़िया	836.96	460.83
6.	किसनगंज	अनुपलब्ध	
7.	मधेपुरा	1284.58	391.90
8.	मधुबनी	2537.30	325.51
9.	मुजफ्फरपुर	2193.81	648.81
10.	पश्चिम चम्पारण	2707.46	820.81
11.	पूर्वी चम्पारण	3105.18	957.27
12.	पूर्णिया	3054.16	815.63
13.	सहरसा-सुपौल	2050.14	611.82
14.	समस्तीपुर	1848.65	605.14
15.	सीतामढ़ी-शिवहर	1787.70	402.90
16.	वैशाली	1195.01	528.13

एत' तीन तरहक फसिल–भदै, अगहनी ओ रबी होइत अछि। धानक खेती 52 प्रतिशत एवं एकर एतय उत्पादन 1432 एलबी जे भारतमे 1240 एलबी, अमेरिकामे 2185 एलबी, 2433 एलबी चीन, जापानमे 3444 एलबी एवं इटलीमे 4565 एलबी। एकर उत्पादन बढ़ायल जा सकैत छैक मुदा वैज्ञानिक खेती, बीज, खाद ओ पटौनीक समुचित व्यवस्था करय परतै। गहूमक उत्पादन 11% क्षेत्रमे जकर उत्पादन एतय प्रति एकड़ 625 एलबी, जे भारतमे 660 एलबी, चीनमे 989 एलबी, अमेरिकामे 1030 एलबी इटलीमे 1383 एलबी, जापानमे 1713 एलबी एवं मिस्रमे 1918 एलबी छैक।

विश्वक तुलनामे एत' प्रति एकड़ उत्पादन कम होइत अछि। मकई अपना ओतय 14% क्षेत्रमे एवं उत्पादन 625 एलबी प्रति एकड़, भारतमे 803 एलबी चीनमे 1284 एलबी, 1392 एलबी जापान, अमेरिकामे 1579 एलबी, मिस्रमे 1891 एलबी एवं इटलीमे 2079 एलबी। जव 9% कृषि क्षेत्रमे ओ चना 6% क्षेत्रमे उपजायल जाइछ। एकरा अतिरिक्त खेसारी, मूंग, राहरि, मसूरी, उरीद, साम, मडुआ, चीन, कोदो, जनेर, बाजरा, मटर, आदि उपजायल जाइत अछि। साग-सब्जी ओ फल-फूल सेहो होइत अछि। पटुआ (4%), तेलहन (4%) तमाकू (2%), कुसियार (2%) कृषि क्षेत्रमे कयल जाइछ। कुसियारक उत्पादन एतय 18,816 एलबी प्रति एकड़ अछि जे भारतमे 31,360 एलबी, जावामे 1,25,440 एलबी। एहि क्षेत्रक भूमि उपजाउ होइतो प्रति एकड़ उत्पादन बहुत कम अछि।

कपासक खेती एतय नहि भ' रहल अछि, मुदा सम्भव अछि। चायक खेती सेहो संभव छैक एवं किसनगंजमे आब शुरु कयल गेल छैक। सुपारी सेहो उपजायल जा सकैत अछि। नारियल, केरा ओ अनानसक व्यावसायिक खेती, जे पहिने नहि भ' रहल छल आब प्रारम्भ कयल गेल अछि।

जिलावार जंगलक विवरण

1991क जनगणनाक आधार पर (वर्ग किमी) क्षेत्र

क्रमांक	जिला	जंगल क्षेत्र
1.	कटिहार	21.67
2.	खगड़िया	6.98
3.	पश्चिम चम्पारण	917.45
4.	पूर्वी चम्पारण	1.18
5.	पूर्णिया	13.05

अन्य जिलामे जंगल अछि, मुदा प्राकृतिक नहि। सामाजिक वानकी राज्य सरकार द्वारा कयल गेल अछि जाहिमे सड़क ओ रेलपथक दुनू कछेड़मे सीसो एवं अन्य गाछ लगायल गेल छैक।

वनस्पति मात्र 7% क्षेत्रमे अछि। पूर्वी चम्पारण, पश्चिम चम्पारण ओ नेपाल तराइमे विशेष रुप स' सखुआ, सीसो, सिमर, तुन ओ खैरक लकड़ी अछि। आबादीवला क्षेत्रमे आम, जामुन, केरा, लिच्ची, लताम, कटहर, बेल, खजुर, तेतरि, बैर, बरहर, गुलैर, अत्ता, सरीफा, दारिम, अमरा, नेबो, मुनिगा, पपीता, धात्री, बहेड़ा, हरे, बड़, पीपड़, कदम, सीसो, चम्पा, भालसरी, सिंगरहार, साहोर, कटैया, जमालगोटा आदि मुख्य वनस्पति अछि। ई वृक्ष स्वयं जन्मैत अछि एवं लगायल सेहो जाइत अछि। जमीनमे कन्द सेहो लगायल जाइत अछि, जाहिमे अल्हुआ, केसौर, सुथनी, उरबी एवं खम्हौर बलुआही माटि पर तरबुज, खरबुज ओ ककरी-बतिया गर्म कालमे उपजायल जाइछ।

तरकारीमे भाटा, झोगुनी, घेरा, करैल, कुम्हर, कदीमा, सजमनि, रामझीगुनी, सीम, कोबी, बंधकोबी, परोर, ओल, टमाटर, गाजर, मुरै आदि होइत अछि। सागमे ठढ़िया, गेन्हारी, लालसाग, बथुआ, पटुआ, पालक, पांरो, कुसुम, करमी, तिलकोर आदि। धनो, मेथी, सोआ, मिरचाई, हरदि, आद, प्याज, लहसुन सेहो उपजायल जाइत अछि। करोना, धात्री, कुतरुम सेहो होइछ। तुलसी, गुरीच, ब्राह्मी, कटैया आदि दबाइक पौधा लगायल जाइछ। मखान एहि भूभागमे होइछ जे भारतक अन्य भागमे नहि होइत अछि। पानक खेती सेहो अदौ स' भ' रहल अछि। खढ़ ओ खड़ही घर छार'क काजमे लगैत छैक। साबेक घास स' डोरी बनायल जाइछ ओ कागज उद्योगक एक प्रमुख कच्चा माल एतय होइछ। बांस घर बनयबाक काजमे लगैत छैक। मोथा ओ पटेर स' पटिया बनायल जाइत अछि।

भूमि व्यवस्था एवं भूमि सुधार

भूमि व्यवस्था स' अर्थ ओहि व्यवस्था स' अछि जकरा अनुसार भूमिक स्वामित्व, अधिकार एवं दायित्व निर्धारित कयल जाय। भूमि कें जोतयवलाक स्वामित्व, उचित मात्रामे लगानक भुगतान, भूमिक हस्तांतरणक स्वतंत्र व्यवस्था एवं जोतक सीमा निर्धारण एक आदर्श भूमि व्यवस्थाक गुण मानल जाइत छैक। स्वतंत्रता प्राप्तिक समय 1947 मे विभिन्न प्रकारक भूमि व्यवस्थाकें तीन प्रमुख भागमे बांटल जा सकैछ- (1) रैयतदारी (2) महलपारी एवं (3) जमींदारी। कृषि क्षेत्रक 52 प्रतिशत भागमे रैयतदारी, 40 प्रतिशत भागमे जमींदारी एवं शेष 8 प्रतिशतमे महलवारी ओ अन्य व्यवस्था छल। रैयतदारी व्यवस्थामे भूमि पर स्वामित्व राज्य सरकारक किन्तु व्यवहारमे प्रत्येक पंजीकृत व्यक्ति (रैयत) स्वामी होइत छल। ओ भूमि पर राज्य कें कर दैत छथि एवं हुनका ओहि भूमि स' बेदखल नहि कयल जा सकैछ। हुनका एहि जमीनकें बिक्री या हस्तान्तरित करबाक अधिकार छन्हि। महलकरीमे सरकार द्वारा वर्ष भरिक हेतु मालगुजारी निर्धारित कयल जाइत छल जकर भुगतान दायित्व समस्त गांवक भूमिक स्वामी कें देबय परैत छल। जे भूमि गाममे खाली होइत छल ओहि पर ग्राम समाजक अधिकार होइत छल। गामक लम्बरदार मालगुजारी एकत्र करैत छलाह जाहि पर हुनका कमीशन देल जाइत छल। जमींदारी प्रथामे जमींदार भूमिक स्वामी होइत छलाह एवं सरकार स' कृषकक कोनो संबंध नहि छल। जमीन पर जोतयवलाक कोनो अधिकार नहि रहैत छल। अधिक लगान देबयबलाकें जमीन जोतयक हेतु देल जाइत छल, जाहि स' कृषक अस्थिर रहैत छल। लगानमे वृद्धि, स्थायी अधिकार नहि होयबाक कारणें भूमिमे उन्नत खेतीक अभाव, शोषण, नजराना, बेगार एवं उपहारक मांग, सरकारक आयमे अस्थि-रता, मध्यस्थाक वृद्धि, जनसंख्या वृद्धि स' जमीनक उप-विभाजन द्वारा हिनक आयमे वृद्धि, समाजमे असमानता यथा जमींदार सम्पन्न होइत गेला ओ कृषक दरिद्र स' अधिक दरिद्र। विवाद एहन होइत छल जे कृषक बेदखल क' देल जाइत छलाह। एहि स' मोकदमाबाजीमे वृद्धि आदि एहि व्यवस्थाक मुख्य अवगुण छल।

भूमि सुधारक अर्थ छोट कृषक एवं कृषि श्रमिकक लाभार्थ भूमि स्वामित्वक पुन वितरण। दोसर भूमि सुधारक अर्थ कोनो संगठन या भूमि व्यवस्था के संस्थागत व्यवस्थामे प्रत्येक परिवर्तन स' अछि। एहिमे लगान कानून, उचित लगान निर्धारण एवं ओकर बोसूली, मध्यस्थक उन्मूलन, जोतक सुरक्षा, अधिकतम ओ न्यूनतम भूमि सीमा निर्धारण, सहकारी खेती, चकबन्दी आदि स' अछि। भूमि सुधारक मुख्य उद्देश्य उत्पादनमे वृद्धि स' छैक जे सहकारी खेती, चकबन्दी, गहन खेती आदि माध्यम स' संभव अछि। दोसर एकर उद्देश्य सामाजिक न्याय सेहो अछि जाहि स' भूमिहीन एवं वास्तविक काश्तकारकें भूमिक स्वामित्व भेटन्हि तथा आयमे समानता हो। तेसर ग्रामीण जन समूहकें राजनैतिक उद्देश्य स' विभिन्न विकास योजना स' अपना पक्षमे कयल जा सकय।

स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद सरकार भूमि सुधारक व्यवस्था पर ध्यान देलक। प्रथम योजनामे राज्य सरकार द्वारा भूमि सुधार योजनाक रुपरेखा बनयबाक ओ दोसर पंचवर्षीय योजनामे मध्यस्थ किरायेदारक समाप्ति, काश्तकारी व्यवस्थामे सुधार, भूमिक उच्चतम सीमाक निर्धारण, चकबन्दी आर कृषि व्यवस्थाक पुनर्गठन कयल गेल। तेसर, चारिम ओ पांचम पंचवर्षीय योजनामे भूमि सुधार कार्यक्रमकें तेजी स' लागू करबा पर जोर देल गेल। छठम योजना कालमे व्यवस्था कयल गेल जे (1) जाहि राज्यमे भूमिहीन कृषककें मालिकाना हक देबाक नियम नहि छल ओतय नियम बनायल जाय (2) अधिकतम जोत कानूनक अन्दर जोत जमीन स' बेसी जमीन सरकारक अधीन कयल जाय एवं ओहि अतिरिक्त जमीनकें अनुसूचित जाति ओ अनुसूचित जनजातिक बीच वितरणक व्यवस्था (3) भूमि संबंधी आंकड़ाक संकलन एवं अद्यतन करबाक कार्यक्रम (4) चकबन्दी कार्यक्रम (5) भूमिहीन श्रमिककें मकानक हेतु भूमिक व्यवस्था। सातम पंचवर्षीय योजनामे भूमि सुधार कार्यक्रम पर जोर देल गेल एवं एहि योजनाकालमे निर्धनता निवारण कार्यक्रम अपनयबाक व्यवस्था कयल गेल। एकरा समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम स' जोरल गेल। आठम पंचवर्षीय योजनामे सेहो भूमि सुधार पर जोर देल गेल।

भूमि सुधार सर्वप्रथम जमीन पर स' मध्यस्थ ओ जमींदारी व्यवस्थाक समाप्ति छल। बिहार राज्यमे 1947 मे जमींदारी व्यवस्था समाप्त करबाक प्रयास भेल। जमीदार द्वारा अड़चन उपस्थित कयल गेल। अन्तमे 1950 मे भूमि सुधार अधिनियम बनायल गेल एवं भारतीय संविधानक 31 म अनुच्छेदक संशोधन कयला पर सर्वोच्च न्यायालय एहि विधान कें वैधता देलक। पहिल चरणमे छोट जमीन्दार आ बादमे बड़का जमीन्दारक अंत जनवरी 1956 धरि जमींदारी उन्मूलन काजक कानूनी प्रक्रिया समाप्त भ' गेल। एहि स' भूमिक व्यवस्थामे सुधार भेल।

भूमि सुधार कार्यक्रमक अन्तर्गत भूमिक पुनर्गठन चकबन्दी, सहकारी खेती ओ भूदान द्वारा कयल गेल अछि। मिथिलांचलमे चकबन्दी ओ सहकारी खेती नहि भेल अछि। भूदान 18 अप्रैल 1951 मे तेलंगाना (आन्ध्र प्रदेश) मे शुरु भेल जकर प्रवर्तक

आचार्य विनोबा भावे छलाह। स्वेच्छा स' भूमिदान एहू अंचलमे भेल, मुदा भूमिहीन कृषकक बीच एखनो भूमिदानमे एकत्रित जमीन वितरित नहि भ' सकल अछि। राज्य सरकार एहि दिशामे कारगर प्रयास नहि कयलक।

भूमि सुधार कार्यक्रमक अन्तर्गत बहुतो अधिनियम बनायल गेल, मुदा एहि स' वांछित फल नहि भेटल। संयुक्त राष्ट्र संघक भूमि संबंधी रपटमे सेहो कहल गेल अछि जे भूमि सुधार कार्यक्रमक प्रगति मन्द रहल। प्रो. दान्तबालाक मत छन्हि जे भूमि सुधार अधिनियमक सही क्रियान्वयनक अभावमे परिणाम सन्तोषजनक नहि अछि। अपन प्रसिद्ध पुस्तक एसियन ड्रामामे प्रो. गुन्नार मिर्डल अपन मत प्रस्तुत कयलनि जे भूमि सुधार अधिनियम स' काश्तकारक बीच बेदखलक लहरि उत्पन्न भ' गेल छैक एवं तथाकथित खुदकाश्तक हेतु भूमि पुनर्ग्रहण कयल गेल। खुदकाश्तक भूमि पर बटाइदार ओ कृषि श्रमिक काज करैत छथि। जमीनक सीमा निर्धारण स' बचबाक हेतु अनियमित ओ अवैधानिक हस्तांतरण कयल गेल जाहि सं' नगण्य अतिरिक्त भूमि प्राप्त भ' सकल।

भूमि सुधार कार्यक्रमक सफलताक हेतु भूमिक संबंधमे नवीन रेकर्ड तैयार कयल जाय, पंचायत, जिला ओ राज्य स्तर पर कुशल प्रशासनिक व्यवस्था, गरीबक प्रति सही न्यायक हेतु भूमि सुधार अदालत, खेतिहर ओ बटाई जोतयवलाक संगठन, जाहि कृषक कें भूमि आवंटन हो हुनका वित्तीय सुविधा, भूमि सुधार अधिनियमक क्षेत्रीय भाषामे प्रचार, भूमि सुधारक निर्धारित कार्यक्रम एवं भूमि सुधार अधिनियम कें संविधानक नवम सूचीमे सम्मिलित कयल जाय। 23 अगस्त, 1984 कें लोकसभामे बिहारक 14 भूमि सुधार अधिनियमकें नवम सूचीमे शामिल कय लेल गेल छैक।

1960-61 मे गहन जिला विकासक कार्यक्रम या पैकेज प्रोग्राम किछु चुनल जिला स्तर पर चलायल गेल। मुदा एहि अंचल कें कोनो लाभ नहि भेलै। 1966-67 मे कृषि विकासक नव विधिक शुरुआत भेल। एकरा अन्तर्गत बेसी उपज दयबला बीआक उत्पादन ओ वितरण, कृषि साख एवं अन्य साधनक पूर्तिमे सुधार, कृषि क्षेत्र मे तकनीकी जानकारी, उपज कटाई, संग्रह, विक्रय आदिक समाधान एवं लघु कृषक कें कृषि यंत्र प्रदान करयवला संस्थाकें अधिक सुदृढ़ बनायब छल।

एहि स' खाद्यान्नक उत्पादनमे वृद्धि भेल। मुख्यतः गहूम ओ मकईमे 1966-67 मे कृषि क्षेत्रमे परिवर्तन कें हरित क्रान्ति कहल गेल। भारी उपजाउ बीजक उपयोग, उर्वरकक उपयोग पर जोर, आधुनिक उपकरण–ट्रैक्टर, डीजल इंजन, शक्ति चालित पम्प आदिक योगदान, कीटनाशक औषधिक उपयोग, सिंचाइक सुविधामे वृद्धि, कृषि पदार्थक उचित मूल्य निर्धारण, साख सुविधामे विस्तार, वर्षमे दू या दू स' बेसी फसलिक खेती एवं गहन कृषि जिला विकास कार्यक्रम आदि पर जोर देल गेल। मिथिलाचलमे एहि सभ तरहक उपाय नहि कयल गेल जाहि स' हरित क्रान्तिक क्रम मे एहि क्षेत्रमे नाममात्र सफलता भ' सकल। कृषिकें मात्र जीवन-यापनक साधन बूझल गेल अछि। व्यावसायिक रुप नहि देल जा सकल जेना देशक विकसित अन्य राज्य सभ मे भेल छैक।

स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद सहकारिताक क्षेत्रमे परिवर्तन भेल। साख समितिक अलावा गैरसाख समिति सेहो बनल। जेना-सहकारी गृह निर्माण समिति, सहकारी कृषि साख समिति, लिफ्ट इरिगेशन समिति, बहुधंधी सहकारी समिति। एखन सहकारिता आन्दोलनक मुख्य उद्देश्य किसानक जीवनक समस्त आवश्यकताक पूर्ति बूझल जाय लागल अछि। प्रारम्भिक कृषि साख समिति कृषि काजक हेतु साखक व्यवस्था करय लागल, किन्तु ई समिति कर्ज वोसूल करबामे असफल भ' गेल। नगर सहकारी बैंक सेहो बनायल गेल, जे अपन सदस्यक जमा लैत छल एवं सदस्यकें उधार दैत छल। गैर-कृषि समिति उपजाक बिक्री, भूमिक चकबन्दी, सहकारी कृषिक प्रचार, उत्तम खेतीक व्यवस्था, गृह-निर्माण तथा स्वास्थ्य एव समाज सेवा द्वारा कृषकक जीवनक अन्य पहलू कें विकास करय लागल, किन्तु एतय साख एवं विक्रयमे संयोजनक अभाव, सदस्यकें सहकारिता सिद्धान्त स' पूर्ण अवगत नहि कराओल गेल। ऋण भेटयमे विलम्ब, सूदक उंच दर, व्यवस्थाक गड़बड़ी, अनुचित चुनाव, सदस्यक बीच स्वार्थक प्रबलता, पूंजीक कमी, आपसी मतभेद आदिक कारण सहकारिता आन्दोलन विकसित नहि भ' सकल। एतय चकबन्दी सेहो नहि भेल अछि।

समेकित ग्रामीण विकास एवं ग्रामीण क्षेत्रक उन्नतिकें सुनिश्चित करबाक दृष्टि स' कृषि, लघु उद्योग, कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग, हस्त शिल्प एव अन्य ग्रामीण शिल्प एव ग्रामीण क्षेत्रमे अन्य सहयोगी क्रियाकलापक उन्नतिक हेतु उधार देबाक ओ ओहि स' संबंधित एवं अनुषांगिक विषयक हेतु 12 जुलाई 1982 के राष्ट्रीय कृषि एव ग्रामीण विकास बैंक (NABARD)क स्थापना कयल गेल। एकर पटनामे सेहो शाखा कार्यालय अछि। बैंक, कृषि सहकारी बैंक, एवं क्षेत्रीय ग्रामीण बैक (RRB) क माध्यम स' काज करैत अछि। ई लघु सिंचाइक काज विशेष कयलक अछि।

खाद्यान्नक राजकीय व्यापारक हेतु जनवरी 1965 मे भारतीय खद्य निगमक स्थापना कयल गेल, जे अन्नक खरीद, संग्रह, वितरण एवं बिक्री काज करैत अछि। बिहारमे एकर कार्यालय अछि एवं जगह-जगह पर गोदाम सेहो अछि। राज्य स्तर पर खाद्य निगम सेहो अछि जकर कार्यालय जिला स्तर पर अछि।

कृषि उपजके एकत्रित करब, ओकर श्रेणीकरण एवं प्रभावीकरण, बिक्रीक हेतु मंडी या बाजार धरि लय जायब तथा एकर बिक्री करब कृषि विपणनक मुख्य कार्य क्षेत्र भेल। एखन कृषि उपजक बिक्री गाममे, मेलामे, मंडीमे, सहकारी माध्यम, सरकारी खरीद ओ फुटकर विक्रेताक माध्यम स' होइछ। किन्तु मध्यस्थक अधिकता, मंडीक कुरीति, बाजार व्ययमे बाहुल्य, श्रेणीकरण ओ प्रमाणीकरणक अभाव, भंडार सुविधाक अभाव, परिवहनक अभाव, वित्तीय असुविधा, संगठनक अभाव, कृषकक रुढ़िवादी स्वभाव आदि कृषि विपणनमे बाधक अछि। सहकारी विपणन प्राथमिक सहकारी समिति, केन्द्रीय सहकारी समिति, प्रान्तीय सहकारी समिति एवं राष्ट्रीय सहकारी विपणन संगठन (NAFED) क माध्यम स' होइछ। एहि स' विपणन लागतक कमी, साहुकारक गांगुड़ स' छुटकारा, भंडारक सुविधा, उत्पादनमे वृद्धि आदि सुविधा स' कृषककें

आचार्य विनोबा भावे छलाह। स्वेच्छा स' भूमिदान एहू अंचलमे भेल, मुदा भूमिहीन कृषकक बीच एखनो भूमिदानमे एकत्रित जमीन वितरित नहि भ' सकल अछि। राज्य सरकार एहि दिशामे कारगर प्रयास नहि कयलक।

भूमि सुधार कार्यक्रमक अन्तर्गत बहुतो अधिनियम बनायल गेल, मुदा एहि स' वांछित फल नहि भेटल। संयुक्त राष्ट्र संघक भूमि संबंधी रपटमे सेहो कहल गेल अछि जे भूमि सुधार कार्यक्रमक प्रगति मन्द रहल। प्रो. दान्तबालाक मत छन्हि जे भूमि सुधार अधिनियमक सही क्रियान्वयनक अभावमे परिणाम सन्तोषजनक नहि अछि। अपन प्रसिद्ध पुस्तक एसियन ड्रामामे प्रो. गुन्नार मिर्डल अपन मत प्रस्तुत कयलनि जे भूमि सुधार अधिनियम स' काश्तकारक बीच बेदखलक लहरि उत्पन्न भ' गेल छैक एवं तथाकथित खुदकाश्तक हेतु भूमि पुनर्गहण कयल गेल। खुदकाश्तक भूमि पर बटाइदार ओ कृषि श्रमिक काज करैत छथि। जमीनक सीमा निर्धारण स' बचबाक हेतु अनियमित ओ अवैधानिक हस्तांतरण कयल गेल जाहि सं' नगण्य अतिरिक्त भूमि प्राप्त भ' सकल।

भूमि सुधार कार्यक्रमक सफलताक हेतु भूमिक संबंधमे नवीन रेकर्ड तैयार कयल जाय, पंचायत, जिला ओ राज्य स्तर पर कुशल प्रशासनिक व्यवस्था, गरीबक प्रति सही न्यायक हेतु भूमि सुधार अदालत, खेतिहर ओ बटाई जोतयवलाक संगठन, जाहि कृषक कें भूमि आवंटन हो हुनका वित्तीय सुविधा, भूमि सुधार अधिनियमक क्षेत्रीय भाषामे प्रचार, भूमि सुधारक निर्धारित कार्यक्रम एवं भूमि सुधार अधिनियम कें संविधानक नवम सूचीमे सम्मिलित कयल जाय। 23 अगस्त, 1984 कें लोकसभामे बिहारक 14 भूमि सुधार अधिनियमकें नवम सूचीमे शामिल कय लेल गेल छैक।

1960-61 मे गहन जिला विकासक कार्यक्रम या पैकेज प्रोग्राम किछु चुनल जिला स्तर पर चलायल गेल। मुदा एहि अंचल कें कोनो लाभ नहि भेलै। 1966-67 मे कृषि विकासक नव विधिक शुरुआत भेल। एकरा अन्तर्गत बेसी उपज दयबला बीआक उत्पादन ओ वितरण, कृषि साख एवं अन्य साधनक पूर्तिमे सुधार, कृषि क्षेत्र मे तकनीकी जानकारी, उपज कटाई, संग्रह, विक्रय आदिक समाधान एवं लघु कृषक कें कृषि यंत्र प्रदान करयवला संस्थाकें अधिक सुदृढ़ बनायब छल।

एहि स' खाद्यान्नक उत्पादनमे वृद्धि भेल। मुख्यत: गहूम ओ मकईमे 1966-67 मे कृषि क्षेत्रमे परिवर्तन कें हरित क्रान्ति कहल गेल। भारी उपजाउ बीजक उपयोग, उर्वरकक उपयोग पर जोर, आधुनिक उपकरण–ट्रैक्टर, डीजल इंजन, शक्ति चालित पम्प आदिक योगदान, कीटनाशक औषधिक उपयोग, सिंचाइक सुविधामे वृद्धि, कृषि पदार्थक उचित मूल्य निर्धारण, साख सुविधामे विस्तार, वर्षमे दू या दू स' बेसी फसलिक खेती एवं गहन कृषि जिला विकास कार्यक्रम आदि पर जोर देल गेल। मिथिलाचलमे एहि सभ तरहक उपाय नहि कयल गेल जाहि स' हरित क्रान्तिक क्रम मे एहि क्षेत्रमे नाममात्र सफलता भ' सकल। कृषिकें मात्र जोवन-यापनक साधन बूझल गेल अछि। व्यावसायिक रुप नहि देल जा सकल जेना देशक विकसित अन्य राज्य सभ मे भेल छैक।

स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद सहकारिताक क्षेत्रमे परिवर्तन भेल। साख समितिक अलावा गैरसाख समिति सेहो बनल। जेना-सहकारी गृह निर्माण समिति, सहकारी कृषि साख समिति, लिफ्ट इरिगेशन समिति, बहुधंधी सहकारी समिति। एखन सहकारिता आन्दोलनक मुख्य उद्देश्य किसानक जीवनक समस्त आवश्यकताक पूर्ति बूझल जाय लागल अछि। प्रारम्भिक कृषि साख समिति कृषि काजक हेतु साखक व्यवस्था करय लागल, किन्तु ई समिति कर्ज वोसूल करबामे असफल भ' गेल। नगर सहकारी बैंक सेहो बनायल गेल, जे अपन सदस्यक जमा लैत छल एवं सदस्यके उधार दैत छल। गैर-कृषि समिति उपजाक बिक्री, भूमिक चकबन्दी, सहकारी कृषिक प्रचार, उन्नत खेतीक व्यवस्था, गृह-निर्माण तथा स्वास्थ्य एवं समाज सेवा द्वारा कृषकक जीवनक अन्य पहलू कें विकास करय लागल, किन्तु एतय साख एवं विक्रयमे संयोजनक अभाव, सदस्यकें सहकारिता सिद्धान्त स' पूर्ण अवगत नहि कराओल गेल। ऋण भेटयमे विलम्ब, सूदक उंच दर, व्यवस्थाक गड़बड़ी, अनुचित चुनाव, सदस्यक बीच स्वार्थक प्रबलता, पूंजीक कमी, आपसी मतभेद आदिक कारण सहकारिता आन्दोलन विकसित नहि भ' सकल। एतय चकबन्दी सेहो नहि भेल अछि।

समेकित ग्रामीण विकास एवं ग्रामीण क्षेत्रक उन्नतिकें सुनिश्चित करबाक दृष्टि स' कृषि, लघु उद्योग, कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग, हस्त शिल्प एवं अन्य ग्रामीण शिल्प एवं ग्रामीण क्षेत्रमे अन्य सहयोगी क्रियाकलापक उन्नतिक हेतु उधार देबाक ओ ओहि स' संबंधित एवं अनुषांगिक विषयक हेतु 12 जुलाई 1982 के राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (NABARD)क स्थापना कयल गेल। एकर पटनामे सेहो शाखा कार्यालय अछि। बैंक, कृषि सहकारी बैंक, एवं क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (RRB) क माध्यम स' काज करैत अछि। ई लघु सिंचाइक काज विशेष कयलक अछि।

खाद्यान्नक राजकीय व्यापारक हेतु जनवरी 1965 मे भारतीय खाद्य निगमक स्थापना कयल गेल, जे अन्नक खरीद, संग्रह, वितरण एवं बिक्री काज करैत अछि। बिहारमे एकर कार्यालय अछि एवं जगह-जगह पर गोदाम सेहो अछि। राज्य स्तर पर खाद्य निगम सेहो अछि जकर कार्यालय जिला स्तर पर अछि।

कृषि उपजके एकत्रित करब, ओकर श्रेणीकरण एवं प्रभावीकरण, बिक्रीक हेतु मंडी या बाजार धरि लय जायब तथा एकर बिक्री करब कृषि विपणनक मुख्य कार्य क्षेत्र भेल। एखन कृषि उपजक बिक्री गाममे, मेलामे, मंडीमे, सहकारी माध्यम, सरकारी खरीद ओ फुटकर विक्रेताक माध्यम स' होइछ। किन्तु मध्यस्थक अधिकता, मंडीक कुरीति, बाजार व्ययमे बाहुल्य, श्रेणीकरण ओ प्रमाणीकरणक अभाव, भंडार सुविधाक अभाव, परिवहनक अभाव, वित्तीय असुविधा, संगठनक अभाव, कृषकक रुढ़िवादी स्वभाव आदि कृषि विपणनमे बाधक अछि। सहकारी विपणन प्राथमिक सहकारी समिति, केन्द्रीय सहकारी समिति, प्रान्तीय सहकारी समिति एवं राष्ट्रीय सहकारी विपणन संगठन (NAFED) क माध्यम स' होइछ। एहि स' विपणन लागतक कमी, साहुकारक चंगुड़ स' छुटकारा, भंडारक सुविधा, उत्पादनमे वृद्धि आदि सुविधा स' कृषककें

कृषि विकासक मार्गमे उत्साहित करैत अछि। कृषि मूल्यक स्थिरीकरणक दिशामे प्रयास कयल गेल अछि—कृषकके न्यूनतम मूल्यक गारण्टी, सरकार द्वारा प्रमुख खाद्य वस्तुक क्रयक हेतु मूल्य निर्धारण, उचित मूल्यक दोकान पर बिकयवला खाद्य पदार्थक बिक्री मूल्य निर्धारण एवं मूल्य के एक सीमामे रखबाक हेतु बफर स्टॉकक नीति अपनायल गेल। सरकारक राशन व्यवस्था, न्यूनतम समर्थित मूल्य नीति, सरकारी खरीद ओ बिक्री, बफर स्टाक, क्षेत्रीय प्रतिबंध नीति स' कृषि उपज मूल्य स्थिरीकरण एक सीमा धरि प्रभावकारी रहल। एकरा आओर प्रभावकारी बनायल जा सकैछ, जाहि स' कृषक, सरकार ओ उपभोक्ताके कम स' कम असुविधा हो। बिहार राज्य कृषि विपणन परिषद जगह-जगह पर बाजार समिति बनौलक अछि एवं एहि स' कृषकके विपणनमे सुविधा भेल अछि। जरुरत अछि एकरा आओर प्रभावकारी बनायल जाय।

निर्धन किसान, निर्धन राजा तथा निर्धन देश। प्रसिद्ध विद्वान क्वेसनेक कहल मिथिलांचलमे सत्य चरितार्थ होइछ। खेतिहर मजदूरक समुचित व्यवस्था पर ध्यान देने बिना कृषि विकासक कोनो योजना सफल कोना होयत। खेतिहर मजदूर तीन तरहक छथि। (1) खेतमे काज कयनिहार यथा हरवाह, कटनी करयबला एवं अन्य (2) कृषि संबंधी अन्य काज कयनिहार जाहिमे गाड़ीवान, घर छारयवला आदि (3) बढ़ई, लोहार, कुम्हार आदि। एतय खेतिहर मजदूरक समस्या बहुत कठिन अछि। हिनका सभकें अत्यल्प मजदूरी भेटैत छन्हि। 1950 मे अनुमान कयल गेल छल जे हिनक दैनिक मजदूरी 1 टाका 19 पैसा स' 1 टाका 31 पैसा छल। महिलाकें मात्र 60 पैसा स' 1 टाका धरि छल। हिनका मजदूरी अन्नमे या नकद देल जाइत अछि। हिनका लगातार काज नहि भेटैत छन्हि। बेकारी विशेष रहैत छैक। सरकार ओ समाज द्वारा एहि पर ध्यान नहि देल गेल छैक। न्यूनतम मजदूरीक निर्धारण, काजक अवधि निश्चित करब, दासत्व भावनाकें दूर करब, कुटीर ओ पूरक उद्योग धंधाक विकास, शिक्षा तथा स्वास्थ्य संबंधी सुधार, आवसक समुचित व्यवस्था, कर्जक बोझकें समाप्त करबाक प्रयास, संगठनक निर्माण एवं भूमिहीन मजदूर कें भूमि देबाक व्यवस्था कयला स' खेतिहर मजदूरक सर्वांगीण विकास संभव अछि। प्रथम पंचवर्षीय योजनामे पुनर्वासक व्यवस्था, दोसर योजनामे न्यूनतम मजदूरीक व्यवस्था एवं बंजरभूमिक उद्धार, तेसर योजनाकालमे कृषि एवं ग्रामीण विकास कार्यक्रमक माध्यम स' खेतिहार मजदूरक स्थितिमे सुधार जाहिमे अर्द्ध-बेरोजगारी दूर करब सेहो छल, चारिम योजनामे लघु किसान एजेंसी द्वारा छोट-छोट कृषक लेल लाभार्थ योजना, पांचम वास भूमि दिआ-एबाक प्रयास, छठम एवं सातम योजना कालमे समन्वित ग्रामीण विकास (IRDP) एवं आठम पंचवर्षीय योजनामे खेतिहर मजदूरक स्थिति सुधारवाक हेतु विशेष प्रयास कयल जा रहल अछि। की खेतिहर मजदूरक स्थितीमे सुधार, जे ग्रामीण अर्थव्यवस्थाक एक प्रमुख अंग छथि एवं जनिक उन्नति एवं समृद्धि पर समस्त ग्रामीण व्यवस्थाक उन्नति ओ समृद्धि आश्रित अछि, आठम योजना धरि सफल भ' सकल अछि?

■



उद्योगीकरण एवं आर्थिक विकास

उद्योगीकरण आजुक आर्थिक युगक आधार अछि। प्रत्येक देश उद्योगीकरणक दौड़ मे अगुएबाक प्रयास कय रहल अछि। आर्थिक विकासक मानक वैह आधार होइछ। उद्योगीकरणकें प्रोत्साहित करयमे कृषि-उत्पादनमे वृद्धि एकटा सुदृढ़ साधन मानल जाइछ। कृषि विकास एहि प्रक्रियाक पूरक थीक, प्रतिद्वन्द्वी नहि। एकक बिना दोसरक विकास नहि भ' सकैछ। औद्योगिक विकास कें प्रभावित ओ निर्धारित करयमे आर्थिक तत्व एवं गैर-आर्थिक तत्व महत्वपूर्ण अछि। आर्थिक तत्वमे प्राकृतिक साधन, पूंजी निर्माण, तकनोकी विकास ओ नव-प्रवर्तन, साहसी एवं प्रवर्तनीय क्षमता ओ मानव शक्ति मुख्य अछि। राजनीतिक, सामाजिक ओ धार्मिक तत्वक प्रभाव सेहो पड़ैछ। ऊर्जाक पर्याप्त पूर्ति, प्रशिक्षित कर्मचारीक पूर्ति, उपयुक्त मशीनरी एवं यंत्रक उपलब्धता, कच्चा मालक उपलब्धि, पूजीक पर्याप्ता, शहरीकरणक समस्या, अनुशासित श्रमिक शक्ति, उत्पादन लागतमे सामजस्य ओ मागक अभाव आदि उद्योगीकरणक मुख्य समस्या अछि। मिथिलांचलक तीव्र गति स' औद्योगिक विकासक हेतु सार्वजनिक क्षेत्रमे उद्योगक विकास, निजी क्षेत्रक उद्योग के पर्याप्त सुविधा, विदेशी पूंजीक प्रोत्साहन, पूंजी निर्माणमे कर-प्रणालीमे छूट ओ सरलीकरणक सुविधा द्वारा, शक्तिक साधनमे वृद्धि, आधुनिक मशीन ओ यंत्रक आयातक अनुमति, प्राकृतिक साधनक उचित विदोहन एवं कृषिक पूर्ण विकास अत्यावश्यक अछि।

प्राचीन कालमे ई भूभाग आर्थिक दृष्टि स' स्वाबलम्बी छल। प्रत्येक आवश्यक वस्तुक उत्पादन ओ निर्माण एतय होइत छल। समाजक खास-खास वर्ग उद्योग विशेष मे लागल छला। हुनका लोकनिक जीवन निर्वाहक वैह साधन छलन्हि। आर्थिक दृष्टि स' ई सब उद्योग गृह उद्योगक श्रेणीमे अबैत अछि। एहि अंचलक गृह उद्योग पूर्वमे पूर्ण विकसित छल, किन्तु विदेशी शासन कालमे एहि उद्योग के कोनो प्रकारक प्रोत्साहन ओ सुविधा नहि भेटलै। एहि श्रेणीमे मुख्य उद्योग छल—धातुक वर्तन गढ़ब- एहि वर्तन गढ़ब के बिदरीक वर्तन कहल जाइत छल। दस्ता ओ ताम के मिलाय बिदरी नामक मिश्रित धातु तैयार कयल जाइत छल। एहि मिश्रित धातुक हुक्का-स्टैन्ड, सुराही, सरपोस, पिकदानी प्रभृति वस्तु गढ़ल जाइत छल जे बेस कीमती होइत छल। एहि वस्तु पर उत्तम कोटिक कलापूर्ण काज कयल रहैत छलै। जकरा गरखो कहल जाइत छल। जाहि पर साधारण काज कयल रहैत छल ओकरा करना कहल जाइत छल। कसेरा जातिक ई मुख्य धधा छल। उनैसम शताब्दीमे ई उन्नत अवस्थामे छल तथा बीसम शताब्दीक मध्यमे ई समाप्तप्राय भ' गेल। अन्तमे पूर्णिया लग बेलौरी ओ कटिहारक कसेरो मात्र एहि धधामे लागाल छलाह।

बिदरीक अलावा गृह उपयोगी धातुक वर्तन कसेरी लोकनि गढ़ैत छलाह। अष्ट-धातु, सोना, चांदी, कांसा, फूल ओ बेल धातुक सामान बनैत छल। सैनिक सामान–फरसा, गंडास, भाला, कत्ता, कृषि यंत्र–हर-फार, खुरपी, हांसू, भनसा घरक सामान–अढ़िया, करछुल, छोलनी, डेकची, लोहिया आदि, पूजाक सामान–अर्घा, पंचपात्र, सराई, कमंडल आदि, सोना-चांदीक गहना एवं जीवनोपयोगी सब सामान बनैत छल एवं एकर विकसित बाजार छल। किसनगंज ओ अररिया जिलाक कांसक बासन ओ झंझारपुरक पित्तरि ओ कांसक वर्तन नामी छल।

नाव उद्योग : नदी बहुल भूभाग रहबाक कारणें लकड़ीक नाव बनायल जाइत छल। एहि स' आवागमनक सुविधा एवं व्यापारी लोकनिके एक भाग स' दोसर भागमे माल लय जयबाक सुविधा छलन्हि। एहि नावमे आकर्षक सिंह, बाघ, घोड़ा, सांप, माछ आदिक कलाकृति रहैत छल।

वस्त्र उद्योग : वस्त्र बुनब एतयक मुख्य गृह उद्योग छल। टकुरी ओ चर्खा स' सूत काटल जाइत छल। हाथक काटल सूत स' जोलहा लोकनि कपड़ा बनबैत छलाह। रेशमी, मलमल ओ मटिया–रेशमी वस्त्रक प्रधान केन्द्र छल पूर्णिया जिला। एतय स' पश्चिमो सारण, मुर्शिदाबाद ओ कलकत्ता निर्यात होइत छल। मलमल वस्त्र उद्योग मुख्यत: मधुबनी जिलामे छल। जकर बुनाई मुख्यत: भौरा, कपसिया ओ पंडौलमे होइत छल। कोकटी मलमल नेपाल निर्यात होइत छल। मटिया मोट वस्त्रक काज दरभंगा, मुजफ्फरपुर, चम्पारण ओ पूर्णिया जिलामे होइत छल। पूर्णिया जिलामे नेवारगर सब नेवार बुनैत छलाह। किन्तु, विदेशी ओ मिल वस्त्रक स्पर्द्धाक संग सरकारक नीति स्थानीय वस्त्र उद्योगक अवनतिक कारण बनल। बादमे स्वदेशी आन्दोलन स' एहि उद्योगकें प्रोत्साहन भेटलै। चरखा ओ टकुरी स' सूत बनय लागल। खादी केन्द्रक स्थापना भेल, किन्तु पुन: ई अंचल स्वावलम्बी नहि भ' सकल । बांगक खेती कें प्रोत्साहन नहि भेटल।

सतरंजी ओ कम्बल बुनब : चम्पारण जिलाक मेहसी ओ गोविन्दगंज तथा मुजफ्फरपुर जिलाक सुरसंडमे सतरंजी बुनल जाइत छल। गड़ेरी लोकनि द्वारा चम्पारण, दरभंगा, मधुबनी, कटिहार, मुजफ्फरपुरक पारो थानामे कम्बल बुनल जाइत छल।

रंग ओ सिन्दुर बनाएब : कुसुम, सिंगरहार, तूनक फूल, नीलक पात, तैरीक फल ओ काठ, कत्थ, हरदि, करंजक फल, आमक छाल, रंगभालीक बीया, पलासक फूल, मनजिस्ता, सिन्दूर, जंगर, सज्जी भांटि ओ कसीसक रंग बनायल जाइत छल एवं मुख्य रंगक नाम छल–ककरेज (गाढ़ भूरा या खैरा रंग), भूरा, वैगनी, बैगनी धवैत खैरा रंग, रक्तसन लाल, तरंजी, आसमानी, नील, फीका नील आदि। लाही रंग सेहो बनैत छल। बेल्जियम स' बादमे रंगक आयात भेला पर सदीक प्रारम्भमे ई उद्योग लुप्तप्राय भ' गेल। पूर्णियामे प्रचुर मात्रामे सिन्दुर बनैत छल।

पाटक बोरा बनाएब : किसनगंज जिलाक कय, धीम, पालिया तथा राजवंशी जातिक महिलागण बोरा बुनैत छली। व्यापारी लोकनि हिनका स' कीनैत छलाह एवं किसनगंज ओ महानन्दाक तट पर स्थित कुटी, रुपदहा एवं दुलालगंज बाजारमे बिक्रीक हेतु अनैत छलाह। मुख्यत: ई कलकत्ता, पटना, रंगपुर ओ पूर्वी बंगाल जाइत छल।

कागज बनायब : किसनगंज जिलाक मुसलमानक एक वर्ग देसी कागज बनबैत छलाह जे 'कगजिया' नाम स' प्रख्यात छलाह। कागज पाटक बनैत छल। पाटक गुहा बनाय चूनमे भिजाय पुन: साफ कय भांडक उपयोग कय कागज बनायल जाइत छल। उनैसम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे ई उद्योग खतम भ' गेल।

बांसक बासन ओ मोथी आदिक पटिया बुनब : बासक अनेक उपयोगी बासन यथा ढ़ाकी, पथिया, सूप, चालनि, कोनियां, चंगेरा, पनपथिया, डाला, पौती, गुरचला, बियनि आदि डोम जाति द्वारा बनायल जाइत छल जे हिनका लोकनिक जीवन-यापनक मुख्य साधन छल। तहिना गोंढ़ि जातिक लोग बांसक सरकी, सरैला, पही, टहुकी, टापि, गांज आदि बनबैत छलाह जाहि स' माछ मारल जाइत छल। मोथा पटेड आदि स' पटिया तथा शीतलपाटी बुनल जाइत छल।

सोना, चांदीक गहना : मिथिलांचलमे सोना, चादी द्वारा विभिन्न प्रकारक गहना गढ़ल जाइत छल। एतय गहना सम्पतिक शृंगार ओ विपत्तिक आहार बुझल जाइत अछि। सोनारक धंधा अवनति पर अछि।

मांटिक बासन ओ मूर्ति गढ़ब : कुम्हार लोकनि मांटिक वासन—तौला, कड़ाही, घैल, डाबा, मटका, सरबा, ढ़ाकन, मटकुरी, चुकरी, टुइआं आदि विभिन्न प्रकारक घरेलू सामान बनबैत छथि। मांटिक मूर्ति, खेलौना आदि सेहो बनायल जाइत छल। भगवानक मूर्ति एखनो बनायल जाइछ। ईटा ओ खपड़ा एखनो बनायल जाइछ एवं एहि अंचलक आवश्यकताक पूर्ति करैछ। दोसर पंचवर्षीय योजना कालमे सकरी(दरभंगा) मे खपड़ाक कारखाना सरकार बनौलक। एकरो स्थिति ठीक नहि अछि।

लहठी ओ चूड़ी बनायब : ई लहेरी लोकनिक मुख्य धंध छल। लहेरियागंज ओ नरहनक लहठी नामी छल। धमदाहामे अपरिष्कृत सोडा स' चूड़ी बनैत छल। बादमे बाहर स' कांच ओ रबर आबय लागल, जाहि स' एहि उद्योगक अवनति भ' गेल।

चामक जूता : मरल माल-जालक खाल स' चमरउ जूता, ढ़ोल-मृदगके मढ़क हेतु चाम ओ तांति बनैत छल। मुख्यत: चमार लोकनि एहि धंधामे छलाह। किछु मुसलमान ओ कुरल जातिक लोक सेहो एहि स' जुड़ल छलाह।

तेल पेड़ब : कोल्हुक सहायता स' सरिसो, तीसी, अंडी, तील ओ महुके पेड़ कय तेल निकालल जाइत छल। तेली जातिक आयक मुख्य यैह साधन छल, किन्तु तेल मिलक स्थापना भेला स' एहि उद्योगक अवनति होमय लागल।

नीलक उत्पादन : एहिठामक गृह उद्योगमे नीलक उत्पादन अति प्राचीनकाल स' भ' रहल छल। अंग्रेजक आगमनक बाद एहि उद्योग कें प्रोत्साहन भेटलै। 1850 मे दरभंगा ओ मुजफ्फरपुर जिलामे 6 टा नीलक कारखाना छल। पूर्णिया, चम्पारण, उत्तरी भागलपुर ओ बेगुसरायमे अनेक नीलक कारखाना छल। कलकत्ताक बन्दरगाह स' नीलक निर्यात होइत छल। कृत्रिम रंगक प्रचार भेला पर एहि उद्योगक अवनति होमय लागल। बीसम शताब्दीक दोसर दशकमे एहिठामक ई उद्योग पूर्णतया नष्ट भ' गेल।

शोरा ओ नोन उद्योग : नोनी ओ शोरा मिश्रित माटि एतय अधिक मात्रामे पाओल जाइत छल, जाहि स' शोरा ओ नोन बनायल जाइत छल। नोनिया ओ बेलदार जातिक लोक एहि उद्योगमे सलग्न छलाह। अंग्रेजक आगमनक बाद एहि उद्योग कें प्रोत्साहन भेटलै। शोराक परिशोधनक कारखाना बनल। चम्पारण, मुजफ्फरपुर ओ दरभंगा जिलामे 6560 शोराक फैक्टरी छल जाहि मे 22525 फिल्टर अर्थात् चुल्हा छल। परिशोधन फैक्टरीक संख्या 305 छल। सम्प्रति नोन ओ शोराक उत्पादन एतय नहि होइत अछि।

काठक वस्तु बनाएब : कमार लोकनि लकड़ीक विभिन्न प्रकारक सामन यथा-चौकी, खाट, पलंग, आलमारी, कुर्सी, टेबुल, उखैरि, समाठ, ढेकी, तामा, पैली, खराम, टकुरो, चर्खा, खड़खड़िया, गाड़ीक पहिया, पालकी, महफा आदि जीवनोपयोगी सामान बनबैत छलाह। ई उद्योग एहि अंचलमे विकेन्द्रित छल। एखनो ई उद्योग विलुप्त नहि भल अछि।

सलाइ उद्योग : कटिहार, बीरगंज ओ विराटनगरमे सलाइक कारखाना अछि। दरभंगाक सलाई फैक्टरी बन्द अछि।

चाउर, दालि ओ तेल मिल : चाउर, दालि ओ तेल मिल समस्त मिथिलांचलमे पसरल छल। एखनो निर्मली, घोघरडीहा ओ जयनगरमे अछि। आधुनिक आटा मिल दरभंगा ओ कटिहारमे अछि।

गुड़-खान्डसारी उद्योग : गुड़ ओ खान्डसारी चीनी एतय प्राचीन काल स' चलि रहल अछि। कुसियारक उपज बढ़ियां होइत अछि। सम्प्रति चीनी मिल मुख्यतः बन्द अछि। लोक कुसियार कल्हुबला कें दय दैत छथि। भेली गुड़ एवं खान्डसारी चीनी आब नहि बनैत अछि। उपरोक्त विवरण स' स्पष्ट होइत अछि जे प्राचीन मिथिलाक लोक अपना ओतय जीवनोपयोगी सब सामान बनबैत छल एवं सब तरहें खुशी छल।

संगठित उद्योग

मिथिलांचल औद्योगिक दृष्टि स' एकटा पछुआएल भूभाग अछि। आधारभूत उद्योग जाहिमे लोहा एवं इस्पात, खान, मैकेनीकल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग एवं रसायन उद्योग अबैत अछि तकर सर्वथा एतय आभाव अछि। स्वतंत्रता प्राप्तिक पूर्व आधारभूत संरचनाक अभाव भारतवर्षमे सेहो छल मुदा गत 50 वर्षमे एहि तरहक उद्योग कें विकसित कयल गेल अछि। उपभोक्ता माल उद्योगक विकास सेहो भेल अछि।

चीनी उद्योग

एतय कुसियर द्वारा' तीन प्रकार स' चीनी तैयार कयल जाइछ। (1) आधुनिक ढंगक मिल द्वारा (2) खांडसारी चीनी ओ (3) गुड़। मिथिलांचलमे चीनी उद्योग [illegible] व्यापारी द्वारा प्रोत्साहित कयल गेल। उनैसम शताब्दीक पूर्वार्द्ध धरि ई उद्योग एतय उन्नति पर छल। 1850 मे नीलक मूल्यमे वृद्धि भेला स' नील उद्योग आकर्षक भ' गेल। 1904-05 मे इंडिया डेवलपमेन्ट कम्पनी चीनी उद्योगमे अत्यधिक सफलता प्राप्त कयलक। एकर सफलता स' एहि उद्योग कें प्रेरणा भेटलै आ सम्प्रति 17 गोट चीनी मिल एतय कार्यरत अछि। चीनी मिल पूर्वी ओ पश्चिम चम्पारणमे 9, मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ीमे 3 ओ दरभंगा, समस्तीपुर एवं मधुबनीमे 5 अछि। एकर अतिरिक्त सहकारी क्षेत्रमे पूर्णिया (बनमनखी) मे एक मिल अछि जे अत्याधुनिक अछि।

मुख्यतः चीनी उद्योगक विकास एतय 1932 स' प्रारम्भ होइछ। सर्वप्रथम एहि उद्योग कें तखनहि संरक्षण देल गेल छल। चीनीक उत्पादन दिनोदिन बढ़य लागल। 1960-61 मे चीनीक उत्पादन अत्यधिक मात्रामे भेल। तृतीय पंचवर्षीय योजनामे चीनीक उत्पादन अनुमान स' बेसी भेल। एहि योजना कालमे भारतमे चीनी मिल यंत्र एवं उपकरण निर्माणमे आत्मनिर्भर भ' गेल। चीनीक निर्यातमे सेहो वृद्धि भेल। एहि भूभागमे एहि उद्योगक विकासमे निम्नांकित असौकर्य उपस्थित अछि।

सुलभ-सस्त दर पर पटौनीक व्यवस्था, कुसियारक नव-नव भेद ओ प्रभेद प्रारम्भ करब, कुसियारक विकासमे अत्यधिक मात्रामे उपकरणक प्रयोग, कुसियारक खेत स' मिल धरि यातायात (सड़क, रेल, टाली आदि) सुविधा जाहि स' यातायात खर्च कम हो एवं सुखाओन सेहो नहि जाय, कुसियार उपजाबयवला कृषक कें उत्पादन वृद्धि एवं उत्तम कोटिक कुसियारक उत्पादनक हेतु प्रोत्साहन, उप उत्पादक सुन्दर उपयोग, यंत्र एवं उपकरणक प्रतिस्थापनमे आर्थिक असुविधा। एतयक चीनी मिलक संग डिस्टीलरी मिलक संयोग सेहो नहि अछि।

मिथिलांचलक चीनी मिल सभ अत्यन्त पुरान भ' गेल अछि। सतरहटा मिलक यंत्र ओ उपकरण पुरान भ' गेल छैक। एहि यंत्र सबहक जीवन मात्र 25 वर्ष आकल गेल छैक। एतयक सब मिलक जीवन एहि स' बहुतो बेसी भ' गेल छैक। एकर प्रतिस्थापन ओ आधुनिकीकरण नहि भ' सकल अछि। चीनी मिल आर्थिक संकटमे अछि। राष्ट्रीयकरण ओ भूमिक हदबन्दी भ' गेला स' उद्योगपति सभ पूंजी विनियोग नहि करय चाहि रहल छथि। चीनीक उत्पादन, मूल्य ओ वितरण पर सरकारी नियंत्रण अछि। सरकार चीनी स्टॉकक नियंत्रण, भंडारण, वस्तु क्रय, पैकिंग, ग्रेडिंग, नाप-तौल आदि पर नियंत्रण रखने अछि। उप उत्पादक निर्वतन मोलैसेस कन्ट्रोल आर्डर 1961 क अन्तर्गत करैछ।

1937 मे सुगर फैक्टरी ऐक्ट कुसियार उत्पादक सहयोग समितिक स्थापना पर जोर देलक। 1961-62 मे 423 कुसियार उत्पादक समिति (केन ग्रोवर्स सोसाइटी) 18992 सदस्यवला लहेरियासराय अंचलमे छल। समस्तीपुरमे 350 समिति जकर सदस्य संख्या 12462 छल ओ मधुबनी क्षेत्रमे 568 समिति जकर सदस्य संख्या 22176 छल। सदस्य लोकनि के ऋणक सुविधा एवं कुसियारक बिक्रीक पुरजी भेटयमे सुविधा होइत छलनि।

एखन चीनी उद्योगक समक्ष किछु समस्या अछि : (1) चीनी मिल कें पर्याप्त मात्रा मे कुसियार उपलब्ध नहि होइछ। उत्पादन घटैत-बढ़ैत रहैत अछि ओ गुड़ एवं खाडसारी उद्योग द्वारा बेसी कुसियार कीन लेल जाइत अछि (2) उप उत्पादक सही उपयोग नहि भ' पाबि रहल छैक। कुसियारक सिट्ठी, छोआ एवं कुसियारक रसक, जे जमल रहैछ, लाभदायक उपयोग। (3) कुसियार ओ चीनीक मूल्य पर वैधानिक अड़चन (4) कर, टैक्सक समस्या (5) मिलक उत्पादन क्षमताक पूर्ण उपयोग नहि होइछ (6) उत्पादन लागत बहुत अछि (7) आधुनिकीकरण ओ अभिनवीकरण एहिठाम एकदम नहि भेल छैक (8) रुग्ण मिलक समस्याक समाधान (9) आन्तरिक उपयोग बढ़ि जेबाक कारण घटैत निर्यात। किन्तु एहि उद्योगक दशा सुधारल जा सकैछ जाहि हेतु (1) मिलकें उचित मूल्य पर कुसियारक आपूर्ति (2) कुसियारक किस्म एवं उत्पादकतामे सुधार (3) उपोत्पादक उचित उपयोग (4) उत्पादन शुल्कमे कमी (5) मिलक उत्पादन क्षमताके आर्थिक दृष्टि स' वृद्धि (6) रुग्ण मिलकें वित्तीय सुविधाक उपलब्धता आवश्यक अछि।

चीनी उद्योगक समस्याक अध्ययन भारत सरकार एक समिति बनाकय कयने छल जे राष्ट्रीय चीनी प्राधिकारक सृजनक प्रस्ताव रखलक, जकर मुख्य उद्देश्य देशक अन्दर चीनीक उपयोग तथा चीनीक निर्यातक पता लगायब तथा उत्पादन ओ बिक्रीक पूर्ण व्यवस्था करब निर्धारित भेल। योजनाक अनुसार प्रत्येक वर्ष सरकार कृषि मूल्य निगमक परामर्श पर चीनी उद्योगक हेतु कुसियारक मूल्य निश्चित करब छल। मूल्य निर्धारणमे विभिन्न क्षेत्रक आवश्यकतानुसार परिवर्तन कयल जा सकैछ। अखिल भारतीय चीनी मिल मालिक संघ प्रतिवाद कयलक त' 1998 मे कुसियारक मूल्यमे 16 प्रतिशत वृद्धि भेल मुदा चीनी मूल्यमे मात्र 5.5 प्रतिशित वृद्धि भेलै। एकर अतिरिक्त बिहार सरकार बाजार शुल्क कुसियार, चीनी ओ छोआ पर एवं क्रय-कर कुसियार पर लैत अछि।

1974-75 मे कम्पनी अधिनियमक अन्तर्गत बिहार सरकार बिहार स्टेट सुगर कारपोरेसन लिमिटेडक स्थापना चीनी उद्योगक बहुमुखी विकासक लेल कयलक। एहिमे राज्यक 15 चीनी मिलकें अपना अधीन कयलक। ई मिल सब रैयाम, लोहट, सकरी, समस्तीपुर, गोरौल, बनमखी, लौरिया , मोतीपुर, गुरारू, एवं सुगौलीमे कार्यरत छल और बाकी मिल सिवान ओ मध्य बिहार मे अवस्थित अछि। एकर एक उद्देश्य इहो छल जे रुग्ण मिलक समस्याक समाधान एवं आधुनिकीकरण कयल जाय। मुदा, निगम एहि उद्देश्यक विपरीते काज कयलक। कुसियारक मूल्य समय पर कृषकके नहि देल गेल। कुसियारक उत्पादनमे किसानकें कोनो तरहक प्रोत्साहन नहि भेटल। समय पर खेत स' कुसियार मिल पठैबाक व्यवस्था ठीक नहि छल। दिनानुदिन मिल घाटा उठबैत रहल एवं एक वर्षमे 25 करोड़ टाकाक घाटा होमय लागल। सितम्बर 1990 मे बिहार सरकार निर्णय लेलक जे निगमक अधीनस्थ 15 कम्पनीकें बेच देल जाय या लीज पर द' देल जाय। आरपीजी ग्रुप, मोदी ओ लखनऊक सहारा इंडिया स' वार्ता भेल। आरपीजी ग्रुप सब मिलकें लयबाक बात कयलक। मुदा, अन्तिम बात कतय जा कय रुकि गेल से प्रकाशमे नहि आयल। राज्यमे 6 चीनी मिलक स्थापनाक सेहो प्रस्ताव आयल किन्तु सब खटाइमे चलि गेल। भारत सरकार फरबरी 1994 मे लाइसेन्स प्रक्रियामे ढील देबाक प्रस्ताव कें स्वीकृत कयलक तथापि एहि अचलक चीनी मिल कें कोनो उपकार नहि भेलै।

पटना उच्च न्यायालय दिसम्बर 1998 मे बिहार स्टेट सुगर कारपोरेसनक प्रति कड़ा रुख कयलक। निगम अर्थक मांग राज्य सरकार स'कयलक। सरकार 21.89 करोड़ टाका मार्च-अप्रैलमे निगम कें 10 लाख कुसियार उत्पादक कें देबाक हेतु आवटन कयलक, मुदा निगम एहि स' 9 करोड़ टाका भविष्य निधि मे जमा कय देलक। कृषक कें टाका नहि भेटि सकल। कर्मचारी लोकनिक मांग 75 करोड़ टाका छन्हि, वेतन नहि भेटल छन्हि। न्यायालयक आदेश छल जे हिनका लोकनि कें कम्पनीक सम्पति बेच कय वेतन दय देल जाय एवं निगम कें बन्द कय देल जाय। राज्य सरकार एहि आदेशक अवमानना कय चुकल अछि। 1998 मे राज्यक 29 चीनी मिल मे 19 रुग्ण भ' चुकल छैक ओ बाद बाकी 10 क स्थिति जर्जर भ' गेल छैक।

निजी क्षेत्रक मिल–हरिनगर, नरकटियागंज, मझौलिया, रीगा, मोतिहारी एवं हसनपुर-कम स' कम 2000 मे० टन प्रतिदिन पेराई क्षमता पार कय गेल अछि। हरिनगर 5000 मे० टन क्षमता पेराईक प्रस्ताव राज्य सरकार लग कयने अछि।

सरकारी क्षेत्रक लौरिया, सुगौली एवं मोतीपुर मिलक आधुनिकीकरण एव विकासक कार्रवाई चलि रहल छल। एहि स' कुसियारक पेराईमे सुधार हयत तथा पूर्ण पेराई क्षमताक उपयोग संभव भ' सकत।

इन्डियन इन्स्टीच्यूट ऑफ सुगरकेन रिसर्च फरबरी 1994 मे गुड़ ओ खांडसारी चीनीक पक्षमे अपन वकालत कयने अछि। एकर मतें 40-45 प्रतिशत कुसियार स' गुड ओ खांडसारी बनायल जाइछ एवं 42 प्रतिशत देशक चीनीक काज करैत अछि।स्वास्थ्यक दृष्टि स' गुड़क उपयोग लाभप्रद अछि। मात्र गुड़क रखरखाव आधुनिक पद्धति स' करबाक व्यवस्था होयबाक चाही। गुड़क विकास स' ग्रामीण विकासक मार्गमे अत्यधिक सहायता भेटत। कुसियार स' गुड़मे सेहो 10 प्रतिशत चीनी उपलब्ध होइछ जे खांडसारीमे मात्र 8.5 प्रतिशत अछि। समान आर्थिक विनियोग स' चीनीक तुलनामे गुड़ 10 गुना नोकरी सृजन करबाक क्षमता रखैत अछि। गुड़क निर्यात ब्रिटेन, अमे-

रिका, कनाडा, ईरान, मिस्र, अरब गणराज्य, सउदी अरबिया, चिली, कुबैत, आमान, सिंगापुर, जर्मनी, मलेशिया, आदि देशके कयल जाइत अछि। एहि उद्योग के विकसित कयला स' विदेशी आयमे वृद्धि होयत। खजुरक गुड़कें सेहो विकसित कयल जा सकैछ।

जूट उद्योग

मिथिलाचलक जूट उद्योगक भविष्य उज्ज्वल अछि। एतय जूटकें 'सोनाक रेशा' नाम स' जानल जाइछ। विदेशी मुद्रा अर्जित करबामे एहि उद्योगक एक मुख्य स्थान अछि। सम्प्रति एहि उद्योगक समक्ष किछु समस्या उपस्थित भ' गेल अछि। जे निम्नांकित अछि :-

(1) कच्चा जूटक अभाव : देशक विभाजनक बाद करीब 80 प्रतिशत जूट उत्पादक क्षेत्र बंगलादेशमे चलि गेल। जूटक उत्पादनमे वृद्धि भेल अछि किन्तु एकर मूल्यकें एक न्यूनतम स्तर पर कायम रखबाक प्रयास अपेक्षित अछि। जूटक किस्म पर ध्यान, रासायनिक खादक उपयोग, बंजर भूमिक उद्धार; धान ओ जूटक सम्मिलित खेती तथा सहरसा, पूर्णियाक अलावा अन्य क्षेत्रमें एकर सघन खेतीक प्रयास परमावश्यक छैक। **(2) यंत्र एवं उपकरणक अधुनिकीकरण समस्या** : एहि उद्योगमे लागल अधिकांश मशीनक जीर्णोद्धार अत्यन्त अनिवार्य अछि। एहि स' उत्पादन लागत कम होयत। **(3) व्यवसायमे सट्टेबाजीक अधिकता** : एहि उद्योगमे सट्टेबाजीक प्रचलन बड़ु पैघ घातक अछि। एहि पर सरकारी प्रतिबंध अपेक्षित अछि। **(4) अत्यधिक मूल्य एवं स्थानापन्न वस्तुक समस्या** : जूटक मूल्य अधिक रहबाक कारण स्थानापन्न वस्तुक प्रयोग। वेस्टइंडीज, फिलिपाइन्स ओ ब्राजिलमे अन्य पौधा स' जूटक समान वस्तुक तैयारी। अमेरिकामे जूटक जगह कागज ओ पोलीथिनक प्रयोग होइत अछि। **(5) किस्ममे सुधार तथा जूटक नव उपयोगक खोज** : एतय जूटक किस्म घटिया अछि। एहिमे सुधार आवश्यक। जूटक नव-नव उपयोगक खोज अनिवार्य। एहिमे जूट एसोसिएशन प्रशंसनीय काज कयने अछि। **(6) शक्तिक अभाव** : एहि अंचलक सब उद्योगमे ई व्याप्त अछि। 1953 मे भारत सरकार जूट उद्योग एवं कच्चा जूटक उत्पादनक संबंधमे जूट जांच समिति नियुक्ति कयलक। ई समिति मइ 1954 मे अपन सिफारिश सरकारकके प्रस्तुत कयलक। दिसम्बर 1954 मे एहि समितिक किछु सिफारिश के स्वीकृत कय लेलक। 1969 मे सरकार जूट टेक्सटाइल सलाहकार परिषदक स्थापना कयलक, जकर मुख्य काज छल उत्पादन, विविधीकरण, आधुनिकीकरण, निर्यात आदि समस्याक संबंधमे सलाह करब। फरबरी 1971 मे भारतीय जूट निगमक स्थापना एहि उद्देश्य स' कयल गेल जे निर्धारित मूल्य पर जूट कें ओहि समयमे कीनल जाय जखन दाम खसयक स्थितिमे हो एवं ओहि समय बिक्री करय जखन मूल्य बढ़यक स्थितिमे हो। कच्चा जूटक मूल्यमे स्थायित्व आनबाक दिशामे प्रयास भेल। 1965 मे किस्म नियंत्रण अधिनियम निर्यात अधिनियमक नाम स' पारित कयल गेल। एहि स' निर्यात होबयवला वस्तुक किस्म नियंत्रित भ' गेल। भारतीय जूट मिल्स

एसोसिएशन द्वारा, जकर शाखा कार्यालय इंगलैंड ओ अमेरिकामे अछि, विभिन्न देशमे निर्यातक संभावनाक अन्वेषण करैत अछि। एकर अतिरिक्त एसोसिएशन कलकत्तामे शोध केन्द्र रखने अछि जतय जूटक बीआ के सुरक्षित राखब, वैज्ञानिक बुआई, लम्बा रेशा उत्पादन आदिक संबंधमे शोध कयल जाइछ। 1984 स' ढाकामे अन्तर्राष्ट्रीय जूट संगठन कार्यरत अछि। जूट विकास परिषद्‌क काज जूटक वस्तु पर उत्पादन पर लागला स' आयक अनुसन्धान ओ विकास कर व्यय करबाक छैक। 1992 मे संयुक्त राष्ट्र संघ (UNDP) भारतक वस्त्र मंत्रालयक सहयोग स' एतयक संकटग्रस्त जूट उद्योग के नव दिशामे काज करबाक योजना देलक एव दरी, कम्बल, बेड कवर, सजावटी सामान, एवं अन्य दैनिक उपयोगी सामान बनयबाक हेतु उत्साहित कयलक।

उनैसम शताब्दीक अन्तधरि किसनगंज जिलामे हाथ स' बोरा बुनल जाइत छल। बादमे कटिहारमे कटिहार जूट मिल्स लिमिटेड एवं आर. बी. एच. मिल ओ समस्तीपुरमे रामेश्वर जूट मिल्स कम्पनी लिमिटेड बनल। नेपाल तराइ मे 2 जूट मिल विराटनगरमे अछि। ई मिल सब फारबिसगंज, अररिया, कटिहार, गुलाबबाग, किसनगंज, मधेपुरा, सहरसा, झंझारपुर, निर्मली आदि स्थान स' कच्चा जूट खरीदैत अछि। एहि मिल सबमे 1100 लूम कार्यरत अछि ओ उत्पादन 23 टन स' ऊपर होइत अछि। एकर आलावा 28 छोट-छोट कारखाना मात्र पूर्णियामे अछि जतय 650 श्रमिक कार्यरत छथि। रामेश्वर जूट मिल बिरला बन्धु द्वारा संचालित अछि। 1962 मे मिलक नवीकरण कयला स' उत्पादन 900 टन प्रतिमाह भ' गेल छैक। कटिहारक दुनू मिल मृतप्राय अछि। एतयक मिल कच्चा जूटक मात्र 20 प्रतिशत अपना मिलमे खपत करैछ जखन कि एतय उत्पादन 1.50 लाख टन स' बेसी होइछ। बाद बाकी पश्चिम बंगालक मिल खरीद लैत अछि। 1987 मे जूट स' बनयबाला सामन कें स्थानीय स्तर पर प्रोस्ताहित करबाक ध्येय स' 'जूट व्यवसाय प्रशिक्षण सह उत्पादन केन्द्र' पूर्णिया जिलाक काझामे खोलल गेल। एहि केन्द्र स' ग्रामीणक बीच सघन प्रशिक्षण चलायल गेल एवं ई केन्द्र जूटक कालीन, बैग, आकर्षक सजावटी सामान ओ जूटक अन्य उपयोगी सामान तैयार करय लागल, परन्तु साधनक अभावमे आब ई केन्द्र ठप परल अछि, किसनगंजमे 16000 एम. टी. क एकटा आधुनिक जूट मिलक निर्माण चलि रहल अछि। राज्य सरकारक माध्यम स' बनयवला ई मिल एखन धरि नहि बनि सकल। फारबिसगंजमे सेहो 16,000 एम.टी.क जूट कारखाना निर्माणाधीन अछि। दरभंगामे 3000 एम. टी. क जूट ट्वाइन प्लान्ट अछि।

कागत उद्योग

उनैसम शताब्दीमे एहि अंचलमे हस्तनिर्मित कागत बनैत छल। किसनगंजमे कागत बनैत छल। पाटक गुद्दा बनाकय ओ चूनमे भिजाकय पुनः साफ क' कागत बनायल जाइत छल। कागत कें चिक्कन करबाक हेतु मांड़क उपयोग होइत छल। असंगठित कुटीर उद्योगक रुप मे ई पसरल छल। स्वतंत्रताक पश्चात् अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ के एहि उद्योगक विकासक जिम्मेदारी देल गेल जे 1953 मे खादी ग्रामोद्योग बोर्ड

के हस्तांतरित कय देलक। हस्तनिर्मित कागत के प्रोत्साहन देबाक हेतु सरकारी विभागमे एकर प्रयोग सुनिश्चित कयल गेल। फाइल कवरमे एकर खूब प्रयोग भ' रहल अछि। हस्तनिर्मित कागत उद्योगक प्रमुख समस्या समुचित पृष्ठभूमि संबंधी कठिनाइ अछि जाहि स' उद्योगमे लागल बहुतो इकाई के चलायब खर्चीला एवं आर्थिक रुप स' अलाभप्रद होइछ। एतयक अधिकाश इकाई बन्द अछि। कच्चा मालक समस्या सेहो अछि। फाटल-पुरान कपड़ाक कतरन, रद्दी कागत, सड़ल-गलल पुरान टेन्ट आदि मुख्य रुप स' व्यवहार कयल जाइत अछि। जंगल स' उपलब्ध कच्चा माल जकर लुगदी बनि सकय, एकटा पैघ समस्या अछि। एकर निराकरण लुगदी बनयबला काठक गाछ लगयबाक दिस समुचित ध्यान देबाक चाही। पुरान मशीनक जगह नीवनक प्रयोग अपेक्षित होयत। हस्तनिर्मित कागतक मांग दिन प्रतिदिन बढ़ि रहल अछि तें सरकारक कर्तव्य जे एहि उद्योगक विभिन्न समस्याक समाधान करय।

जतय भारतमे प्रथम मशीनी कागत मिल पश्चिम बंगालक श्रीरामपुरमे 1832 मे स्थापित भेल, मिथिलांचलमे अशोक पेपर मिल्स लिमिटेड कम्पनी अधिनियमक अन्तर्गत 29 अगस्त 1957 मे पंजीकृत कयल गेल। दरभंगा-लहेरियासराय स' सात मील दक्षिण करेह नदीक उत्तरी तट पर रामेश्वर नगरमे कागत मिलक निर्माण भेल। बांस ओ सावे घास स' कागत बनयबाक योजना छल। 320 एकड़ भूमि एहि कारखाना के सितम्बर 1960 मे हस्तातरण कयल गेल। फ्रांसक मेसर्स इम्पेसेलक तकनीकी सहयोग स' 15,000 टन प्रतिवर्ष उत्पादन करयबला मिलक निर्माण शुरू भेल। मुख्य रूपें राज दरभंगा, वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन, बिहार सरकार ओ जीवन बीमा निगम एकर अंशधारी भेल। व्यवस्थामे महराज दरभंगा ओ बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन, छला। फ्रांस ओ अमेरिका स' मशीन पहुंचि गेल। अक्टूबर 1965 मे आर्थिक संकट उपस्थित भेल। काज रुकि गेल। दिसम्बर 1965 धरि 624 लाख टाका व्यय भ' चुकल छल। वित्तीय असौकर्यक कारण काज रुकल रहल। बादमे आसाम ओ बिहार सरकार एहि मिल पर ध्यान देलक। आसाममे 120 टन एवं दरभंगामें 30 टन कागत बनयबाक प्रयास शुरु भेल। भारतीय औद्योगिक बैंक 13.40 करोड़ टाका कर्ज देलक। आसामक जोगीगप्पा नामक स्थानमे कागत बनय लागल। पल्प प्लांट रामेश्वरनगर स' आसाम चलि गेल। पल्प आसाममे बनैत छल जे रामेश्वरनगर आबय लागल एवं एतय कागत बनय लागल। पुन: एहि मिल के आर्थिक संकट भेल, कागत बनब बन्द भेल एवं 1200 कार्यरत श्रमिक बेकार भ' गेलाह। ओ सभ 1982 स' जिंदगी ओ मृत्युक बीच झूलि रहल छथि। 1982 स' 1989 धरि कार्यरत लोक कें वेतन भेटि चुकल छनि। सर्वोच्च न्यायालय निर्णय देने अछि जे मिलक निजीकरण कयल जाय। हाल-फिलहाल मुम्बईक एक उद्योगपति साहस कयने छलाह मिलकें चलयबाक हेतु मुदा सरकारी तंत्र ओ राजनेताक चक्करमे एखन धरि ओ सफल नहि भेल छथि।

1955 मे समस्तीपुरमे ठाकुर पेपर मिल्स लिमिटेड बनब प्रारम्भ भेल। 40 लाख अंशपूंजी, भारतीय औद्योगिक वित्त निगम स' 19 लाख ओ बिहार राज्य वित्त निगम स'

10 लाखक कर्ज पूंजी स' एकर निर्माण भेल। सुप्रसिद्ध व्यवसायी राम बहादुर ठाकुर एन्ड कम्पनीक व्यवस्थामे काज शुरु भेल। कारखानाक क्षमता प्रतिदिन 10 टन उत्पादन करयबला छल। ई जापानी तकनीक द्वारा बनायल गेल छल। पुआर ओ घास स' कागत बनैवत छल। कारखाना अपन पूर्णक्षमता धरि कागत बनबैत छल। बाजारमे कागतक बढ़िया मांग छल ओ कानपुर एकर मुख्य बाजार छल। एकाएक एहि मिल के आर्थिक संकट भेलै। कार्यशील पूजीक अभाव भ' गेलै। निदेशक मंडल कम्पनी के नहि चला सकलाह आ ई एखनो बन्दे अछि।

तेसर कारखाना सहरसा जिलाक बैजनाथपुरमे बनय लागल। बिहार राज्य उद्योग विकास निगम एकर प्रवर्तक छल। विदेश स' मशीन एवं उपकरण आबि गेल अछि। कारखाना बनिकय तैयार अछि, किन्तु कारखानामे एखन धरि उत्पादन प्रारम्भ नहि भ' सकल अछि।

चारिम कारखाना बरौनीमे बनल। तेलहनक डाट स' कागत बनैत छल। सम्प्रति बन्द अछि। पांचम कारखाना झंझारपुरमे 'झंझारपुर पेपर मिल्स लिमिटेड' बिहार राज्य रासायनिक एवं औषधि विकास निगम द्वारा स्थापित कयल जा रहल छल। पूंजीक अभावमे निर्माण काज ठप अछि।

एहि अंचलक बन्द परल कागतक कारखाना के पुनर्जीवित ओ एकर आधुनिकीकरण होयबाक चाही, जे एहि प्रकारें अछि :

क्र०	नाम	स्थान	क्षमता	
1.	ठाकुर पेपर मिल्स लिमिटेड	समस्तीपुर	3,000	टी पी ए
2.	अशोक पेपर मिल्स लिमिटेड	दरभंगा	13,500	टी पी ए
3.	नौर्थ बिहार सुगर मिल्स लिमिटेड	बगहा	7,500	टी पी ए
4.	बरौनी पेपर इन्डस्ट्रीज लिमिटेड	बरौनी	2,250	टी पी ए (क्राफ्ट पेपर)
5.	आर्यभट्ट पेपर मिल्स लिमिटेड	दरभंगा	1,800	टी पी ए
6.	जयचन्दिका पेपर मिल्स लिमिटेड	बरौनी	1,950	"
7.	उपेन्द्र पेपर मिल्स प्राइवेट लिमिटेड	मुजफ्फरपुर	900	"
8.	विश्वनाथ पेपर मिल्स लिमिटेड	पूर्णिया	?	"
9.	बैद्यनाथ पेपर मिल्स लिमिटेड	पूर्णिया	1,500	टी पी ए स्ट्राबोर्ड
10.	क्राफ्टवेल पेपर प्राइवेट लिमिटेड	पूर्णिया	2,100	टी पी ए स्ट्राबोर्ड
11.	कटिहार पेपर मिल्स लिमिटेड	कटिहार	?	

मिथिलांचक उपरोक्त इकाईकें दोबारा संचालित करबाक योजना बनयबाक लेल प्रयास अपेक्षित अछि। एतयक कागत उद्योग प्रौद्योगिकी, कच्चा माल, पर्यावरण ओ समुचित पूंजीक अभावमे घेरायल अछि। जंगल स' कच्चा माल पर्याप्त मात्रामे उपलब्ध नहि होइछ। अपरम्परागत कच्चा माल जेना कुसियारक सिट्ठी, जूट, पुआर ओ रद्दी कागत

स' कागत बनय लागल अछि। बास ओ सावे घास प्रचुर मात्रामे उपलब्ध नहि अछि। ऊर्जाक अभाव, आधुनिकीकरण हेतु अधिक पूंजी लागत, निवेशक उच्च लागत, प्रबंधकीय विसंगति ओ कुशल श्रमिकक सेहो अभाव भ' जाइछ। एहि उद्योगकें कच्चा माल उपलब्ध करयबाक हेतु औद्योगिक वृक्षारोपणक हेतु एहि उद्योगकें घटिया ओ बेकार भूमि उपलब्ध करायल जाय। कुसियारक सिट्ठीक उपयोग हेतु चीनी उद्योगक संग कागत उद्योगकें जोरबाक प्रयास आवश्यक अछि। तामिलनाडुमे ऐहन एक मिल चलायल जा रहल अछि। एतय अखबारी कागत नहि बनायल जा रहल अछि।

आधुनिक सूती वस्त्र उद्योग

सूत काटब ओ बूनब एतयक प्राचीन विकसित उद्योग छल। जोल्हा ओ ततमा जातिक ई मुख्य धंधा छल । सूती, रेशमी, मलमल, मोटिया कपड़ा बनायल जाइत छल। उनी वस्त्र सेहो बनैत छल मुदा उत्तम कोटिक नहि। पूर्णिया ओ उत्तरी भागलपुर रेशमी वस्त्र बनयबाक प्रमुख केन्द्र छल। विभिन्न प्रकारक रेशमी कपड़ा बनैत छल। मधुबनी जिला विश्व-प्रसिद्ध मलमल वस्त्रक केन्द्र बुझल जाइल छल। भौरा, कपसिया, पंडौल एकर मुख्य जगह छल। ब्रिटेनक इस्ट इंडिया कम्पनी एतयक वस्त्र उद्योग स' लाभ अर्जित करैत रहल। मद्धिम कोटिक कपड़ा मुजफ्फरपुर, चम्पारण, दरभंगा एवं पूर्णियामे बनायल जाइत छल। 10,000 लूम मात्र पूर्णियामे छल। स्वदेशी ओ चर्खा आन्दोलनक क्रममे एहि उद्योगक विकास भेल। बादमे मिलनिर्मित वस्त्रक विकास भेला स' एतय हस्त-निर्मित वस्त्रक अवनति होमय लागल। भारतमे प्रथम सूती वस्त्रक कारखाना कलकत्ताक समीप घुसरी नामक स्थान पर स्थापित भेल, मुदा विकसित नहि भ' सकल । दोसर कारखाना पारसी उद्योपति डाबर बम्बईमे लगौलन्हि जे खूब सफल भेल। एखन सूती-वस्त्र उद्योग महाराष्ट्र एवं गुजरात राज्यमे केन्द्रित अछि।

मधुबनी जिलाक पंडौलमे 1983 मे सहकारिता क्षेत्रमे 'पंडौल कोआपरेटिव स्पीनिंग मिल्स, स्थापित कयल गेल। एहिमे पूंजी मुख्यतः बिहार सरकार ओ बिहार राज्य वस्त्र निगम देलक। भारतीय वित्तीय निगम, भारतीय औद्योगिक बैंक एवं भारतीय उधार ओ विनियम बैक संयुक्त रूप स' कर्ज देलक। एहि मिलक यंत्र एवं उपकरण अत्याधुनिक अछि। सूत बनय लागल। 1992 मे मिल कार्यशील पूंजीक अभावमे बन्द भ' गेल। 10 करोड पूंजी (कर्ज सहित) लागल अछि। सूत कलकत्ता ओ कानपुरक बाजारमे बिकाइत छल। 700 श्रमिक ओ 125 कार्यालयमे कार्यरत कर्मचारी बेकार भ' गेल छथि । एतयक जोल्हा लोकनि सस्त दरमे सूत प्राप्त करैत छलाह, सेहो बन्द भ' गेल अछि। कलकत्ताक व्यापारी अपन रूइ स' सूत करबैत छथि ओ अपना मनोनुकूल बाजारमे बिक्री करैत छथि। मिलके साधारण चार्ज कनवरसनक हेतु प्राप्त होइत अछि।

औद्योगिक प्रागण, पूर्णियामे बिहार राज्य वस्त्र निगम द्वारा इन्डस्ट्रीयल कॉटन यारन प्रोजेक्ट मार्च 1988 मे स्थापित कयल गेल। दरी, कनवास, जाल, टायर कौर्ड, फिल्टर कपडा आदिक हेतु सूत उत्पादन करब एकर उद्देश्य छल। 96.82 लाख

लागतक योजना छल। 1993 धरि ई मिल सूत उत्पादन करैत छल। कार्यशील पूजीक अभावमे ई परियोजना बन्द भ' गेल। कनवरसनक काज बीच-बीचमे कम मात्रामे चलैत अछि। सीतामढ़ीमे 67 लाखक लागत स' बिहार राज्य वस्त्र निगम द्वारा 'ओपेन एन्ड स्पीनिंग मिल' स्थापति कयल गेल, मुदा कार्यशील पूंजीक अभावमे मिल कार्यरत नहि भ' सकल। किसनगंजमे एक जूट ट्वाइन प्रोजेक्ट योजना पर काज चलि रहल छल, जे एखन ठप अछि। यैह दशा अछि दरभंगाक कपड़ा रगाई ओ सफाई केन्द्रक। ई सब राज्य सरकारक योजना थिक।

हस्तकरघा उद्योग

भारतवर्षमे कुल सूती वस्त्रक उत्पादनक 60 प्रतिशत भाग विकेन्द्रित क्षेत्र विशेषत: हस्त-करघा उद्योग द्वारा उत्पन्न कयल जाइछ। आंचलिक वस्त्रक बढ़ैत लोकप्रियता ओ वस्त्रक डिजाइनमे सदैव नयापन स' हस्तकरघा वस्त्रक देश एवं विदेशमे बहुत ढग स' प्रचार भेल अछि। एहि स' विदेशी मुद्रा बढ़ियां प्राप्त होइत अछि। ई ग्राम आधारित एवं पुश्तैनी पेशाक रुपमे चलि रहल अछि। कृषिक बाद हस्त्रकरघा उद्योग एहि अंचलक पैघ गतिविधि बला क्षेत्र अछि। एहि क्षेत्रमे प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रुप स' रोजगारक साधन उपलब्ध छैक। अतः एहि उद्योग कें प्रोत्साहन देब अनिवार्य छैक। प्रोजेक्ट पैकेज योजना, बुनकरक आवश्यकता कें ध्यानमे राखि एक मिश्रित योजना प्रारम्भ कयल गेल अछि। एकर विशिष्ट उद्येश्य बुनाइक कोनों विशेष उत्पाद, क्षेत्र या किस्मक विकासक प्रावधान छैक। एकर अलावा किछु चुनल गाममे उपकरणक आपूर्ति ओ प्रबंधकीय क्षमतामे सुधारक संग उत्पादन क्षमताक वृद्धि एवं कौशलके उन्नयन लेल कच्चा मालक आपूर्तिक वास्ते व्यापक सहयोग ओ समर्थन प्रदान कयल जाइछ। बुनकर के एहि प्रकारक संगठित एवं आवश्यकता आधारित सेवा 'एकीकृत हस्तकरघा ग्राम विकास योजनाक अन्तर्गत देल जाइछ। एकर उद्येश्य समुचित आवास सुविधा एवं सामुदायिक परिसम्पतिक सृजन करब अछि। प्राचीन परिपाटी स' हटिकय आब हस्तकरघा विकासक विभिन्न कार्यक्रम कें नियोजन कार्यान्वयन कें ग्रामीण विकास कार्यक्रमक संग जोरि देल गेल छैक। एहि योजनाक अन्तर्गत करघाविहीन बनुकर कें करघा प्रदान करब, कार्यशालाक निर्माण ओ कार्यशील पूंजी उपलब्ध कयल जाइछ। एकर उचित निगरानीक व्यवस्था सेहो विकसित कयल गेल अछि जाहि स' सुनिश्चित कयल जाय जे लक्ष्य-हितग्राही कें प्रत्येक योजनाक पूरा-पूरी लाभ भेटि सकय। हस्तकरघा उद्योगमे लागल अधिकांश बनुकर असंगठित क्षेत्रमे छथि। राज्य सरकार बनुकरक विकास एव कल्याण पर विशेष ध्यान देलक अछि। एकमुस्त स्वास्थ्य योजना शुरु कयल गेल अछि। एकरा अन्तर्गत बुनकरक स्वास्थ्य समस्या आ बनुाइ स' संबंधित बीमारीक हेतु सहायता प्रदान कयल जायत। योजनाक तहत बुनकर के दमा, तपेदिक आदिक उपचारक हेतु वित्तीय सहायता देल जायत, आंखिक नियमित जांच ओ चश्माक खर्चा देल जायंत। महिला बुनकर कें मातृत्व लाभ प्रदान कयल जायत। परिवार नियोजनक स्थायी उपायक हेतु अतिरिक्त मुआवजाक प्रावधान सेहो छैक। प्राथमिक स्वास्थ्य रक्षा

आधारित ढांचाक विकास ओ पेयजलक प्राथमिकता सेहो देल जाइछ। एहिमे बचत तथा सामूहिक बीमा योजनाके सेहो सम्मिलित कयल गेल छैक। आठम पंचवर्षीय योजनामे एहि योजनाक बढ़ियां प्रावधान छलैक।

मिथिलाचलमे छिट-पुट ई उद्योग सभठाम पसरल अछि। एहिमे पावर लूम सेहो जुटि गेल अछि। गमछा, लुगी, चदरि, पर्दाक कपडा, सजावटक कपडाक सामान आदि मुख्य रुपे बनैत अछि जे मुख्यत: स्थानीय बाजारमे बिका जाइछ। राज्य सरकार एहि उद्योगक विकास हेतु बिहार राज्य हेन्डलूम एवं हैन्डीक्राफ्ट कारपोरेशन लिमिटेडक स्थापना कयने अछि। एकर समुचित लाभ बुनकर के नहि भेटि रहल अछि। ई निगम एहि उद्योग स' निर्मित सामानक हेतु राज्य स' बाहर कतेको राज्यमे बिक्री केन्द्र सेहो खोलने अछि। जतय एतयक निर्मित मालक बिक्री होइछ। सहकारिता क्षेत्रमे सेहो एहि उद्योग के विकासक हेतु प्रयास कयल गेल अछि। राज्य सरकार उद्योगविहीन जिलामे ग्रोथ सेन्टरक माध्यम स' आधारभूत सुविधा उपलब्ध करयबाक प्रयास कयलक जाहि मे खगड़िया, मधेपुरा, पूर्णिया ओ सहरसा जिलामे केन्द्रीय सरकार एवं भारतीय औद्योगिक विकास बैकक सहयोग स' ग्रोथ सेन्टर चलयबाक योजना छैक। एहि कार्यक्रमक अन्तर्गत जिलामे लगभग 200 एकड भूमि के विकसित कय सघन रूपमे उद्योग लगयबाक कार्यक्रम अछि। मिथिलांचलमे जिला स्तर पर हस्तकरघा एहि तरहें अछि :

क्रमांक		जिला
1.	पश्चिमी चम्पारण	194
2.	पूर्वी चम्पारण	2746
3.	वैशाली	392
4.	मुजफ्फरपुर	1600
5.	सीतामढ़ी-शिवहर	5038
6.	दरभगा	2670
7.	मधुबनी	10,273
8.	समस्तीपुर	1156
9.	बेगूसराय	62
10.	सहरसा	1660
11.	पूर्णिया-किसनगंज	5089
12.	कटिहार	5000
13.	मधेपुरा	100
14.	खगड़िया	600
	कुल संख्या	36, 580

एहि अंचलमे कुल हस्तकरघाक संख्या 36580 अछि, जखन कि समस्त बिहार मे 1,22,423। जनसंख्याक आधार पर उपरोक्त हस्तकरघाक संख्या नगण्य अछि। जीवकाक हेतु एहिमे विस्तार आवश्यक छैक।

दरभंगामे मात्र एक सरकारी क्षेत्रमे 'डाइंग एवं फिनीसिंग प्लान्ट' अछि जकर कार्य क्षमता 324 लाख मीटर मात्र छैक।

लघु, कुटीर एवं ग्रामोद्योग

मिथिलाचलक अर्थव्यवस्थामे लघु, कुटीर एव ग्रामोद्योगक स्थान प्राचीन काल स' महत्वपूर्ण रहल अछि। ई महत्त्व मात्र उद्योगीकरणाक कारण नहि बल्कि एहि स' आर्थिक विकासक दरमे वृद्धि तथा रोजगारक अवसर उत्पन्न होइछ। एतयक अधिकांश जनसख्या गाममे रहैत अछि एव प्रमुख धधा कृषि छैक। कृषिक जे स्थिति अछि ओकर अनुसार कृषक श्रमिक के वर्षमे मुस्किल स' 200 दिन कृषि काज रहैत छैक। एहि तरहें 165 दिन ओ बेकार रहैत छथि। यदि एहि भूभागमे कुटीर उद्योगक जाल बिछा देल जाय त' जे व्यक्ति मात्र कृषि पर निर्भर रहैत छथि हुनका अतिरिक्त आयक साधन उपलब्ध भ' जयतनि ओ नुकाएल प्रतिभाबला बेरोजगार व्यक्ति के रोजगारक साधन उपलब्ध करयला स' समाज ओ क्षेत्रक आर्थिक विकास होयत।

लघु एवं कुटीर उद्योगमे किछु अन्तर अछि।

(1) कुटीर उद्योग-धंधा मुख्यत: परिवारक सदस्य द्वारा पूर्णकालीन या अंशकालीन धंधाक रूपमे चलायल जाइछ जखन कि लघु उद्योग श्रमिकक सहायता स'। **(2)** कुटीर उद्योगमे हस्त क्रिया प्रधान अछि जखन कि लघु उद्योगमे यांत्रिक प्रक्रिया मुख्य होइछ। **(3)** कुटीर उद्योगक हेतु अल्प पूजीक आवश्यकता अछि। लघु उद्योगमे अधिक पूंजीक आवश्यकता होइत अछि। **(4)** कुटीर उद्योगमे स्थानीय कच्चा माल ओ कार्यकुशलताक उपयोग कयल जाइछ। लघु उद्योगमे कच्चा माल बाहर स' सेहो मंगायल जाइछ एवं तकनीकी कुशलता बाहर स' सेहो उपलब्ध कयल जाइछ। **(5)** कुटीर उद्योगमे परम्परागत वस्तु बनायल जाइछ जे स्थानीय मागक पूर्ति करैत अछि। लघु उद्योग विस्तृत क्षेत्रक माग पूरा करैछ। कुटीर उद्योग दू तरहक अछि। पहिल ग्रामोण जे कृषि स' संबधित एवं कृषक द्वारा अपनायल जाइछ यथा डेयरी, मुर्गीपालन, कताई-बुनाई, टोकरी बनेनाइ माटिक वर्तन, लोहारक सामान, डोरी बनायब, चमडाका जुता, घानी तेल आदि। दोसर शहरी कुटीर उद्योगमे माटिक खेलौना, कपडा पर कढ़ाई ओ बुनाई, हस्तकरघा स' कपड़ा बूनब, लकड़ीक फर्नीचर, साबुन एव अन्य। एहि अचलमे प्राचीन कालमे एहि तरहक उद्योगक जाल बिछल छल ओ अपन आवश्यकताक हेतु जीवनोपयोगी सब सामान उपलब्ध छल।

मिथिलांचलक आर्थिक व्यवस्थामे कुटीर एव लघु उद्योगक महत्वपूर्ण स्थान अछि। अधिकाधिक रोजगारक व्यवस्था, कुटीर उद्योगक विकासमे कम पुजीक

आवश्यकताक कारणे ई उद्योग श्रम-प्रधान होइछ। एहि उद्योगक विकास स' जनसंख्याक अधिक बोझ कृषि पर स' कम होयत, आर्थिक शक्ति केन्द्रीयकृत नहि विकेन्द्रीकृत होयत, विकेन्द्रीयकरण स' पूंजी ओ कुशलताक गतिशीलतामे वृद्धि, औद्योगिक समस्या स' मुक्ति, श्रम एवं पूंजीमे उत्तम संबंध तथा स्वामी ओ नोकरक भावनाक समाप्ति होयत। नैतिक ओ समाजिक दृष्टि स' एहि उद्योगमे कार्यरत व्यक्ति अपना उद्योगक स्वयं स्वामी होइत अछि तें एतयक आर्थिक विकासमे एहि उद्योगक भूमिका श्रेयस्कर अछि। यदि एतय औद्योगिक उत्पादनक छोट-छोट केन्द्र स्थापित कय देल जाय त' अनियोजित नागरीकरणक समस्याक बहुत हद धरि समाधान भ' जायत। किन्तु एहि उद्योगक समक्ष अनेक कठिनाइ ओ समस्या अछि जेना कच्चा पदार्थक अनुपलब्धता, उत्पादनक प्राचीन प्रविधि स' उत्पन्न कठिनाइ, निर्धन कारीगर होयबाक फलस्वरुप वित्त संबंधी कठिनाइ, समुचित विक्रय-व्यवस्थाक अभाव, करक बोझ, वृहत उद्योग स' प्रतिस्पर्द्धा एवं उचित संगठनक अभाव। स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद सरकार एहि उद्योग विकासक हेतु सराहनीय काज कयने अछि। मुदा ई अंचल अभिशापित रहल। कोनो विशेष आकर्षक काज दृष्टिगोचर नहि भ' रहल अछि।

एतयक ग्रामोद्योगक परिधिमे ओ सब उद्योग-धंधा अछि जे ग्रामवासी अपन घरक आसपास पारम्परिक रीति स' अथवा विशेष कौशलक उपयोग करैत निष्पादित करैत छथि। यैह कारण अछि जे सामान्यतया स्थानीय कच्चा माल, कौशल, पूंजी, तकनीक, उपभोग पर आधारित उत्पादन कें ग्रामोद्योगक संज्ञा देल जाइछ। ग्रामीण उद्योगक विकास-विस्तारक दिशामे नियमित कार्यशील संस्था खादी आ ग्रामोद्योग आयोग 1957 स' कार्यरत अछि। एकर मुख्य कार्यालय मुम्बईमे अछि। ई प्रमाणित खादी ओ ग्रामोद्योगी संस्था कें कर्ज दैछ एवं निर्मित माल कें बिक्रीक सुविधा दैछ। देशक मुख्य स्थानमे एकर भव्य दोकान सभ छैक एवं 15000 बिक्री स्थान छैक। बिहार राज्यमे पटनामे पैघ दोकान एवं आयोगक शाखा कार्यालय अछि। देशक 60 लाख बेरोजगार के ई रोजगारमे लगौने अछि। 116 तरहक ग्रामोद्योगी वस्तु बनयबामे ई सहायक अछि, जाहिमे मुख्य खादी वस्त्रक अलावा माटिक वर्त्तन ओ खेलौना, चमड़ाक सामान, हस्तनिर्मित कागत, बांस ओ केन स' निर्मित सामान, घानी तेल, पापड़, अचार एवं अन्य निर्मित खाद्य पदार्थ, बढ़ही ओ लोहार निर्मित सामान, मधुमांछी पालन, साबुन एवं अन्य समान। 30 राज्यस्तरीय खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड 4700 संस्था एवं 15000 सहकारी समिति कें आर्थिक सहयोग देने अछि। अपन मार्जिन मनी स्कीमक तहत 10 लाख लागतवला परियोजना कें 25 प्रतिशत एवं एहि स' उपरबला के 25 लाख लागतवला कें 10 प्रतिशत ग्रान्ट दैत अछि। पचासम वर्षगांठ पर ई एकटा 'अभ्युदय' योजना शुरू कयलक, जाहिमे पचास व्यक्तिक सहयोग स' ग्रामोद्योग कें प्रोत्साहन देबाक प्रावधान छैक।

6 अगस्त, 1991 कें लघु, कुटीर एवं ग्रामोद्योग कें प्रोत्साहन एवं सबल करबाक हेतु भारतीय संसद नीतिगत उपायक घोषणा कयलक। एकर मुख्य उद्देश्य एहि उद्योग

कें अधिक सक्षम ओ विकासोन्मुखी बनायब अछि। एहि उद्योग कें नौकरशाही ओ नियम-कानूनक मकड़जाल स' बचयबाक प्रयास कयल गेल। लघु उद्योगक प्रतिबंधित सूची समाप्त कयल गेल, इलेक्ट्रोनिक्स वस्तुक पंजीकरणक अधिकार राज्य सरकार कें हस्तांतरण, पंजीकरणकें सरल ओ उदार कयल गेल, छोट उद्योगकें पारिभाषित करबाक हेतु स्थान संबंधी प्रतिबंध हटा लेल गेल। एहि उद्योगकें जल ओ वायु प्रदूषण संबंधी मंजूरीक विधि कें आसान कयल गेल, उद्योग स' संबद्ध सेवा एवं व्यापारिक उद्यमक परिभाषा युक्तिसंगत ओ समरुप बनायल गेल, बिजली स' चलयबला इकाईकें लाइसेंसक छूट, श्रम कानून स' संबद्ध (आयकर विवरणी भरबाक छूट ओ आवश्यक रजिस्टरक रखरखाव) 1988 पारित कय सुविधा, उत्पाद शुल्क निरीक्षणकें वर्षमे मात्र एक बेर निरीक्षणक प्रावधान, परियोजनाक मूल्यांकनमे विलम्ब कें रोकबाक हेतु रिजर्व बैंकक निर्धारित मानदंडक अनुसार राज्य वित्त निगम ओ बैंक द्वारा संयुक्त मूल्यांकनक प्रावधान, सेवा क्षेत्र कें छोट उद्यमक दर्जा आदि सुविधाक प्रावधान छैक।

भारत सरकार लघु उद्योग क्षेत्रमे उत्पाद शुल्क संबंधी उदार छूट प्रदान कयलक। एहि उद्योग कें उत्पादक शुल्क स' छूटक सीमा 30 लाख टाका स' बढ़ाकय 50 लाख कय देने अछि। ई लाभ वैह गैर-पजीकृत लघु उद्योग इकाईकें सेहो उपलब्ध छैक जे कोनो कारण स' औपचारिक पंजीकरण प्रमाण-पत्र नहि प्राप्त कय सकल होथि। स्थिर पूंजी विनयोग (फीक्सड एसेटमे), जे 60 लाख टाका छल, ओकरा पुन: बढ़ायल जा रहल छैक। एहि उद्योग कें ऋण उपलब्ध करयबाक हेतु सरकार रिजर्व बैंकक भूतपूर्व डिप्टी गर्वनर डा. बी. आर. नाइकक अध्यक्षताबला समितिक अनुशंसा स्वीकार कयलक एवं तदनुसार बैंक के पहिने कुटीर उद्योग, छोट उद्योग (टिनी) तकर बाद लघु उद्योग कें, ऋणक सीमा 50 लाख रुपया कें आधारित कुल कार्यशील पूंजीक अनुसार निर्धारित करब, आठम पंचवर्षीय योजनाक अवधिमे बैंकक ऋण-क्षमता एहि उद्योगक हेतु वृद्धि करब, प्रत्येक बैंकमे प्रभावकारी शिकायत निपटा कक्ष, एवं अन्य। भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) सेहो अपन किछु ऋण योजनामे संशोधन कयने अछि। समय पर उद्योगके ऋण उपलब्ध हो, भुगतानमे बिलम्बके रोकबाक हेतु सरकार 1993 मे लघु उद्योग एवं अनुषंगी नियम बिलम्बित भुगतान अधिनियम पारित कयलक। लघु उद्योग क्षेत्रमे टेक्नोलोजी सुधारक हेतु सरकार अनेक तकनीकी विकास केन्द्र स्थापित कयलक। एहिमे श्रमिक के सेहो प्रशिक्षण देबाक प्रावधान छैक। राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम निर्यात बढ़यबामे पूर्ण सहायता दैत अछि। ई निगम संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू एन डी पी)क सहयोग स' ऊर्जा संरक्षणक विशेष कार्यक्रम शुरू कयने अछि। लघु उद्योग क्षेत्रमे आधुनिकीकरण ओ गुणवत्ता सुधारक हेतु एन एन आई सी किराया पर उपकरण देबाक एकटा योजना प्रारम्भ कयने अछि।

1970 क दशक ओ 1980 क प्रारम्भमे एहि क्षेत्रमे लघु उद्योगक संतोषजनक विकास भेल। किन्तु, विकास स्थायी नहि रहल। एहि उद्योगमे भीषण रुग्णता आयल।

एहि रूग्णताक मुख्य कारण छल उद्यमिताक अभाव, वित्तीय संस्था द्वारा समय पर कार्यशील ओ स्थायी पूजी विनियोग नहि भेनाइ, जर्जर तकनीक, बिक्रीक समुचित व्यवस्थाक अभाव, कच्चामालक अनुपलब्धता, समय पर सबसिडी एव अन्य इन्सेन्टिवक अनुपलब्धता, अपर्याप्त ऊर्जा एव प्रशासनकि भ्रष्ट नौकरशाही। एहि अंचलक उपेक्षा शासन ओ राजनीतिज्ञक द्वारा कोनो नवीन बात नहि। अपना प्रयास स' उद्यमी सफल होयबाक प्रयास कयलाक उपरान्तो यथोचित सुविधाकें प्राप्त नहि कय सकलाह। ई क्षेत्र हस्तकरघा उद्योगमे अपन विशिष्ट स्थान अर्जित कयने अछि। मुदा, एहि उद्योगक उन्नयन ओ विकासक हेतु सरकार द्वारा आवंटित धनराशि बुनकर ओ कारीगर धरि नहि पहुंच सकल। एतयक पंजीकृत लघु उद्योगमे मुस्किल स' एक तिहाइ कार्यरत अछि। 1992 धरि बिहार राज्यमे लगभग 53000 पंजीकृत लघु उद्योगमे 17178 इकाई अस्वस्था छल। लघु इकाइक रुग्णताक निवारणक हेतु सरकार बी आई एफ आर सदृश कोनो संस्थाक सृजन नहि कयने अछि।

प्रथम स' अष्टम पंचवर्षीय योजनाकाल धरि लघु एवं कुटीर उद्योग कें महत्वपूर्ण स्थान देल गेल एवं एहि उद्योगक विकास हेतु विभिन्न प्रकारक प्रयत्न कयल गेल। सामुदायिक विकास कार्यक्रममे हस्तकरघा ओ दस्तकारी कें प्राथमिकता भेटल। दोसर पंचवर्षीय योजनाकालमे अम्बर चर्खाक प्रयोग कें प्रोत्साहित कयल गेल। तेसर पंचवर्षीय योजनामे औद्योगिक संस्थानक स्थापना पर जोर देल गेल। चतुर्थमे एहि संस्थान कें सुदृढ़ करबाक प्रयास छल। छठम योजना अवधिमे नबार्ड द्वारा एहि उद्योगक विकास मे सहायता भेटल। एहि योजनाकालमे जिला उद्योग केंद्र खोलल गेल जे एहि उद्योग कें तकनीकी ओ विपणन संबंधी सहायता, साख, कच्चा पदार्थ आदि सुगमता स' उपलब्ध करयबा मे सहायता कयलक। सातम योजनामे हस्तकरघाक विकास पर पर्याप्त परिव्ययक आयोजन छल।

औद्योगिक प्रांगण

राज्य सरकार लघु उद्योगक विकासक हेतु विभिन्न क्षेत्रमे औद्योगिक प्रांगणक निर्माण कयलक। एहिमे उद्यमी कें उद्योगक हेतु सरकार स्थान, रोड, बिजली ओ जलक व्यवस्था करैत अछि। 1976 मे दरभंगा औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकारक स्थापना कयल गेल। प्राधिकार गठनक मुख्य उद्देश्य अपना क्षेत्राधिकारमे समुचित स्थान पर औद्योगिक प्रांगणक स्थापना, भूखंडक विकास, शेड निर्माण, औद्योगिक प्रांगणमे आधारभूत सुविधा, कच्चा मालक आपूर्ति ओ उत्पादित मालक बिक्रीमे सहयोग देब आदि छल। एकर क्षेत्र दरभगा, मधुबनी, समस्तीपुर, बेगूसराय, पूर्णिया, किसनगंज, सुपौल, कटिहार, सहरसा, मधेपुरा एवं अररिया जिला धरि सीमित कयल गेल। चौदह टा स्थान पर औद्योगिक क्षेत्र बनल। उद्यमी कें भूमि प्रदान करबाक हेतु कुल 863.401 एकड़ भूमि अधिग्रहण कयल गेल। एहिमे 619 भूखंड बनाकय उद्यमी कें देलो गेल। 30 करोड़ टाकाक लागत स' एहि प्राधिकारक निर्माण भेल। 494 औद्योगिक इकाईक

निबंधन भेल जाहिमे 130 क अकाल मृत्यु भ' गेल एवं अधिकाश रूग्णावस्थामे अछि। मात्र दरभगाक तीनटा औद्योगिक प्रागणमे स्थापित 192 लघु उद्योगमे मात्र 17-18 चालू अवस्थामे अछि। एकर मुख्य कारण बिक्री करक विसगंति, ऊर्जाक अभाव, कच्चा मालक दिक्कत एवं बैंक ओ बिहार राज्य वित्त निगमक असहयोगात्मक रुखि कहल जाइछ। किछु उद्यमी सेहो दोषी छथि। ई लोकनि वित्त निगम ओ कर्जक रुपया अपन दोसर कारबारमे हस्तान्तरित कयलनि। एतयक इकाईमे कार्डबोर्ड, दवाई, आलमुनियमक वर्त्तन, मैदा, दालि, कोकिंग कोल, खाद, लकड़ीक सामान आदि बनायल जाइत छल।

पूर्णिया एवं खगड़ियामे विकास केन्द्रक 1994-95 मे निर्माण भ' रहल छल। आधुनिक संरचनात्मक सुविधाक निर्माण हेतु बेगूसराय, दरभगा एव मुजफ्फरपुर स्थित विकास केन्द्रक चयन भेल अछि आठम पंचवर्षीय योजना कालक हेतु। कुमारबाग (चम्पारण) तथा आलमनगर (मधेपुरा)क परियोजना के उचित मूल्य पर लघु उद्योग, कृषि आधारित एवं ग्रामीण उद्योगक लेल औद्योगिक प्लान्ट, शेड, उपयुक्त समेकित आधारभूत संरचना प्रदान करबाक उद्देश्य स' स्वीकृत भेल छैक। प्रत्येक केन्द्रमे संरचनात्मक विकास हेतु 5 करोड़ टाका पूंजीनिवेश दृष्टि मे राखल गेल अछि। हाजीपुरमे निर्यात अभिवृद्धि औद्योगिक पार्क स्थापित करबाक राज्य सरकार निश्चय कयने अछि जे एक केन्द्र प्रायोजित योजना थिक। औद्योगिक विकासक हेतु आधुनिकतम आधारभूत संरचनाक लेल राज्य सरकार 40 करोड़ रुपयाक लागत स' 6 मेगा विकास केन्द्रमे एहि अंचलक तीन स्थान–मुजफ्फरपुर, दरभंगा ओ बेगूसरायमे कार्य प्रगति पर अछि।

मुजफ्फरपुर बेला औद्योगिक क्षेत्रमे उत्तर बिहार औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकार अपन कार्यालय रखने अछि, जकर कार्य क्षेत्र मुजफ्फरपुर, हाजीपुर, सीतामढ़ी, शिवहर, पूर्वी चम्पारण ओ पश्चिमी चम्पारण जिला अछि। बेला प्रांगणमे प्राधिकार 310 एकड़ भूमि अधिग्रहण कयने अछि, जाहि पर लगभग 400 लघु ओ मध्यम उद्योग निजी क्षेत्र मे खुजल। आर्थिक सहायता बैंक स', बिहार राज्य वित्तीय निगम एवं अन्य वित्तीय संस्था स' उपलब्ध कराओल गेल। एहि कारखाना सबहक वित्तीय स्थिति ठीक नहि अछि, मुदा अधिकांश कार्यरत छैक आ लाभमे कमे अछि।

एहि क्षेत्रमे सार्वजनिक उपक्रम तीनटा स्थापित भेल। भारत सरकारक इंडियन ड्रग्स ऐन्ड फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड (आइ डी पी एल)। अंग्रेजी दवाईक प्रमुख उत्पादक ओ अलकोहलक पैघ आपूर्त्तिकर्त्ता। दवाइ उद्योगमे बहुराष्ट्रीय पूंजी निवेशक कारण ई उद्योग उपेक्षित रहि रहल अछि। बिहार सरकारक पूर्ण असहयोग, आवश्यक कच्चा माल छोआक आपूर्त्ति बिहार सरकार नहि कयलक, बिजलीक यथेष्ट मात्रामे अनुपलब्धता एवं अन्य सरकारी उपेक्षा नीतिक कारण सम्प्रति ई बन्द अछि। दोसर भारत सरकारक उपक्रम-भारत बैगन लिमिटेड-रेलवेक डिब्बा निर्माण करैत अछि। वैगन इंडिया लिमिटेड बैगन बनयबाक काज एहि इकाई कें दैछ जे सब समय एकरा काज नहि उपलब्ध

करबैत अछि। तेसर बिहार सरकारक उपक्रम-बिहार फिनिस्ड लेदर्स लिमिटेड। एकर काज उत्कृष्ट छल। एशियाक औद्योगिक मेलामे चर्म उद्योगक क्षेत्रमे स्वर्णपदक प्राप्त कयलक, मुदा दोषपूर्ण सरकारी प्रबंधनक कारणें बन्द परल अछि। हाजीपुर क्षेत्रमे राज्य सरकारक उपक्रम-बिहार राज्य फल एवं सब्जी विकास निगम, बिहार ड्रग्स लिमिटेड ओ वस्त्र निगमक रेडीमेड गार्मेन्ट्स प्रोजेक्ट बन्दे छैक।

बिहार सरकार दरभंगा, मुजफ्फरपुर ओ बेगूसरायमे मेगा ग्रोथ सेन्टरक विकास आरम्भ कय देने अछि। ई केन्द्र नव उद्योगक स्थपनाक हेतु विश्वस्तरीय आधारभूत सरचना उपलब्ध करायत। एहि केन्द्रक विकासमे निजी क्षेत्रक हिस्सेदारीक स्वागत कयल जयतैक।

सार्वजनिक उपक्रम

राजकोय या सार्वजनिक उपक्रम एक व्यावसायिक संस्था थिक, जाहि पर सरकारक स्वामित्व एवं नियंत्रण होइछ। एहन उपक्रमक स्वामित्व पूर्णतः या कम स' कम 51 प्रतिशत स' अधिक अंश सरकारक हाथमे रहैत अछि। प्रत्येक विकासशील देश आर्थिक नियोजक आधार पर अपन विकास करबाक प्रयास करैछ, जाहि हेतु विशाल पूंजीक आवश्यकता होइत छैक। निजी क्षेत्र पूंजीक आवश्यकता कें पूरा नहि कय सकैछ। द्वितीय पचवर्षीय योजनामे स्पष्ट कयल गेल जे समाजवादी ढंगक समाजक राष्ट्रीय उद्येश्यक रूपमे अपनायब एवं नियोजन तथा तीव्र आवश्यकता पूर्तिक हेतु अनिवार्य छैक जे आधारभूत ओ केन्द्रीय महत्वक सब उद्योग तथा जीवनोपयोगी सेवा स' संबंधित उद्योग सार्वजनिक क्षेत्रमे हो। स्वतंत्रताक पूर्व डाक-तार, रेल परिवहन सदृश उपक्रम सार्वजनिक क्षेत्रमे छल। 1948 एवं 1956 क औद्योगिक नीति कें सार्वजनिक क्षेत्रक उद्योगक स्थापना पर विशेष जोर देल गेल। एकर स्थापनामे लाभार्जन कम एवं आधारभूत संरचनाक निर्माण पर विशेष ध्यान देल गेल। समाजमे रोजगारक वृद्धि, रुग्ण उद्योग के स्वस्थ बनयबाक हेतु, क्षेत्रीय असंतुलन कें कम करबाक हेतु, भावी विकासक हेतु, वित्तीय साधन जुटयबाक हेतु, एकाधिकारी प्रवृत्ति कें रोकबाक लेल, उचित वितरण, लघु एवं कुटीर उद्योग कें साहाय्यक लेल एवं तकनीकी क्षेत्रमे आत्मनिर्भर भ' जयबाक हेतु सार्वजनिक उपक्रमक निर्माण कयल गेल अछि।

भारत सरकारक जिम्मा अनेक केन्द्रीय सार्वजनिक उपक्रम अछि, किन्तु एहि अंचलमे एकोटा नहि स्थापित भेल। सरकारी उपक्रमक तीनटा शाखा कार्यालय एहि क्षेत्रमे अछि। बरौनीमें बरौनी तेल शोधक कारखाना एवं खाद कारखाना। मुजफ्फरपुरमे इन्डियन ड्रग्स एवं फार्मासिटिक्ल्सक एकटा इकाई।

भारतीय तेल शोधक कारखाना द्वारा एक समिति बनायल गेल, जाहिमे भारतीय तेलशोधक कारखाना, भारतीय भूतत्व सर्वेक्षण विभाग, केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्था, उत्तर-पूर्वी रेलवे एवं एकटा बिहार सरकारक प्रतिनिधि छलाह। एहि समितिक

अनुशंसा पर बरौनीक समीप तेघरा थानाक जमीन गायमे वर्षा, जल निकास, [illegible] स्तर, हवाक गति, भूकम्प संबंधी स्थिति, सड़क एवं रेल यातायात सुविधा, भूमि एवं भूमिक नीचाक भाग, भौगोलिक सुरक्षाक दृष्टि एवं [illegible] [illegible] समाप्त होइत हो, आदि जांच-पड़तालक बाद एहि स्थान के प्रतिष्ठानक हेतु चुनल गेल। रूसी ओ अमेरिकी विशेषज्ञ सेहो एहि स्थानक अनुमोदन कयलनि। केन्द्रीय सरकार तखन अपन अनुमति देलक एवं कार्य प्रारम्भ भ' गेल। बिहार सरकार 50 लाख टाका भूमि अर्जनमे, 5 लाख टाका 100 विस्थापित परिवार के बसयबामे एवं 20 लाख टाका बरौनी नगर के बनयबामे खर्च कयलक। भारतीय तेल शोधक कारखाना 15 लाख टाका खर्च कयलक हथिदहमे गंगा पुल योजना स' सकारा कीनयमे। सड़क निर्माणमे पर्याप्त टाका खर्च कयल गेल। राजेन्द्र सेतु स' कारखाना धरि पक्की सड़कक निर्माण भेल। एहि प्रतिष्ठानक तेलशोधक कार्यक्षमता तीन मिलियन टन छैक, किन्तु उत्पादन मात्र दू मिलियन टन होइत छैक। इन्डियन एक्सप्लोसिव लिमिटेडक कानपुर कारखाना के नेप्थाक आपूर्ति एतहि स' होइछ।

बरौनी तेल शोधक कारखानक आधुनिकीकरण ओ नवीकरण अतिशीघ्र पूरा भ' जायत। हल्दिया स' एकरा जोरि देल गेल छैक। 1995 मे 950 करोड़ टाकाक लागत स' ई काज शुरु भेल। एकर तेल शोधन क्षमता के 3.3 मिलीयन टन स' 4.2 मिलीयन टन कयल गेल छैक। समस्त उपकरण के बदलि देल गेल छैक। तकनीकमे सेहो परिवर्तन कयल गेल अछि। पाराफीन वैक्सक एवं अल्फोलेफन, जे दवाइ एवं सुगन्धित पदार्थ बनयबामे काज अबैछ, उत्पादन एतय संभव भ' गेल छैक। जून 1998 मे 30705 एम टी पेट्रोलक उत्पादन भेलै। गैस टर्बाइन द्वारा कारखानामे विद्युत उत्पादनक व्यवस्था कयल गेल अछि। भारत सरकार पुनः एहि तेल शोधक कारखानाक उत्पादन क्षमता के 4.2 मिलयन टन स' 6 मिलियन टन कय रहल अछि।

भारतीय तेल निगम सयुक्त क्षेत्रमे कुवैत पेट्रोलियम कम्पनीक सग 1105 किलोमीटर लम्बा पाइप लाइन 1500 करोड़ रुपयाक लागत स' पेट्रोनेट इंडिया लिमिटेडक सग योजना बनौलक अछि। 2002-2003 धरि ई योजना कार्यरत भ' जायत। तखन देशमे पेट्रोलक मांग 117 मिलीयन टन भ' जायत। एखन मात्र 90 मिलियन टन अछि। परादीप-रांची-इलाहाबाद पाइप लाइनक क्षमता 6 मिलियन टन होयत।

बरौनी तेल शोधक कारखानामे अपन क्षमता स' बेसी अशोधित तेल 498 कि मी. बरौनी-हल्दिया पाइप लाइन स' आब उपलब्ध होयत। अपन पूर्ण क्षमताक उपयोग कयला पर 1.5 एम टी पी ए आसामक बनगाइ गाव तेल शोधक कारखाना के दय देत। सीपींग कारपोरेसन आफ इंडियाक सग एकटा सयुक्त कम्पनी निर्माणक योजना अछि। हल्दिया जेटीक क्षमता 20,000 स' 30,000 टन बढ़यबाक छैक। बरौनीक कारखानाक क्षमतामे वृद्धि होयत, जाहि पर 1700 करोड़ रुपया खर्चक अनुमान अछि। तेल शोधक

कारखाना–हल्दिया-बरौनी ओ काडला-भटिन्डा पाइप लाइन स' प्राप्त जरूरत स' अधिक 'ऑप्टिक फाइबर केबुल' टेलीफोन संचार कम्पनीकें देबाक योजना तैयार कयने अछि।

बरौनी खाद कारखाना

एतयक खाद कारखाना हिन्दुस्तान उर्वरक निगमक एकटा इकाई अछि। एकर उत्पादन क्षमता 1,40,000 टन छैक। 1992 मे ई कारखाना रुग्ण घोषित कय बन्द कय देल गेल। 1994-95 मे देशमे खादक कमी भेल। एहि कमी कें ध्यानमे राखि एहि कारखाना के उत्पादनक अनुमति देल गेल। 21.09.1995 के बीआइएफआरक समक्ष एकर रुग्णताक संबंधमे निवेदन कयल गेल एवं नवीकरण स्वीकृत भेल। 156 करोड़ लागत स' उत्पादन क्षमता 400,000 मे टन स' बढ़िकय 10,00,000 मे टन आंकल गेल 6,00,000 टन वृद्धि स' 540 करोड़ टाका ओ 15 करोड़ डालरक बचत संभव छल।

डेनमार्कक हालदार टोपसी, पुरोहित कमेटी, संसदीय कमेटी एवं भौमिक कमेटी सरकारकें आश्वस्त कयलक जे एहि कम्पनीक नवीकरण स' लाभ होयत। सरकार एहि सिफारिश कें अनुमोदन कयलक। किन्तु विदेशी खाद उत्पादक एवं नौकरशाहक दुरभि संधि एहि प्रस्ताव कें सफल नहि होयब देलक। नियमतः प्रत्येक 9 वर्षक अन्तराल पर रासायनिक कारखानाक नवीकरण अत्यावश्यक अछि, मुदा बरौनी खाद कारखाना कें एहि जोर्णेद्धार स' वंचित राखल गेल।

बिहार सरकारक अधीन 47 टा सार्वजनिक उपक्रम अछि। एकोटाक मुख्यालय मिथिलांचलमे नहि। किछुक शाखा कार्यालय अछि, मुदा सब रुग्णवस्थामे। बिहार चमड़ा विकास निगम ओ फिनिस्ड लेदर कम्पनी द्वारा एहि अंचलक सकरी, बेतियामे दू टा इकाई एवं मुजफ्फरपुर मे इकाई कार्यरत छल जे एखन रुग्णावस्थामे अछि। वस्त्र निगम हाजीपुरमे रेडीमेड गार्मेन्ट एवं पूर्णियामे इन्डस्ट्रियल यार्नक परियोजना छल, जे एखन बन्द अछि। केमिक्ल निगम द्वारा पंडौलमे एकटा स्टार्चक कारखानाक योजना बनल छल, लेकिन बनि नहि सकल। राज्य मत्स्य बीज विकास निगम सीतामढ़ी ओ मधुबनीक रामपट्टीमे माछक जीड़ा पालनक इकाई लगौने छल, जे एखन मरणासन्न अछि। हस्तकरघा ओ हस्त शिल्पक कतेको इकाई कार्यरत छल जे एखन हुकुर-हुकुर कय रहल अछि। लघु उद्योग निगमक कच्चा माल एवं उत्पादन केन्द्र कार्यरत छल, मुदा एखन अस्वस्थ अछि। राज्य सरकारक स्थापित निगम ओ बोर्डमे लगभग 42 अरब टाका हिस्सा पूंजी ओ ऋणक रुपमे लागल अछि। मात्र 25 निगम एवं बोर्ड अपन हिसाब-खाता उपलब्ध कयने अछि जकरा सभ के लगभग 10 अरब टाका स' उपर घाटा भ' चुकल छैक। बाद बांकी 22 निगम अपन हिसाब प्रस्तुत करयमे पूर्ण असमर्थता देखौने अछि।

राज्य सरकारक अधीन 47 बोर्ड ओ निगममे 9 औद्योगिक उत्पादन, 12 ट्रेडिंग ओ सेवा, 4 वित्तीय व्यवस्था, 16 औद्योगिक प्रसार ओ 6 जनकल्याणक हेतु बनायल गेल

छल। 1981-82 मे मात्र 94 करोड़ टाका लागत छल जे 1986-87 मे 660.42 करोड़ भ' गेल।

पर्यटन उद्योग

मिथिलांचलमे पर्यटन उद्योगक असीम संभावना अछि। एतयक प्राचीन सभ्यता, संस्कृति ओ सौन्दर्यक अनेक स्थल, इतिहासक धरोहर, खडहर, तीर्थस्थल, प्राकृतिक बनावट एहि उद्योगक लेल उपयुक्त अछि। एहि अचलक आर्थिक विकासक ई उद्योग महत्वपूर्ण स्त्रोत अछि। एहि स' आर्थिक विकासक संगहि सांस्कृतिक एवं भावनात्मक एकताके बल भेटतै। बहुमूल्य विदेशी मुद्रका आय ओ अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव सेहो बढ़त। पर्यटक लोकनिक हेतु परिवहन, आवास ओ मनोरंजनक आधुनिक सामग्रीक एतय सर्वथा अभाव छैक। जखन कि राज्य सरकार पर्यटन के 21 जनवरी 1987 मे उद्योगक दर्जा देलक। जे सुविधा उद्योग कें प्राप्त छल ओ सब सुविधा आब पर्यटनक काजमे लागल सब अवयवकें प्राप्त होयत। एहि स' रोजगारक अवसर अन्य उद्योगक तुलनामे बहुत अधिक संभव अछि।

एतयक पर्यटन उद्योग विभिन्न बाधा स' ग्रसित अछि। पर्यटन स' सबंधित आधारभूत ढांचा जेना सुन्दर आधुनिक होटल ओ परिवहनक पूर्ण रुप स' विकासक अनुपलब्धता, पर्यटन केन्द्र पर आवश्यक होटल ओ ठहरबाक स्थानक अभाव, पर्यटन स्थल पर व्याप्त गंदगी ओ दूषित वातावरण, योग्य एवं अनुभवी गाइडक अभाव, पर्यटक कें ठकबाक प्रवृति आदि अनेक समस्या स' ग्रसित अछि ई उद्योग। एकर अतिरिक्त एतयक छवि नव रुपमे विभिन्न स्थान पर प्रदर्शित ओ आकर्षक नहि बनायल गेल छैक। भारतमे आबयवला पर्यटक पहिने दिल्ली, मुम्बई ओ कलकत्तामे अबैत अछि। एहि सब स्थानमे एतयक पर्यटक स्थलक प्रचार ओ प्रसार आवश्यक छैक।

भारत सरकार पर्यटन विकासक हेतु 1980 धरि कोनो नीतिगत काज नहि कयलक। सर्वप्रथम छठम पंचवर्षीय योजनाकालमे 8 नवम्बर 1982 के पर्यटन पर पहिल राष्ट्रीय नीति संसदमे प्रस्तुत कयल गेल। एकर प्रमुख उद्देश्य छल, भ्रमणक माध्यम स' राष्ट्रीय ओ अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव कें बढ़ायब, पैतृक सम्पदा एवं संस्कृति के बचाकय राखब ओ नष्ट होयबा स' बचायब एवं समृद्ध बनयबाक हेतु प्रचार-प्रसार, एहि स' रोजगारक वृद्धि, आयक सृजन, राजस्वक प्राप्ति, विदेशी विनिमयक अर्जन ओ मानव व्यवहारमे सुधार। पर्यटन एक अन्तरअनुशासनक विषय थिक। ई कोनो एक संस्था पर निर्भर नहि, अपितु व्यापार थिक। एकर विकासमे राज्य सरकार, केन्द्रीय सरकार तथा सार्वजनिक एवं निजी संस्थाक योगदान अपेक्षित अछि। यद्यपि समस्त भारतवर्ष पर्यटनक दृष्टि स' बहुत संभावनापूर्ण राष्ट्र अछि, परन्तु विश्व पर्यटनक प्रगतिक तुलनामे ई देश अपेक्षित प्रगति नहि कयने अछि।

बिहार पर्यटन विभाग 1980 मे बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम कम्पनी अधिनियमक अतर्गत पजीकरण करौने अछि मात्र राज्यक पर्यटन उद्योग कें विकसित करबाक ध्येय स' मुदा एकर काज एहि क्षेत्रमे नगण्य अछि। राज्य सरकारक माध्यम स' वैशाली ओ सीतामढ़ीमे पर्यटक आवास गृह, वैशालीमे एक डोरमेट्री तथा कैफेटेरिया संचालन कय रहल अछि। पुनौरा (सीतामढ़ी), विद्यापतिनगर (समस्तीपुर), अरेराज (पूर्वी चम्पारण) मे रोडक निर्माणमे काज भेल। मुजफ्फरपुरमे टूरिस्ट भवनक निर्माण कयल गेल अछि। राज्य सरकार जाहि तरहक व्यवस्था कयलक अछि ओतय विदेशी पर्यटकक कथा कोन, देसी यात्री सेहो नहि रहि सकताह। मिथिलांचलमे तीर्थ ओ देवालयक संख्या अनेक अछि, जकर विकास पर्यटन स्थलक रुपमे नहि कयल गेल छैक।

जनकपुर :-जनकपुरमे भ्रातृगण सहित रामचन्द्रक मन्दिर प्रधान अछि। शिवमन्दिर, जानकी मन्दिर, जनक मन्दिर, गंगासागर, धनुः सागर, रत्नसागर, दशरथ तड़ाग एवं अनेक गाछी दर्शनीय अछि। एकर अतिरिक्त एकर समीपमे धनुषा (एक सरोवरमे रामचन्द्रक तोड़ल धनुष दृष्टिगोचर होइछ), याज्ञवल्क्य मुनिक स्थान, गिरिजा स्थान अछि। एखन नेपाल तराइमे ई स्थान अछि, जतय जयनगर स' या जनकपुर रोड (पुपरी) स' गेल जा सकैछ।

सीतामढ़ी : ई स्थान सीताक जन्मभूमि थीक। जनकक सिड़ाउरि स' एकटा कन्याक उत्पत्ति भेल ते हलेश्वरशिव एत' स्थापित भेलाह। जानकीजीक मन्दिर पुनौरामे अछि।

उच्चैठक श्रीदुर्गा तथा श्रीकामदानाथ : ई बेनीपट्टी थानाक समीप अछि। मन्दिरक समीप अति प्राचीन सरोवर अछि। कवि कालिदासक चौपाढ़ि एतय देखल जाइछ। एहि दुर्गा मन्दिरमे आबिकय महाकवि सिद्ध भेलाह।

कपिलेश्वर : ई शिवलिंग महर्षि कपिलक स्थापित कयल ग्राम ककरौड़ मे छैक। ई एकटा महाश्मशान भूमिमे अछि, तथापि रमणीय ओ अति प्रसिद्ध। ई रहिका स' नजदीक पड़ैछ।

राजेश्वरी : ई स्थान मधुबनी जिलका डोकहरमे अछि। मंदिर अति प्राचीन आ ताहि स' पश्चिम बिन्दुसर नामक एक सरोवर अछि।

अहिल्यास्थान : ई स्थान कमतौल रेलवे स्टेशन स' 2 किलोमीटर दक्षिण अहिया गाम मे अछि। ओतय अहिल्याक मन्दिरमे एकटा शिलाखंड आ अहिल्याक पीड़ी बान्हल छनि। एहिठाम गौतमक शाप स' पाथर भेलि अहिल्या कें जनकपुर जयबाक समय विश्वामित्र मुनिक उपदेशानुसार भगवान रामचन्द्र निजपाद स्पर्श स' शापमुक्त कय दिव्य मूर्ति बनौलनि। गौतम कुंड एतय स' 2 किलोमीटर पर अछि।

उग्रतारा स्थान : सहरसा जिलाक महिसी गाममे ई अछि। ताहि मध्य एक जटा नील सरस्वती अक्षोम्य त्रृषि सहित तारा मूर्ति विराजति छथि।

सिंहेश्वर : मधेपुरा जिला स' 4 किलोमीटर उत्तर पंडुआमय तथा धसान नदीक संगम स' पश्चिम भागमे अछि। महादेवक मन्दिर अति प्राचीन छनि। एतय योगिराज श्री रघुवर गोस्वामीक स्थापित कयल सीता, राम, लक्ष्मण आ हनुमानक मूर्ति छनि।

सांस्कृतिक ओ धार्मिक दृष्टि स' मिथिला चर्चित रहल अछि। अन्य धर्मक प्रभाव एतयक संस्कृति कें नष्ट नहि कय सकल। उपरोक्त एव अन्य धार्मिक स्थल के विकसित ओ आधुनिक सरंजाम स' सुरजित कयला स' पर्यटन उद्योगक विकास संभव अछि।

बाल्मीकि आश्रम : मिथिलांचलक उत्तरी-पश्चिमी भागमे एकटा छोट पहाड़ी पेटी अछि जे हिमालय पहाड़क शिवालिक शृंखलाक एकटा अंग छैक। जाहिमे सोमेश्वर शृंखला सब स' महत्वपूर्ण अछि। ई 74 कि.मी. लम्बा भाग पश्चिममे त्रिवेणी नहरक शीर्ष भाग स' शुरु होइछ ओ पूबमे भिखनातोरो दर्रा धरि जाइछ। एतयक किला एहि अंचलक प्रहरी सदृश अछि। एहि पर्वत शृंखलाक पश्चिम छोर पर बाल्मीकिनगर लग गंडक बराज अछि जे एहि अंचल ओ नेपालक संचार सूत्र थिक। एहिठामक पहाड़ पर बाल्मीकि ऋषि अपन आश्रममे निर्वासित सीता एवं हुनक पुत्र लव ओ कुश दुनू भाइकें रखने छलाह। बड्ड रमणीय ई स्थल अछि। गज-ग्राह युद्ध प्रारम्भ होमयवला क्षेत्र गंडक नदीक संकरी घाटीक आन्तरिक भाग दर्शनीय अछि। एखन एतय पर्यटक अबैत छथि, किन्तु आधुनिक सब तरहक सुविधाक अभाव छैक। एकरा विकसित कयला स' विदेशी मुद्राक प्राप्ति सेहो होयत। राज्य सरकार बाल्मीकि योजना पर, जे केन्द्रीय परियोजना अछि, काज शुरु कयने छल।

कुशेश्वर झील : ई झील अति सुन्दर ओ रमणीय अछि। रेलवेक सुविधा नहि छैक। ग्राम रौतामे प्रसिद्ध शिवलिंग अछि। कुश त्रृषिक स्थापित कयल ई महादेव छथि, तें कुशेश्वर नामकरण भेलनि। एतयक झीलमे शीतकालमे अनेक तरहक पक्षी अबैछ आ एतय मनोरम दृश्य रहैत छैक। पर्यटन हेतु एकरा विकसित करब आवश्यक अछि।

मोतीझील : मोतिहारी शहरमे दू किलोमीटर 300 एकड़ क्षेत्रमे फैलल ई झील अछि। कुरिया, करारिया, बसबरिया ओ धनौती झील स' संयुक्त ई झील अन्तमे बूढ़ी गंडकमे मिल जाइछ। 1984 मे एकरा विकसित एवं सौन्दर्यीकरण करबाक हेतु राज्य सरकार 50 लाख टाका व्यय करबाक प्रारुप बनौने छल, मुदा कागते पर रहि गेल। एहि जिलामे 28 झीलक शृंखला 6325 एकड़ क्षेत्रमे पसरल छैक। अइमे 20 फीट जल सब समय रहैत छैक। मानसून मे बाढ़ि आबि जाइत छैक। माछ सेहो होइछ एवं एकर जल स्वास्थ्यक हेतु उत्तम कहल जाइछ। एकर विकास पर्यटनक दृष्टि स' परमावश्यक अछि। बेतियाक सरैयामनि झील कें आधुनिक ढंगक साज-सजावट कयला स' रमणीय स्थल भ' जायत। दरभंगाक हराही, दीग्घी एवं गंगासागर-दरभंगा शहरक मध्य मे तीनू पैघ जलाशय अछि। एकरा जोरि देला स' नौकायणक हेतु रमणीय ओ दर्शनीय स्थान ई भ' जायत।

भीतिहरवा आश्रम : एतय स' मोहनदास करमचन्द गांधी, महात्मा गांधी ओ राष्ट्रपिता भ' गेलाह। देशके अंग्रेजी शासन स' मुक्ति करा सकलाह मुदा ई आश्रम एखन धरि आधुनिक पर्यटक केन्द्र नहि बनि सकल।

मिथिला चित्रकला (मधुबनी पेंटिंग)

उत्तरी बिहारक गंगाक दहिन कछेड स' लयकय हिमालयक तराइ धरि अवस्थित भूभागक चित्रकला आइ मधुबनी पेंटिगक नाम स' विश्वविख्यात भ' गेल अछि। डा माखन झा अपन पुस्तक 'मिथिला-महाकौशल' तथा आर्ट एण्ड स्कल्पचर्ल्स आफ मिथिला' मे मिथिला चित्रकला के अत्यन्त प्राचीन कला कहलनि अछि एवं स्पष्ट कयने छथि जे लगभग ईसा स' 200 वर्ष पूर्व जखन मात्र भित्ति चित्रक कला लोक जनैत छलाह ओहि समयमे मधुबनी चित्रकलाक बोलबाला छल। वैदिक कालमे एहि कलाक प्रचलनक संकेत भेटैछ। न्यूयार्कक रोयल अंटारियो म्यूजियमक कासंस मैथ्यूजक मत छनि जे लोग चित्रकलाक वर्त्तमान शैलीमे मधुबनी पेंटिग के सर्वोपरि मानल जाय।

मिथिला चित्रकलामे सबस' प्राचीन तथा विशिष्ट स्थान 'अरिपन' चित्रक अछि। एतयक महिला द्वारा बनायल अरिपनक अलग छवि ओ सुन्दरता छैक जे ककरो अपना दिस आकर्षित कय लैत अछि। अरिपन आगमनक खुशी, पाबनि ओ उत्सव पर प्रसन्नता ओ प्रेम प्रदर्शित करबाक सुन्दर प्रतीक बुझल जाइछ। मुख्यत: ई पूजा घरक प्रवेश द्वार, तुलसी चौड़ा ओ घरक मुख्य द्वारि पर बनायल जाइछ। कोहबर घरक मुख्य द्वारि भीतर ओ बाहरक देबाल पर कामदेव, रति आदिक चित्र अंकित कयल जाइछ। सोहाग कक्षक चारू कोनमे यक्षिणीक चित्र बनायल जाइत छैक। माछ, काछु, सुग्गा, सिंह, हाथी, घोड़ा, हंस, मयूर, बांस, केरा आदि चित्रक प्रधानता रहैत छैक। देवाल पर दुर्गा, काली, शिव-पार्वती, सीता-राम आदिक चित्र सेहो आंकल जाइछ। मिथिलांचलक अइ कलाकृतिमे हिन्दू धर्म स' लयकय पारिवारिक, सामाजिक तथा लोकप्रिय ग्राम्य कथाक प्रभाव देखयमे अबैछ। एतयक चित्रकलामे शहरी-पाश्चात्य सभ्यताक चमक-दमक स' कोसो दूर गामक सादगी, सरलता ओ निश्छलता स्पष्ट रूपमे झलकैत छैक। एहि जीवत कला पर एहि क्षेत्रक ग्रामीण महिलाक एकाधिकार छनि। आइ यैह कला घरक देवाल, घर-आगनक जमीन, तुलसी चौड़ा ओ कोहवर घरक अलावा कागत, कैनवास, साडी, लहंगा-चुनरी पर उतरिकय व्यावसायिक रूपमे अपना अंचल स' विदेशमे प्रवेश कय गेल अछि। एकर प्रदर्शनी यूरोपीय देश, जापान, रूस, अमेरिका, फ्रांस तथा अन्य देश सभमे भेल छैक। विदेशमे निर्यात होमयवला कलाकृतिमे मधुबनी पेंटिगक मांग सबस' अधिक छैक।

मधुबनी पेंटिगक तकनीक एकदम सरल छैक। बिना रेखांकन के कलाकार लोकनि काज प्रारम्भ करैत छथि। चित्र बनयबाक सामग्रीक नाम पर किछु प्राकृतिक रंग, बांगक तूर तथा बांसक कूची मात्र। पेंटिगक लेल प्रयुक्त रंग वनस्पति ओ जीव-जन्तु स' प्राप्त कयल जाइछ, कारण ई पकिया रंग होइत अछि। सीमक पात स'

हरियर, पलासक फूल स' केसरिया, नीलक पौधा स' नारंगी, काजर स' कारी, हरदि स' पीयर, सुखायल दाडिमक छीलका स' सोनाक रंग, चूकन्दर अथवा गेरु स' लाल रंग तैयार कयल जाइत छैक। रंगक स्थायित्व बरकरार रखबाक हेतु बबूरक दूध अथवा गोंद मिश्रित कयल जाइत अछि। एहिना जंतु स' सेहो रंग बनायल जाइछ। जेना लाहक कीडा स' लाल आदि। किन्तु प्राकृतिक रंग महग ओ दुर्लभ भेलाक कारण बाजारक रंग–पोस्टर रंग ओ अवरोधक कारी रंग प्रयुक्त भ' रहल अछि। पहिने एहि कलाक विषय मात्र पौराणिक लोककथा–राम-सीता स्वयंवर अथवा राधा-कृष्णक रास लीला छल, किन्तु आब ई प्रकृति, बदलैत सामाजिक परिवेश, राजनीति ओ ब्रह्माण्ड धरि पहुंच गेल अछि।

1962 स' एहि उद्योगक व्यवसायीकरण भेल। देवाल पेंटिंग स' कागत ओ कपड़ा पर कलाकार काज करय लगलाह। बादमे सनमाइका सेहो जुटल। ग्रीटिंग कार्ड सेहो बनय लागल। आब कपड़ा, साडी एवं अन्य परिधान पर कला प्रदर्शित भ' रहल अछि। मधुबनी पेंटिंगक व्यावसायिक बाजार देशक कोन कथा यूरोपीय देश रूस, अमेरिका, फ्रांस आदि स्थानमे बिक्रीक हेतु जा रहल अछि। ई उद्योग मधुबनी, [illegible], जितवारपुर, रांटी, रैयाम, सिमरी, लेहरियागंज आदि स्थानमे केन्द्रित छैक। एकर विकेन्द्रीकरण परमावश्यक छैक। ई बेरोजगारी दूर करयमे सहायक सिद्ध भेल अछि। बिक्रीक बाजार आधुनिक ढंगक नहि भ' सकल छैक। कलाकारके उचित मूल्य नहि भेटैत छनि। बीचमे व्यापारी लोकनि नजाइज फायदा लैत छथि।

कसीदा उद्योग

मिथिलांचलक लोककला एतयक सांस्कृतिक लक्षण स' अनुरंजित एवं दार्शनिक तथ्य स' अनुप्रेरित होइत सर्वदा प्रगतिक मार्ग पर दृढ रहल। एहि लोककलामे कसीदाक स्थान बड्ड व्यापक अछि। कसीदा वस्त्र पर रंग-बिरंगक ताग ओ सूई स' बनल एक तरहक साज-श्रृंगारक वस्तु थिक जकर उद्देश्य लोक जीवनक उपयोगिता स' अछि। कसीदाकारीक व्यवसाय छठम शताब्दी पूर्वमे वाणिज्य-व्यापारक सामग्रीमे एक विशिष्ट वस्तु मानल जाइत छल। मुसलमानक राजत्वकालमे कसीदाकारीक बड्ड प्रगति भेल। मुगल सम्राट कलाक प्रेमी छलाह। एहि कालमे ई उद्योग कलात्मक रूप ग्रहण कयलक। मिथिलांचलक अतिरिक्त एहि कलाक प्रसार भोजपुर एवं मगध क्षेत्रमे सेहो पाओल जाइछ।

एतयक कसीदाकारीक विषयवस्तु दार्शनिक तथ्य पर आधारित अलंकारिक रहैछ। एहिमे विभिन्न प्रकारक ज्यामितिक स्वरुपमे उर्ध्व, समानान्तर एवं कोणीय आकारमे रहैछ। एहि तरहक आकारमे प्रधानत: चतुर्भुज, त्रिभुज, वर्ग, वृत्त, कोण, अष्टकोण आदि रहैछ। एकर अतिरिक्त चित्रमे हंस, सुग्गा, माछ, मयूर, हाथी, घोड़ा, बाघ आदि रहैछ, जकरा सबहक पृथक-पृथक दार्शनिक दृष्टिकोण छैक। वनस्पति स' संबंधित चित्र–कमलक फूल, तुलसीक गाछ, आम्रकुंज सेहो पाओल जाइछ। आध्यात्मिक चित्र

सेहो रहैछ। कसीदाक चित्रमे कहारक संग महफा, बर-कनिया, कमल पुष्प, सवार आदिक सबंध मनुष्यक जीवन-मरण स' अछि तथा ओहि चित्रक माध्यम स' आत्मा एवं परमात्माक एकीकरण के दर्शायल जाइछ। कसीदाक चर्चा एतयक लोकगीतमे सेहो पाओल जाइछ।

एहि कलाक तीन भाग अछि–कसीदा, एप्लिक एवं सुजनी। आजुक युगमे एप्लिक कलाक पूर्ण विकास भेल अछि। पहिने मात्र सामयाना, कनात आदिमे चित्रित कयल जाइत छल। आब चादरि, तकिया, साड़ी एवं साज-सामानमे एहि कलाक दिनानुदिन प्रसार भेल जा रहल अछि एवं व्यवसाय सेहो विकसित भेलैक अछि।

एहि क्षेत्रक सुजनी विश्वविख्यात अछि। पुरान, फाटल कपड़ाक कलात्मक रूप मे सुई स' सीबिके सुन्दर मनोहारी बिछावनक आकारमे प्रस्तुत कयल जाइछ। एतयक स्त्रीगण लोकनि निर्मित सुजनी मृदुलता ओ सौन्दर्यताक प्रतीक मानल जाइछ। एतयक एहि क्षेत्रक महान उद्देश्य, आदर्श एवं परम्पराकें लोककलाक रूपमे संयोगिकें रखने छथि जकर व्यावसायिक दृष्टि स' प्रचार-प्रसार प्रारम्भ भेल अछि। एहि कला ओ उद्योग के सरकारी साहाय्य परमावश्यक छैक।

मुजफ्फरपुर जिलाक मुसरा गामक पांचटा महिला 'महिला विकास सहयोग समिति' द्वारा सुजनी उद्योगक विकासमे काज प्रारम्भ कयलनि जकर सदस्यता आब 600 भ' गेल अछि। कम स' कम 5000 टाका प्रति महिला प्रति मास उपार्जन कय लैत छथि। अप्रैल 1999 मे हिनका लोकनिक हाथमे 3 मिलीयन टाकाक सुजनी अमेरिका कें निर्यात करबाक छलनि। 1998 मे अमेरिकामे एकर एक प्रदर्शनी कयल गेल छल। 1999 क मइ 11 स' 16 तक टोरेन्टों ओ लंदनमे एहि सामानक प्रदर्शनी आयोजित कयल गेल। एहि सहयोग सामिति द्वारा सुजनी कलाक विभिन्न प्रकारक सामान तैयार कयल जाइछ। एकर मुख्य क्रेता दिल्लीक सेन्ट्रल कॉटेज इन्डस्ट्रीज इम्पोरियम अछि।

■



कृषि आधारित उद्योग

कृषि विकास स' मात्र कृषक समुदायकें वांछित सुख-सम्पन्नता उपलब्ध नहि भ' सकैछ। एहि पर अर्थशास्त्री लोकनि एकमत भ' गेल छथि। ई सम्पन्नता तखने सम्भव अछि जखन कृषि आ ग्रामीण उद्योगक समागमकें वैज्ञानिक ओ सही दिशा देल जाय। सालोभरि कृषि कार्य नहि रहला स' आ पारिवारिक बंटवाराक कारण सीमान्त किसानक संगहि भूमिहीन मजदूरक संख्यामे वृद्धि भ' रहल छैक। गाममे सुविधा ओ साधनक अभावमे ग्रामीण जन शहर भागि रहल छथि। ताहि दृष्टि स' ग्रामीण समाजक हेतु सालोभरि रोजगारक व्यवस्था परमावश्यक अछि। गामक हेतु कृषि उद्योग एवं अन्य ग्रामीण उद्योगक हेतु संसाधन जुटाबय परतै। एहन उद्योगक हेतु कच्चामाल ओ सस्त श्रमशक्ति उपलब्ध गाममेमे अछि। कृषि एवं ग्रामोद्योगक नव प्रौद्योगिकीक आवश्यकता ओ जानकारी मात्र अपेक्षित अछि।

एहि अंचलमे उर्वर जमीन, पशुधन एवं जल संसाधनक बहुलताक संग सस्त श्रमशक्तिक कारण खाद्यान्न, फल, तरकारी, दूध, मांस, माछ, अंडा, चिरइ आदि खाद्य वस्तुक बहुलताक पूर्ण संभावना छैक। अतः एहि कच्चा माल पर आधारित कृषि उद्योगक हेतु कृषिक उत्पादक वैज्ञानिक ढंग स' कटनी, सुखौनी तथा भडारण; विभिन्न स्थान पर परम्परागत साधन तथा औजारक अतिरिक्त अनाजक समुचित रुप स' सफाई, श्रेणीबद्ध करबाक उन्नत प्रकारक तकनीकक उपयोग; उपभोक्ता के गुणसम्पन्न वस्तुक हेतु जागृत करब तथा कृषकक हेतु विकसित कृषि प्रशिक्षणक प्रचार-प्रसार, बागवानी फसल कें समुचित ढंग स' तैयार करब, सफाई, श्रेणीबद्ध पैकेजिंग ओ भंडारण आदि करबाक सुझाव ओ विचार करबाक चाही। कृषि उपजक परीक्षण हेतु निम्न इकाईक स्थापना तथा सुदृढ़ीकरण कयल जाय सकैछ।

1. चाउर हालिंग : मोतिहारी, मधुबनी, सहरसा ओ सीतामढ़ी जिलामे।
2. दालि मिल : समस्तीपुर ओ बेगूसराय जिलामे।
3. फल परीक्षण : फलमे आम, केरा, लीची, लताम, कटहर, जामुन, बेल, नेबो, पपीता, अनानस, मखान, सिंघाड़ा, टमाटर, बैर आदि। आमक हेतु दरभंगा एवं सहरसा, लीचीक हेतु मुजफ्फरपुर, केराक हेतु कटिहार ओ पूर्णिया, सिंघाड़ा ओ मखानक हेतु दरभंगा ओ मधुबनी, तरकारी, टमाटर आदि हाजीपुर जिलामे परीक्षण केन्द्रक स्थापना संभव छैक।
4. चाह ओ सूर्यमुखी : किसनगंज, अररिया एवं पूर्णिया जिलामे।
5. जूट : पूर्णिया जिलामे।

मुर्गीपालन : मुर्गीपालन बहुत कम पूंजीक लागतबला धंधा अछि। निर्धन ओ धनिक कृषक बहुत कम समयमे उत्पादन तेजो स' बढ़ा सकैत छथि। एहि धंधा स' आमदनी एवं पौष्टिक आहारक अतिरिक्त अनेक लाभ छैक–बचल समयक सदुपयोग, ऐंठ ओ अनुपयोगी पदार्थक उपयोग, पौधाक हानिकारक कीड़ा स' रक्षा करब, मुर्गी-खादक उपयोग खेतीमे कयला स' उपजमे बढ़ोतरी। विकसित ढंग स' उन्नत नस्लक मुर्गा-मुर्गीक पालन-पोषण स' आर्थिक दशामे सुधार संभव छैक।

खरगोश पालन : एकर पालन ऊन, फर, मांस एवं प्रयोगशालाक लेल कयल जाइछ। एकरा कृषि स' प्राप्त उपोत्पाद, घास, चारा आदि दय कय लगभग नगण्य लागत पर पालल जाइत अछि। व्यावसायिक शशक पालन विदेश स' उन्नतशील प्रजातिक खरगोश स' प्रारम्भ कयल जा रहल अछि। एकरा मांसमे वसा तथा कोलेस्ट्रोलक मात्रा अनुपातत: कम होइछ। प्रोटीन अधिक ओ मांस खूब स्वादिष्ट। एकर खाल स' रोआंदार वस्त्र, खिलौना, सजावटी वस्तु आदि बनैत अछि। अंगोरा खरगोस स' उत्पादित उत्तम प्रकारक प्राकृतिक ऊन अत्यन्त गर्म ओ मुलायम होइत छैक। ई स्वरोजगार ओ कुटीर उद्योगक अवसर प्रदान करैत अछि।

बकरी पालन : ग्रामीण अर्थव्यवस्थामे बकरी पालन महत्वपूर्ण धंधा अछि। ई धंधा रोजगार सृजन, धन संग्रह, धन लाभ तथा पारिवारिक पोषणमे पोषक तत्वक पूर्ति करैछ। बकरी अनुपयुक्त झाड़ी तथा पौधाक वृद्धि चरिकय एवं मल-मूत्रस' जमीनक उर्वरा शक्तिकें वृद्धि करयमे सहायक होइछ। ई धंधा बहुत कम लागतमे शुरू कय लाभ अर्जित कयल जा सकैछ। मुख्यत: समाजक दलित, गरीब कृषक ओ भूमिहीन मजदूर एहि धंधा स' जुरल छथि। बकरीक अनेको प्रजाति छैक। दूध, मांस ओ रोंआक उत्पादन स' लाभ प्राप्ति संभव छैक। एकरा व्यावसायिक रुप देल जयबाक चाही।

मधुमांछी पालन : मधुमांछी पालनकें ग्रामीण रोजगार जुटाबयमे ओ आर्थिक स्थितिकें सबल करयमे बड्ड महत्त्वपूर्ण भूमिका छैक। मधुमांछी एकटा सामाजिक कीट थिक। एहि स' अमृततुल्य पौष्टिक, स्वास्थ्यवर्द्धक ओ उपयोगी पदार्थ मधु प्राप्त होइछ। एहि कृषि प्रधान अंचलक हेतु ई धंधा सब तरहें उपयोगी। तेलहन फसिल–सरिसो, तिल, कुसुम, सूर्यमुखी, तीसी; दलहन फसिल–राहरि एवं अन्य; तरकारी-खीरा, कदीमा, सजमनि, करैल, गाजर, मूरै, कोबी, प्याज, आदि; फल–नेबो, खरबुज, तरबुज, लताम आदि उपयुक्त फसलमे बीआ या फलक उत्पत्तिक लेल परागण करयबला कीट या मधुमांछीक आवश्यकता होइत छैक। मधुमांछी द्वारा परागित भेला पर उत्पादनमे वृद्धि ओ उन्नत किस्मक बीज ओ फल प्राप्त होइछ। कृत्रिम विधि स' मधुमांछीक पालन लकड़ीक पेंटी द्वारा कयल जा सकैछ। खादी ग्रामोद्योग आयोग एहि कार्यक्रमकें वृहद पैमाना पर विकसित करबाक प्रयास कयलक अछि। 1993 मे गरीबी दूर करबाक प्रयासक क्रममे सरकार एहि धंधाक सघन प्रचार-प्रसार शुरु कयलक। जवाहर रोजगार योजनाक द्वितीय चरणमे पिछड़ल जिलामे एहि धंधाकें शुरू कयल गेल।

वैशाली जिलाक मिरजानगर गाम छठम दशक स' मधु उत्पादनक हेतु संघर्ष कयलाक बाद विश्व बाजारमे प्रवेश कयलक। 17 जनवरी, 1998 मे मिरजानगर गामक बिहार राज्य निर्यात निगम 40 मेट्रिक टन मधु जर्मनीक हैम्बर्ग पठयबाक व्यवस्था कयलक जकर मूल्य लगभग 22 लाख टाका छल। एहि गामक घर-घरमे ई धंधा भ' रहल अछि। मिरजानगर ग्रामोद्योग समिति एहि धंधाक विकासमे सक्रिय योगदान देलक। साढे छह लाख रुपयाक लागत स' मधु प्रसंस्करण इकाईमे डी ह्यूमिडीटी फायर'क व्यवस्था कयल गेल अछि। एहि गामक देखादेखी गमतारक गाममे ई धंधा विकसित भ' रहल अछि। छोट-छोट इकाई बहुतो स्थान पर कार्यरत छैक।

सूअर पालन : सूअर पालन उद्योग अपेक्षाकृत कम पूंजी एवं कम जोखिम बला धंधा अछि, मुदा एखन धरि एहि अंचलमे व्याप्त सामाजिक मान्यता ओ अंधविश्वासक कारणें ई लोकप्रिय नहि भ' सकल। एहि उद्योगक हेतु सरकार मुक्तहस्त सहायता एवं ऋृण उपलब्ध करबैत छैक। एकटा सुन्दर डेयरी ओ पौल्ट्री फार्म जका पूर्ण वैज्ञानिक पद्धति स' एकरा चलयला पर सफलता निश्चित छैक।

मत्स्य उद्योग : मिथिलांचलमे मत्स्य उद्योग प्राचीनतम धंधाक रुपमे विख्यात अछि। नदी, पोखरि ओ झील आदिकाल स' एतय पर्याप्त सख्यामे छैक। मानव सभ्यताक प्रारम्भिक चरणमे जखन कृषिक विकास नहि भेल छल, माछ मनुष्यक भोजनक मुख्य आधार छल। कैल्शियम, फास्फोरस, आयोडीन, मैग्नेशियम, लोहा आ तामा तत्व माछमे छैक जे भोजनकें समृद्ध बना दैछ। औषधि, खाद, पशु-आहार, तेल, चमड़ा आदिमे सेहो एकर उपयोग होइछ। कृषि पर बढ़ैत बोझ सेहो एहि उद्योगकें विकसित कयला स' कम होयत। एहि अंचलमे माछ पालन कार्य सामान्यत: परम्परागत रुप स' मल्लाह जाति द्वारा कयल जा रहल अछि। मत्स्य पालन आब 'जलीय खेती'क नाम स' जानल जाइछ। एहि खेतीमे माछ, सिंघाड़ा, मखान, घोंघा आदि अछि। जहिना कृषि स' अधिक उत्पादनक हेतु उन्नत बीज, खाद, उर्वरक, चून आदि देल जाइत छैक, तहिना जलीय खेतीक हेतु उन्नत जीरा, खाद, उर्वरक, चून, अतिरिक्त भोजन एवं संचयक बाद एकर देखभाल आवश्यक छैक। ई निर्विवाद अछि जे पानिमे माछकें भोजन स्वत भेटैत छैक किन्तु खाद आदिक उपयोग स' माछक बढ़त होइछ। मिथिलांचलमे मत्स्य पालकके वैज्ञानिक विधिक अज्ञानताक कारण कम उत्पादन होइछ, जखन कि आन्ध्र प्रदेश ओ पश्चिम बंगालमे 2500-4000 किलोग्राम प्रति एकड़ प्रति वर्ष उत्पादन भ' रहल छैक। अनुसंधानक सहयोग ओ सरकारी साहाय्यक बल पर कृषक लघु उद्योगक रुपमे एकरा अपना सकैत छथि। एतय मत्स्य पालन एवं अन्य सबंधित उद्योगक संभावना एहि तरहें संभव भ' सकैछ।

1. मिश्रित मत्स्य पालन : अत्यन्त प्राचीन विधि। एहि पद्धतिमे 6 प्रकारक माछ एक संग पोखरिमे पोसल जाइछ। कतला ओ सिल्वर कार्प पोखरिक उपरका सतह, रोहु एवं

ग्रास कार्प मध्य तल आ मृगल ओ कॉमन कार्प निचला तल पर रहैछ एवं उपलब्ध प्राकृतिक भोजन खाइछ। गोबर, चून, डी.ए.पी., जीरा, सरिसोक खली ओ धानक गूडा सभ खाद्यान्नक सही मात्रामे प्रयोग कयल जाय त' माछक बढ़त उत्तम होयत ओ कुल उत्पादन कम स' कम 2500 किलो प्रति एकड संभव छैक।

2. माछक प्रजनन ओ बीज उत्पादन : एतय कुल मांगक मात्र 30 प्रतिशत जीरा उपलब्ध छैक एवं बाद बांकी पड़ोसी राज्य या बंगलादेश स' अबैछ। सदाबहार पोखरि जाहिमे सालोभरि जल रहैछ ओ 2-3 वर्ष पुरान माछ ओ थोड़ेक वैज्ञानिक प्रशिक्षण स' अपने गाममे जीरा उत्पादन कयल जा सकैत अछि। छोट-छोट मौसमी पोखरिमे सेहो जीरा उत्पादन भ' सकैत छैक।

3. माछ सह पशुपालन : मत्स्य पालनक हेतु जैविक खादक (गोबर) प्रयोग उत्तम मानल गेल अछि। एहिमे सुगरक गोबरआ मूत्रकें बढ़िया कहल जाइछ। पोखरिक भीर पर प्रति एकड़ 16टा सुगर पोसल जाय त' अन्य खादक आवश्यकता नहि। एहि तरहें एक एकड़ जल क्षेत्रक हेतु 200 मुर्गी या 150 बत्तख पोसला स' जैविक खाद उपलब्ध होयत। पोखरिमे कोनो पशुक मल-मूत्र या गोबर गैसक संयत्र स' प्राप्त होमयवला खादक प्रयोग कयल जा सकैछ। एहिस' कृषककें मात्र आमदनी नहि दीर्घकालीन रोजगार ओ पोखरिक भीरक समुचित रख रखाव संभव अछि।

4. माछ सह धानक खेती : पश्चिम बंगाल, आसाम ओ केरलमे धानक खेतमे मत्स्य पालन भ' रहल अछि। एहि प्रयोगमे धानक उत्पादन 15 प्रतिशत अधिक होइछ। धानक खेतक आरि ऊंच रहैछ ओ धान रोपलाक 15-20 दिनक अन्दर माछक जीरा द' देल जाइत छैक जे खेतक कीड़ा-मकोड़ाकें खाइत रहैत छैक। धान भ' गेला पर खेत सुखा जाइछ एवं माछ स्वत: निचला भाग जतय पानी रहि जाइत छैक, जमा भ' जाइछ।

5. वायुश्वासी माछ : एहि श्रेणीमे मांगूर, कवई ओ सिंघी माछ मुख्य अछि। अधिक गहीर पानिक आवश्यकता नहि, दलदल ओ कम पानिवला स्थान। एखन एहि तरहक माछक खेती खूब भ' रहल अछि। अपन बाड़ीमे छोट-छोट खत्ता बना, खाद जीरा दय कयल जा रहल छैक। ई माछ मांसभक्षी होइछ। ई एखन मूल्यवान श्रेणीमे अछि।

6. माछ सह झींगा पालन : काफी फायदेमंद व्यवसाय। अन्य माछक संग एकरा पालल जा सकैछ।

भंडारण ओ शीतगृह एवं त्वरित परिवहनक व्यवस्था स' कृषक लाभान्वित होयताह। सम्पूर्ण अंचलमे मत्स्य पालन आधुनिक ढंगे कयला स' बेरोजगारी समस्याक निदान होयत।

मत्स्य पालन एखन अर्द्धविकसित रुपमे अछि। 1995 मे मत्स्य पालन एहि तरहें भेल :

मत्स्य उत्पादन	200.71 हजार मे. टन
क्षेत्र	2.05 लाख हेक्टेयरमे
पोखरि	95100 हेक्टेयर
मोनि एवं चौरी	35,000 हेक्टेयर
जलाशय	75,400 हेक्टेयर
सदाबहार नदी एवं नहरि	3200 कि.मी.

भारत सरकार द्वारा 49 मत्स्यपालक विकास अधिकरण कार्यरत अछि, किन्तु एहि दिशामे काज एखनो अपेक्षित अछि। राज्य सरकार मत्स्य पालनकें बढ़एबाक हेतु मधेपुरा जिलाक सिंहेश्वर प्रखंडमे हेजरी केन्द्रक स्वीकृति दय देने छैक।

1981क सर्वेक्षणक अनुसार मत्स्य पालनमे 98,000 पुरुष, 76,000 महिला ओ 1,28,000 बाल श्रमिक लागल छलाह। जिलावार विवरण एहि धंधामे लागल क्षेत्रक

क्रमांक	जिला	क्षेत्र (हेक्टेयरमे)	पोखरि ओ जलाशयक संख्या
1.	पूर्णिया	3447.83	2967
2.	कटिहार-अररिया	4175.89	1362
3.	सहरसा	1057.13	1764
4.	मधेपुरा	2741.42	1863
5.	खगड़िया	4640.10	2917
6.	बेगूसराय	1033.96	689
7.	समस्तीपुर	1386.13	1557
8.	मधुबनी	3743.20	4768
9.	दरभंगा	4336.50	3904
10.	मुजफ्फरपुर	1822.01	1590
11.	सीतामढ़ी-शिवहर	2000.00	2780
12.	वैशाली	871.25	1051
13.	पूर्वी चम्पारण	1953.41	4277
14.	पश्चिमी चम्पारण	4003.54	2270

एहि अंचलक 37212.37 हेक्टेयर क्षेत्रक 33759 पोखरि ओ जलाशयमे मत्स्य पालन भ' रहल छल।

फूल उद्योग : फूलक उद्योग नवीन कृषि आधारित उद्योगक रुप ग्रहण कयलक अछि। एहि अंचलमे सब प्रकारक फूल होइछ। किन्तु एतय एकर व्यावसायिक खेतो नहि भ'

रहल छैक। लोक अपन बारी-झाडीमे सुन्दरताक हेतु या भगवानक पूजाक हेतु फूल लगौने छथि। प्रत्येक पैघ शहरमे पूजाक हेतु या अन्य उत्सवक हेतु फूल बाहर स' अबैत अछि। पैघ मन्दिर लग फूल बिकाइत छैक। गुलाबक फूल अनेक प्रकारक होइछ एवं जहिना ई फूलक राजा कहबैत अछि तहिना स्वास्थ्यक दृष्टिस', इत्र बनाकय, विविध पकवान, पान ओ मधुरमे गुलाबजलक रूपमे प्रयोग होइछ। एहिस' गुलकंद सेहो बनायल जाइछ। विदेश निर्यात स' विदेशी मुद्रा प्राप्त होइछ। गुलाब ओ गेंदा फूलक व्यावसायिक खेतीकें एतहु प्रोत्साहन भेटबाक चाही। भंडारण ओ पैकेजिंगक आधुनिक व्यवस्था करय परतैक।

फलक बागवानी : प्रकृति मिथिलांचलकें जल, थल ओ वायुक एहेन संतुलित समिश्रण प्रदान कयने अछि जाहि स' एतय अन्न, गाछ-वृक्ष, तरकारी-तीमन, कन्द-मूल, फल-फूल, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु प्रचुर मात्रामे उत्पन्न कयल जा सकैछ। फल-फूलक खेतीक हेतु एतयक आबोहवा काफी अनुकूल छैक। एकर उत्पादनमे वृद्धि स' मात्र कृषकक आयमे वृद्धि नहि होयत, प्रचुर मात्रामे विदेशी मुद्रा सेहो अर्जित होयत। एहि भूभागकें उत्तर भारतक फलक टोकड़ी कहल जाइछ। लीची, आम, केरा, पपीता, लताम, अनारस एवं अन्य फल सहजें उपजैत अछि। भारतवर्षक कुल उत्पादनमे 1994-95 मे लीची 76.64 प्रतिशत, लताम 20.88 प्रतिशत, आम 19.38 प्रतिशत, पपीता 13.07, केरा 4.60 प्रतिशत एहि अंचलमे भेल छल। लीचीक उत्पादनमे एकाधिकार प्राप्त अछि। केरा एतय प्रति हेक्टेयर भूमिमे मात्र 15 टन होइछ जखन कि महाराष्ट्रमे 53 टन भ' रहल छैक। वैज्ञानिक कृषि पद्धति अपनयला पर चारि गुणा उत्पादन बढ़ि सकैत अछि। जतबे जमीन पर एखन एकर खेती रहल छैक भ' ओतबे स' उन्नत बीज, तकनीको सलाह, परीक्षण, कीटनाशक औषधिक प्रयोग, वैज्ञानिक ओ आधुनिक कृषि पद्धति, भंडारण, शीतगृहक अभाव, ओ सरकारी सहाय्यक कमीक कारण एहि उद्योगक विकास नहि भ' रहल छैक। सब जिलामे शीतगृह अछियो नहि। जे अछि ओकर क्षमता अत्यल्प। शीघ्र परिवहनक सेहो अभाव। राज्य सरकार हाजीपुरमे मात्र एक आधुनिक ढंगक कारखाना बिहार राज्य फल एवं सब्जी विकास निगमक अधीन स्थापित कयने छल। उत्पादन भ' रहल छल। सम्प्रति बन्द अछि। एहि तरहक कारखाना हाजीपुर, दरभंगा, मधुबनी, बेतिया ओ पूर्णियामे स्थापित कयला स' एहि उद्योगक विकास ओ विदेशी मुद्राक प्राप्ति होयत।

तरकारीक बागवानी : मनुष्यक आहारमे तरकारीक महत्वपूर्ण स्थान छैक। सन्तुलित आहार एवं स्वास्थ्य अनुरक्षणक लेल तरकारी परमावश्यक। संतुलित आहारक हेतु 300 ग्राम तरकारी (90 ग्राम जड़िवाला, 120 ग्राम पत्तीवला एवं 90 ग्राम अन्य) आवश्यक। किन्तु एतय एकर उपलब्धता 140 ग्राम स' कम अछि जखन कि क्षेत्रफलक आधार पर एतयक उत्पादन देशक उत्पादनमे प्रथम अछि। एकर उत्पादन हेतु अनुसंधान भेल अछि जाहि स' उन्नत किस्मक विकास; संकर किस्मक प्रयोग (एहि स' अधिक उपज,

फल या उत्पादक आकर्षक रंग, सुडौल आकार, कीट ओ रोगक अवरोधिता तथा अधिक समय तक भंडारणक क्षमता, ओ उत्तम सस्यविधिक विकास संभव छैक।) संगहि एकरा किछु चुनौती सेहो छैक जेना उत्पादकतामे कमी (विश्वक अन्य देशक तुलना), रासायनिक उर्वरक ओ कीटनाशी दवाइक अधिक प्रयोग एवं उचित जल प्रबंधनक अभाव। एहि समस्याक अतिरिक्त उन्नतशील किस्मक बीजक अभाव ओ संकर किस्मक बीजक अधिक मूल्य एकर उत्पादनकें बाधित करैछ। तरकारी शीघ्र खराब होबयवला वस्तु अछि। एहि अंचलमे तोराईक उपरान्त एकरा बाजारमे आनय तथा भंडारणक हेतु शीतगृहक सर्वथा अभाव छैक। एकर फलस्वरूप उत्पादनक एक पैघ अंश उपयोगमे आनयक पूर्वे नष्ट भ' जाइछ। उत्तरी यूरोपीय देश तथा जतय मात्र तेलक उत्पादन होइत अछि, तरकारीक पैघ बाजार अछि। दक्षिण पूर्व एशियामे तरकारीक बीया उपलब्ध नहि छैक। यदि समुचित व्यवस्था भ' जाय तखन एतय स' तरकारी ओ एकर बीयाक निर्यात सुविधा स' भ' सकैछ। संगहि विदेशी मुद्राक प्राप्ति सेहो।

औषधीय वृक्ष : ई बेतिया या तराई नेपालमे उपलब्ध अछि। एखुन बागीमे सेहो लगायल जा रहल अछि। एकर व्यवसाय सेहो संभव।

पपीता स' पपीन : पपीता एक महत्वपूर्ण गुणकारी फल अछि जकर उपयोग काच ओ पाकल दुनू रुपमे पेटक गडबडी ठीक करबाक हेतु कयल जाइछ। पाकलमे ग्लूकोजक मात्रा प्रचुर अछि। पपीन मूलत पपीताक दूध स' तैयार कयल जाइछ। जखन फल परिपक्व भ' जाइछ तखन स्टेनलेस स्टीलक प्लेट लगा देल जाइछ। दूधकें सुखाकय पाउडर बनाकय डिब्बामे बन्द कय बाजारमे बिक्रीक हेतु पठायल जाइछ। दूध सुखयबाक हेतु मशीन उपलब्ध छैक। अंतर्राष्ट्रीय बाजारमे एक किलो पपीनक मूल्य 3000/- टाका अछि। पपीनक बहुत कमी छैक। अढ़ाई हेक्टर भूमिमे पपीताक खेती स' पपीन तथा पपीताक बिक्री स' 6 लाख टाका आसानी स' उपार्जन कयल जा सकैछ। एहि दृष्टि स' एकर खेती ओ पपीन उद्योग कृषकक हेतु पूर्ण लाभप्रद अछि।

नीमक बीया : नीमक पात, डारि ओ बीआ-औषधिक गाछ जानल जाइछ। अथर्ववेद ओ पौराणिक पोथीमे एकर गुणगान एव चर्चा वृहत रुपमे अछि। नीमक केक उर्वरक, नीमक तेलस' साबुन ओ मंजन, कीटनाशक ओ अनेको रोगमे रामबाणक काज करैछ। 1971 मे रोबर्ट लारसेन अपन देश अमेरिकामे ई निर्यात करय लगलाह। डब्लू आर. ग्रेस एतय एक कारखाना लगा रहल छथि जाहिमे सालमे 7500 टन नीमक बीयाक प्रयोग होयत। अन्य विदेशी कम्पनी एहि उद्योगमे अग्रसर भेल छथि। अमेरिका एकरा पेटेंट अपना पक्षमे कय रहल अछि जेना हरदि ओ बासमती चाउरमे कयने अछि। एतयक कृषककें एहि उद्योगक प्रति सचेष्ट भ' जयबाक चाहियन्हि।

मखान : मखान मिथिलांचलक मुख्य उपज एव सब पाबनि ओ धार्मिक काजमे प्रयोग कयल जाइछ। ई 90-120 से.मी. जलमे पोखरि, खत्ता आदिमे उपजायल जाइछ। ई मल्लाह जातिक एक प्रमुख धंधा थिक। भारतवर्षक कुल उत्पादनक 75 प्रतिशत एहि

अचलमे होइछ। एकर उत्पादन एहि अचलक निम्नांकित जिलामे एहि अनुपातमे होइत अछि।

क्रमांक	जिला	कुल उत्पादनक प्रतिशत
1.	मधुबनी	40
2.	दरभंगा	25
3.	सहरसा	20
4.	कटिहार	7
5.	पूर्णिया	5
6.	चम्पारण	3
	कुल जोड़	**100 प्रतिशत**

निकटवर्त्ती राज्य उत्तर प्रदेश, आसाम ओ पश्चिम बंगालमे सेहो उपजैत अछि जे मधुबनीमे फोरल जाइछ। मखान मुख्यतः अमेरिका, इंगलैड, फ्रांस, गल्फ ओ अन्य देशमे निर्यात कयल जाइछ। मखान एतयक मल्लाह स' एजेन्ट लोकनि खरीद लैत छथि एवं कानपुर, कलकत्ता ओ मुम्बईक पैघ व्यापारीक हाथे बेच लैत छथि। एतय स' सामान्य माल स्थानीय बाजारमे बेचल जाइछ एवं बेसी मात्रामे विदेश निर्यात कयल जाइछ। कृषककें मुस्किल स' 10-15 टाका किलो, स्थानीय बाजार (पटना आदिमे) 75-125 टाका किलो, ओ अमेरिकाक बाजारमे 100 ग्रामक हेतु 2-4 डालरमे बेचल जा रहल अछि। एतयक मखानक कृषक पूर्णतया शोषित होयत छथि। बिहार सरकार एहि उद्योग कें कोनो सहायता नहि दैत छैक। जकर फलस्वरुप पहिने 25,000 हेक्टर जलमे उपजायल जाइत छल जे 10,000 हेक्टर भ' गेल अछि। वैज्ञानिक खेती, उन्नत बीज, उर्वरक, भंडारणक सुविधा ओ यांत्रिक प्रयोग स' पैकेजिंग एहि उद्योगक हेतु अपेक्षित।

पानक खेती : महाभारतक काल स' एकर खेती भ' रहल अछि। पाचन क्रिया, दमा, कफ, गला ओ हृदयक कष्टमे औषधिक काज करैछ। सम्प्रति छोट-छोट खेतमे बरेब लगाकय उत्पादन कयल जाइछ। पूर्वी चम्पारण, पश्चिम चम्पारण, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, बेगूसराय, खगड़िया, पूर्णिया, कटिहार, अररिया, किसनगंज, मधेपुरा ओ सहरसा जिलामे उपजायल जाइछ। एकर विकासमे पूंजीक अभाव, कृषककें प्रशिक्षण, तकनीकी कुशलता ओ आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतिक अभाव बाधक अछि। मगही पानक विकास भेला स' विदेशी मुद्राक उपार्जन संभव। पूसामे (समस्तीपुर) आधुनिक ढंगक खेतीक विकास ओ कृषककें प्रशिक्षण ओ सुझाव देबाक व्यवस्था भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा करायल जा रहल अछि। सहकारी समिति द्वारा

विपणनक व्यवस्था लाभकारक होयत। मात्र अपने देशमे नहि अपितु विश्व बाजार उपलब्ध भ' सकत। भंडारण ओ पैकेजिंगक नव पद्धति आवश्यक।

गगनधूलि (कुकुरमुत्ता-मसरुम) : चीनमे सर्वप्रथम एकर खेती होबय लागल। स्वास्थ्यक हेतु उत्तम पौधा मानल जाइछ। अक्टूबर स' अप्रील धरि एकर उत्पादनक हेतु योग्य समय अछि। राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय एकर विकासक लेल अध्ययन कयने अछि एवं मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, वैशाली, पश्चिम चम्पारण, दरभंगा, मधुबनी, सहरसा ओ पूर्णिया जिलामे विकासक हेतु प्रारुप तैयार कयने अछि। वृहत उत्पादनक हेतु कृषकक बीच प्रचार, पूंजीक अभाव ओ तकनीकी अभाव छैक। विदेशी मुद्राक अर्जन संभव। भडारीकरण, पैकेजिंग ओ सहकारी माध्यमस' बिक्री व्यवस्थाक प्रयोजन।

नारियलक खेती : नारियलक व्यावसायिक खेती मिथिलाचलमे नहि भ' रहल छल। बारी ओ दरबाजाक मात्र सुन्दरता हेतु रोपल जाइत छल। आब एकर व्यावसायिक खेती शुरु भ' चुकल अछि। पांच वर्षक भेला पर एकर गाछ नारियल देबय लगैछ। यदि प्रतिवर्ष 50,000 पौधा लगायल एवं प्रति पौधा 15 टाका सबसिडी देल जाय त' 1,50,000 टाका व्यय हयत। पांच वर्षक भेला पर यदि एक पौधा 25 नारियल देबय लागय जकर मूल्य 100 टाका प्रति गाछ हो तखन पांचम वर्षमे 50 लाख टाका आयक संभावना। एहि तरहें ई व्यवसाय लाभकर सिद्ध भ' रहल अछि। एकरा हेतु वैशाली जिलाक महुआ, सहरसा, पूर्णिया एवं कटिहारमे आधुनिक ढगक वैज्ञानिक नर्सरीक प्रारुप प्रस्तुत कयल गेल छैक। कटिहार, पूर्णिया, सहरसा, सुपौल एवं वैशाली जिलाक महुआ क्षेत्रमे नारियलक वृहत खेती संभव छैक। पूर्णिया ओ कटिहार जिलामे व्यावसायिक खेती प्रारम्भ भ' गेल छैक। आवश्यकता छैक भंडारण ओ आधुनिक ढगक कारखानाक जतय नारियलक तेल, साबुन, डोरी ओ झाड़ू वृहत पैमाना पर तैयार भ' सकय।

केराक खेती : हाजीपुर केराक खेतीक हेतु महत्वपूर्ण स्थान आदिकाल स' अछि। गाम-घरक बारी-झारीमे सर्वत्र केरा लगायल जाइछ। मुदा ई व्यावसायिक रुप नहि छल। आब केराक खेती व्यावसायिक रुप लय लेने अछि। गंडक, बूढ़ी गंडक, गंगा ओ कोसी क्षेत्रक माटि ओ जलवायु एकर खेतीक हेतु उपयुक्त। अल्पान, चिनिया, मालभोग, हरीछाल एवं अन्य प्रकारक केरा उपजायल जाइत अछि। राष्ट्रीय राजपथक बेगूसराय स' पूर्णिया, अररिया ओ रेलमार्गक बेगूसराय स' कटिहार धरि व्यावसायिक खेती भ' रहल अछि। वैज्ञानिक भंडारण एवं परिवहनक उचित व्यवस्थाक अभाव छैक। एतय स' मुख्यतः कलकत्ता बिक्रीक हेतु पठायल जाइछ। सहकारी पद्धति स' बिक्रीक व्यवस्था भेला स' कृषकें लाभ होयतैन्ह। एखन उचित मूल्य सेहो नहि भेटैत छैन्ह। एकर समुचित व्यवस्था परमावश्यक। अनानासक ओ लतामक व्यावसायिक खेती एहि क्षेत्रमे प्रारम्भ भेल अछि।

पशु आहार उत्पादन उद्योग : पशु आहारक उद्योग ग्रामीण क्षेत्रक हेतु उत्तम व्यवसाय थिक, कारण पशु आहार उद्योगक मुख्य कच्चा माल कृषि उपज स' संबधित अछि।

एहिमे मशीनक आवश्यकता नहि। राइस ब्रान, सरिसोक खल्ली, चनाक भुस्सा, चनाक दर्रा, दलहनक भुस्सा, गहुमक दर्रा, नोन, गुड़ ओ छोआ आदि कच्चा मालक समिश्रण। राइस ब्रान 70 प्रतिशत लगैछ। एकर अभावमे हॉलर स' चाउर निकालि लेलाक बाद भुस्साक प्रयोग कयल जाइछ। 20 क्विंटल पशु आहार मात्र 4500 टाकामे सभव अछि। हरियर चारा सब समय उपलब्ध नहि रहैछ तें एहि आहारक व्यवस्था उपयोगी ओ बेरोजगारीक समाधान सम्भव।

जलकुंभीक उद्योग : एहि अंचलमे पोखरि, खत्ता ओ नदीक अत्यधिक संख्या अछि। समस्त कोसी प्रमंडल जलकुंभीक महत्वपूर्ण क्षेत्र अछि। एहिमे स्वत: अधिक वृद्ध होइछ ओ शीघ्रे पोखरि, नदी, नहरकें छापि दैछ। एकरा जरिस' उखारि फेकब आसान नहि। जलकुंभीक पौधाकें सुखाकय कम्पोस्ट बनायल जाइछ। एकरा जराकय छाउर बना कय सेहो खाद बनि जाइछ। जल स' बाहर कयलाक बाद तीन-चारि दिन धरि सुखा कय, 6स' 8 ईंच तह लगाकय एवं ओकरा उपर स' मांटिक तह या गोबरक तह लगा देला स' तीन-चारि मासक भीतर सरिकय खाद बनि जाइछ। एहि कम्पोस्टमे 15 प्रतिशत नाइट्रोजन अछि जे गोबरक खाद स' अधिक छैक। जरा देला स' नाइट्रोजन एवं अन्य रासायनिक पदार्थ नष्ट भ' जाइछ किन्तु पोटाश, नोन ओ चूनक प्रभाव रहि जाइछ। दस टन जलकुंभी स' एक टन खाद बनैत अछि एवं एक टनमे मुस्किलस' एक सय टाकाक व्यय। अधिक मात्रामे तैयार कयला स' स्थानीय कृषकक हाथें उचित मूल्यमे बिका जायत।

सौर ऊर्जा : सस्ता, सुलभ ओ निर्भर योग्य ऊर्जाक उपलब्धि आर्थिक विकासक हेतु अनिवार्य। एहि अंचलमे कोयला आधारित ओ पन-बिजली अपूर्ण अछि। आर्थिक पिछड़ापनक मुख्य जिम्मेदारमे एक इहो कारण छैक। सूर्यक प्रकाश जे करोड़ों मील दूर अछि ओकरा धरती पर पहुंचयमे लगभग 8 मिनट लागि जाइछ। यदि एहि प्रकाशकें संचित कयल जाय त वैकल्पिक ऊर्जाक रुपमे जनजीवनक प्रति पैघ उपकार होयत। एहिमे विस्फोटक रासायनिक प्रक्रियाक कारण तापमान 6000 डिग्री आकल जाइछ। प्रति सेकेन्ड हजारों लाख टन गैस हिलियममे परिवर्तित होयबाक कारण लगातार एतेक ऊर्जा उपलब्ध होइछ जे करोड़ो वर्ष धरि खत्म नहि भ' सकैछ। एहि ऊर्जा स्रोतक उपयोग हेतु वैज्ञानिक 'फोटो बोल्टीय सेल' (सोलर मोड्यूल्स) उपकरणकें विकसित कयलैन्ह अछि। एकरा बैट्रीमे मात्र भंडारण संभव भेल छैक। एहि सोलर स' पम्प द्वारा खींचब ओ सिंचाई, पानि गर्म करब, भैक्सीन रेफ्रीजिरेटर, घरमे बिजली तथा बैट्री ओ कनवर्टरक सहायता स' घर-बाहर बिजली ओ बिजली स' चलयबला छोट-छोट उपकरण चलायल जा सकैछ। टाटाक प्रतिष्ठान ब्रिटिश पेट्रोलियमक सहयोग स' अनेको उपकरण बाजारमे प्रस्तुत कयलक अछि। सौर ऊर्जा उपकरणक निर्माणमे वैज्ञानिक नित्य नव-नव उपकरण बना रहल छथि।

बायो गैस : अपारम्परिक ऊर्जा स्रोतमे बायो गैस एक प्रमुख साधन अछि। जाहि गाममे पर्याप्त गोबर उपलब्ध होइछ, ओहि गामक हेतु एक आदर्श संयत्र थिक। 85 घन. मी.

क्षमताक एक संयंत्रस' लगभग 40 परिवारक भोजन बनयबा योग्य गैसक आपूर्ति संभव छैक। एहि स' पटौनी ओ बायो गैस लैम्प स' रोशनीक व्यवस्था सेहो संभव पारिवारिक बायोगैस संयत्र गैसक रुपमे सस्त ओ स्वच्छ ईंधन उपलब्ध करैछ, जाहि स' गैस चूल्हा तथा गैस लैम्प प्रकाशक काज करैत अछि। पवन पम्प स' पटौनी तथा सामुदायिक पेयजल उपलब्ध कयल जाइछ। सोलर ड्रायर स' मिरचाई एवं अन्य फसलकें सुखबयमे ओ लकड़ीकें सिजनिंग कयल जाइछ। बायो गैस संयत्र लगयबाक हेतु सरकारी साहाय्य उपलब्ध छैक। जिला प्रशासन या पटनाक 'ब्रेडा'क कार्यालय स' एहि हेतु सम्पर्क करय परत।

पशुपालन : कृषि प्रधान भूभाग रहबाक कारण एहि अंचलमे पशुपालनक विकासक पैघ आधार अछि। पशुधन उत्पादन ओ पशुधन उत्पादक कृषि जनित ग्रामीण अर्थव्यवस्थामे महत्वपूर्ण स्थान छैक। पशुपालनक माध्यमस' कृषि उत्पादनमे सहयोग, गोबर स' खाद, बायोगैस, सामिष एवं निरामिष जनमानसकें अन्य प्रोटीन एवं पौष्टिक आहार तथा विभिन्न उद्योग-धंधाकें कच्चा माल सुलभ ढंग स' उपलब्ध भ' जाइछ। अथर्ववेदमे गोधनक उपयोगिता ओ अप्रतिम महिमाक बखान कयल गेल छैक। भारतमे हरित क्रांतिक संग श्वेत क्रांति सेहो आयल। किछु अंचलमे मनोनुकुल विकास भेल, मुदा ई अंचल उपेक्षित रहल। श्वेत क्रांति हेतु किछु विदेशी नस्लक गायक आयात भेल। कृत्रिम गर्भाधानक व्यवस्था कयल गेल जाहि स' एतय अधिकाधिक नस्लक गायक उपलब्धतामे वृद्धि सभव हो। मधेपुरा जिलाक दुधारु पशु नस्ल सुधार व्यवस्था प्रगति पर अछि। कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रक लेल तरल नाइट्रोजन एवं हिमांकित शुक्रक व्यवस्था कयल गेल।

तमाकू उद्योग : वैशाली, समस्तीपुर, मुजफ्फपुर, बेगूसराय, सीतामढी, मधुबनी जिलामे तमाकूक खेती होइत अछि। सीएमआइ (जिला प्रोफाइल 1993)क अनुसार 1991 मे तमाकूक उत्पादन निम्न तरहें एहि अंचलमे भेल छल। ओना अपना खयबाक हेतु लोक बारीमे सेहो उपजबैत छथि। सरैसा कोटिक तमाकू (सरैसा-दलसिंहसराय) विश्व-प्रशिद्ध अछि।

क्रमांक	जिला (टन मे)	उत्पादन
1.	वैशाली	8216
2.	समस्तीपुर	5970
3.	मुजफ्फरपुर	1467
4.	बेगूसराय	230
5.	सीतामढ़ी	151
6.	मधुबनी	65
	कुल जोड़	**16,099**

सर्वप्रथम पूसामे आ दोसर दलसिंगसरायमे 19म शताब्दीमे सिगरेटक कारखाना खुजल। पूसामे उच्च कोटिक सिगार बनैत छल। परिवहनक असुविधाक कारण दुनू कारखाना बन्द भ' गेल। मात्र मुजफ्फरपुरमे एक आधुनिक ढंगक जर्दा फैक्टरी कार्यरत अछि। हाजीपुर ओ दलसिंहसरायमे आधुनिक ढंगक सिगरेटक कारखाना स्थापित कयल जा सकैछ।

तमाकू स' बोड़ी ओ पिनी सेहो बनायल जाइत अछि। दुनू उद्योग अविकसित रुपमे कुटीर उद्योगक रुपमे एहि अंचलमे चलि रहल छैक। बीड़ीक उत्पादन दलसिंहसरायमे पैघ पैमाना पर भ' रहल अछि। दुनू उद्योगक विकास भेला स' कृषकक बेकारी बहुत हद धरि दूर होयत।

सलाइ उद्योग : एहि उद्योगक हेतु एहि अंचलमे पर्याप्त साधन उपलब्ध छैक। एतयक जंगल ओ तराइक भाग स' एकरा हेतु यथेष्ट लकड़ी उपलब्ध होयत। दरभंगा ओ कटिहारमे सलाइक कारखाना बनल छल। किन्तु एखन दुनू कारखाना बन्द अछि। बीरगंज ओ विराटनगर (तराइ क्षेत्रक) कारखाना कार्यरत अछि। उचित परिवहन ओ सामान्य पूंजीक व्यवस्था कय एहि उद्योगकें चालू कयल जा सकैत छैक।

सीप बटन ओ गहना उद्योग : बुढ़ी गंडक नदीमे उत्तम कोटिक 4000 प्रकारक घोंघा पायल जाइछ। मोतिहारी जिलाक मेहसी प्रखंड एहि नदीक तट पर अछि। ओना बहुतो भूभाग एहि नदीक तट पर बसल छैक, मुदा बटन उद्योग एतहि केन्द्रित अछि। 1905 मे राय भुलावन राय प्रथम बटनक कारखाना राष्ट्रीय राजपथ 33 पर स्थापित कयल। ओ जापान स' एहि उद्योगक जानकारी हासिल कयलनि। प्रारम्भमे ई हाथ स' काटल ओ तैयार कयल जाइत छल। बादमे यांत्रिक उपकरणक प्रयोग होबय लागल। एहिमे कार्यरत श्रमिकलेल ई स्वास्थ्यक दृष्टि स' बढ़िया रहल। हाथ स' तैयार करब अस्वास्थ्यकर छल। एहि उद्योगमे बाल श्रमिक सेहो काज करैत छथि। यद्यपि हाथ स' काज करयबला औजारक मूल्य मात्र 2500 टाका छैक। प्रति इकाईमे 10-20 श्रमिक काज करैत छथि। 300 स' उपर इकाई कार्यरत अछि।

प्लास्टिक बटनक निर्माण स' एहि उद्योगकें पैध धक्का लागल छैक। प्लास्टिक बटन सस्त होइत अछि ओ दर्जी लोकनि एकरा प्रथम स्थान दैत छथि। एहिस' एतयक बटन उद्योगकें पैध आघात पहुंचलैक अछि।

एहि उद्योगमे लागल कारीगर लोकनि सेल स' गहना-औंठी, कानक बाला, नेकलेस आदि बयनबा लगलाह। एहि धंधामे लागल व्यापारी-अंसारी, पी. बी. लाल सिंह, रामाशंकर ठाकुर आदि जोर-शोरस' धंधामे लागल छथि। कानपुर, कलकत्ता, इलाहाबादमे एतुक बटनक बढ़िया बाजार छैक। संगहि एतयक बटन ओ गहना आदि विदेश सेहो जाइत अछि। जकर लाभ एतयक उद्योगपति नहि बाहरक व्यापारी उठबैत छथि। परिवहन, बाजारक आधुनिक सुविधा, बिजलीक आपूत्ति, आदि सरकारी सहायता पूर्णरुपेण व्यवस्था अपेक्षित अछि।

सूर्यमुखीक खेती : एहि अंचलमे सूर्यमुखीक खेती नहि होइत छल। गत तीन-चारि वर्ष स' कारगिल कम्पनी, इंडो अमेरिकन कम्पनी आदि एकर उत्पादनक हेतु ग्रामीण क्षेत्रमे घूमि-फिरिकय सशक्त प्रचार द्वारा कृषकें एकर खेतीक हेतु उत्साहित कयलक। फलस्वरुप एतय सूर्यमुखीक खेती होबय लागल। जहिना जूटक हेतु फरबरी-मार्चक आसपासक समयमे बागु कयल जाइत छल, एकरो बागु करयक वैह समय छैक। पूर्णिया-अररिया-किसनगंजक इलाका जूटक खेतीक हेतु अदौस' उपयुक्त रहल, दोमस मांटिक कारण। यैह मांटि एकरो खेतीक हेतु उपयुक्त छैक।

जूटक खेती स' एहि भूभागक कृषक हतोत्साहित भ' गेल छथि। कारण एतयक जूट मिल सब चारि-पांच वर्ष स' बन्द अछि। दोसर कारण कलकत्ताक जूट मिलक बन्दी जाहिमे एतयक जूटक खपत छल। भारत सरकारक तैसर जूट मैन्यूफैक्चर्स डेवलपमेंट कौंसिल लम्बा-चौड़ा मात्र घोषणा कयलक। 1987 मे काझामे स्थापित 'जूट व्यवसाय प्रशिक्षण सह उत्पादन केन्द्र' आर्थिक साधनक अभावमे बन्द भ' गेल। चारिम जूट कारपोरेशन आफ इंडियाक एतय कार्यलय छैक मुदा अर्थाभावक कारण जूटक खरीद नहि कय पाबि रहल अछि। जकर फलस्वरुप किसानकें मंडी (मुख्यकय गुलाबबाग) मे व्यापारीक मोहताज होबय परैत छन्हि ओ उचित मूल्य नहि भेटैत छन्हि। एहि दुरावस्था स' किसान तंग भ' सूर्यमुखीक खेती शुरु कय देलैन्ह। 1998 मे पूर्णिया, अररिया, किसनगंज ओ कटिहार जिलामे खेतक रंगे बदलि गेल। ओतय आब मात्र सूर्यमुखी देखयमे आओत। एकर अलावा दलसिंहसराय ओ अन्य भागमे सेहो छिटपुट खेती शुरु भेल छैक।

एहि क्षेत्रमे सूर्यमुखी. स' तेल पेरबाक एकोटा कारखाना नहि अछि। पूरा उपजा महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, कलकत्ता ओ राजस्थानक व्यापारी सस्त मूल्यमे कीनि लैत छथि ओ कृषक शोषित होइत छथि। सूर्यमुखी तेलक मिल आसानी स' एतय स्थापित कयल जा सकैत अछि।

चाहक खेती : चाहक खेती एहि अंचलमे नहि होइत छल। 1992 मे किसनगंजक एक व्यापारी अपन रेडीमेड गारमेन्टक धंधाकें तिलांजलि दय एकर खेतीमे अग्रसर भेल छथि। एतयक प्राकृतिक अवदान सिलीगुड़ी (पश्चिम बंगालक) समान छैक। 1000 एकड़ भूमिमे चाहक खेतीमे 6 करोड़ टाका लागत अबैत छैक जाहिमे संयत्र सम्मिलित अछि। किसनगंजक करीब 3000 एकड़ भूमिमे चाहक खेती भ' रहल छैक एवं उत्पादन 40-50 लाख किलोग्राम होइत छैक। 1998 मे 6000 एकड़ भूमिमे एकर खेती भेल। एकर खेतीमे संलग्न कृषक भूमिक सीमाक विरोध एवं उद्योगक श्रेणीमे परिगणित करबाक हेतु संघर्षशील छलाह। 10 फरबरी 1999 के बिहार सरकार चाहक उत्पादनकें उद्योगक श्रेणीमे मानि लेने अछि। भूमि सीमाक मांग अस्वीकृत कय देलक। पोठिया एवं ठाकुरगंज प्रखंडक कृषक मुख्य रुप स' चाहक खेतीमे लागल छथि।

चाहक व्यापारमे असुविधा भ' रहल छैक। वित्तीय संस्थानक सहयोगक अभाव

एवं सरकारक समुचित साहाय्य स' सेहो बंचित अछि। चाहक निर्यात व्यापारक सुविधा नहि अछि। टी बोर्ड एव बिहार सरकारक पदाधिकारी द्वारा किसनगंज जिलाक पोठिया, ठाकुरगंज, किसनगंज, बहादुरगंज ओ दिग्घलबैंक प्रखंडकें चाह उत्पादनक भूभाग घोषित कयलक। प्रति एकड़ 40,000 रुपया सब्सिडीक रुपमे प्रत्येक चाह उत्पादककें देल जायत। एहिस' 10,000 श्रमिकके रोजगार भेटत एवं एहि क्षेत्र स' श्रमिकक पलायन रुकि जायत। चाह प्रसंस्करणक प्लान्ट सेहो लगायल जायत। चाह उद्योगकें भूमिक कमी, लैंड सीलिंग ऐक्ट, खेतीमे नव प्रौद्योगिकी एवं एहि पर लगायल जाय वला कर एकीकृत नहि अछि। चाहक खेतीमे अधिक स' अधिक वित्तीय सहयोगक प्रावधान अपेक्षित छैक। कारण एहि उद्योगमे विदेशी मुद्रा अर्जन करब एवं बेरोजगारकें रोजगार प्रदान करबाक पूर्ण संभावना अछि।

समेकित ग्राम विकास कार्यक्रम : एहि कार्यक्रमक अन्तर्गत गरीबोमे सबस' गरीबके सम्मिलित कयल गेल छैक जाहिमे लघु ओ सीमांत कृषक, खेतिहर ओ खेतिहर मजदूर ओ शिल्पकार अबैत छथि। ओ व्यक्ति जे निर्धनताक रेखाक नींचा गुजर-बसर करैत छथि। अर्थात 4800 टाका स' कम आय-स्तरवला लगभग पांच व्यक्तिक परिवार। एहि कार्यक्रमक मुख्य उद्देश्य गामवासी परिवारक आयमे वृद्धि करब, जाहिस' ओ निर्धनताक रेखा स' उपर उठि सकैय। कृषि, पशुपालन, मत्स्य उद्योग, ग्रामीण ओ कुटीर उद्योगक माध्यम स' सहायता कयल जाइछ। ई 1978-79 मे सम्पूर्ण देशक 2300 विकास प्रखंडमे शुरु कयल गेल एवं प्रतिवर्ष 300 प्रखंड एहिमे सम्मिलित कयल जाइछ। छठम पंचवर्षीय योजनाकालमे 150 लाख परिवारकें सहायता देबाक प्रावधान छल। सातम योजनाकालमे 182 लाख परिवारकें सहायता देल गेल। TRYSEM ओ DWCRA कार्यक्रमक अन्दर गामक नवयुवक ओ नवयुवतीके प्रशिक्षण देल गेल, स्वरोजगारक हेतु। 47 प्रतिशत लोक अपन रोजगार प्रारम्भ कयलनि। एहि कार्यकमक सही पालन नहि भेल। बिचौलिया निर्धन वर्गक सबस' कमजोर व्यक्तिके बैंक स' उपलब्ध होमयवला धन हरपि लेलक। नाबार्डक एक सर्वेक्षणक अनुसार मात्र 22 प्रतिशत लाभान्वित परिवार निर्धनताक रेखा स' उपर उठि सकला।

खाद्य ओ कृषि प्रसंस्करण उद्योग : मिथिलांचलमे फल ओ साग-सब्जी अत्यधिक मात्रामे उपजायल जाइछ। साग-सब्जीमे आलू, प्याज, लहसुन, आद, टमाटर, परोर, भांटा, रामतरोय, मटरक छिमी, बीन आदि प्रमुख अछि। फलमे आम, लीची, केरा, लताम, अनानस, कटहर, पपीता, बैर, जामुन आदि। आम ओ केराक अनेको विभेद एतय उपजायल जाइछ। मसालामे मिरचाई, धनी, हरदि मैथी आदि। कुसियार, तमाकू, चाह ओ जूट सेहो उपजायल जाइछ । निम्नलिखित खाद्य प्रसंस्करण उद्योगमे पूंजी निवेश लाभप्रद होयत। **1.** टमाटर प्रसंस्करण **2.** आलू आधारित उद्योग **3.** डिब्बा बन्द सब्जी उद्योग **4.** फलक पल्प ओ रस उद्योग (आम, लीची ओ अनानस) **5.** डिब्बाबन्द फल **6.** केराक सामान **7.** फल आधारित स्क्वैस ओ वीमरेज **8.** आम ओ

लीचीक पैकेजिंग–देसी ओ विदेशी व्यापारक योग्य **9.** मसालाक पाउडर–मिरचाई, धनी, हरदि, लहसुन ओ आद **10.** आटा, मैदा, सातु ओ बेसन मिल **11.** चाउर, दालि, चूड़ा मिल **12.** तमाकू आधारित–जर्दा, सिगरेट, बीड़ी ओ पीनी **13.** जूटक सामान, सजावट ओ अन्य।

भारत सरकार खाद्य प्रसंस्करण उद्योगकें बैक ओ वित्तीय संस्था द्वारा ऋणक हेतु वरीयता क्षेत्रक परिभाषाक अन्तर्गत स्थान देलक अछि। खाद्य प्रसंस्करण उद्योगक स्थापना, विस्तार एवं आधुनिकीकरणक हेतु ऋण उपलब्ध करायल जायत। 1999-2000क बजट प्रावधानमे कृषि उत्पादनक हेतु प्रशोधन शृंखला सुविधा स्थापित करबाक वास्ते करमे छूटक माध्यम स' विशेष प्रोत्साहन देलक अछि। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग पर सहायताक दृष्टिस' विशेष जोर देल जा रहल छैक। एहिमे फसलक बादक आधारभूत ढांचाक विशेष कय शीत भंडारण सुविधाक स्थापना, खाद्य प्रसंस्करण एवं उद्योगक विस्तार आधुनिकीकरण शामिल कयल गेल छैक। विदेशी निवेशक विशेष सुविधाक प्रावधान सेहो कयल गेल छैक।

जनवरी 1998 मे खाद्य प्रसंस्करण उद्योग कें भारत सरकारक वित्त मंत्रालय प्राथमिक उद्योगक क्षेत्रमे वर्गीकृत कय देलक, जाहि स' एहि क्षेत्रक उद्योगकें वित्तीय संस्था स' ऋण प्राप्त भेला पर कम ब्याज लागत। खाद्य प्रसंस्करण विभाग द्वारा 32 राज्य ओ केन्द्र क्षेत्रमे नोडल एजेन्सी बनायल गेल छैक। एहि उद्योगक आधारभूत संरचनाक हेतु 4 करोड़ टाका अनुदान उपलब्ध करायल जायत। खाद्य प्रसंस्करणक हेतु औद्योगिक प्रांगण/पार्क/अनुसन्धानशाला/शीत गृह भंडारणक हेतु 4 करोड़ टाका देल जायत। ई दुनू सुविधा सरकारी क्षेत्र/संयुक्त उपक्रम/निजी क्षेत्र/सहकारी क्षेत्रक उपक्रमकें उपलब्ध होयत। भ्रमणशील खाद्य प्रसंस्करण इकाई कें सरकार 2 करोड़ टाका धरि उपलब्ध करायत। किन्तु राज्य सरकार नवम पंचवर्षीय योजनामे एहि उद्योग पर कोनो प्रावधान नहि कयने अछि। जखन कि सब्जी उत्पादन क्षेत्रमे सम्पूर्ण देशमे दोसर स्थान ओ फल उत्पादनमे तेसर स्थान एहि राज्यकें छैक। जखन कि 82 प्रतिशत एतयक लोक कृषि आधारित जीवकोपार्जन करैत छथि। वार्षिक बजटक प्रावधानमे कृषि क्षेत्रमे मुख्यत: वेतन ओ मजदूरी पर व्यय होइछ। भारतीय उद्योग परिसंघ एहि क्षेत्रक विकासक अपन सविस्तर सुझाव देने अछि। अपन सुझावमे कहने अछि जे एहि राज्यमे 35 लाख टन फल–आम, लीची, केरा, लताम, अनानास आदि तथा 20 लाख टन तरकारी-आलू, प्याज, रामतरोय, परोर, मटरक छिमी, टमाटर, सीम आदिक उत्पादन होइछ। मिरचाई, लहसुन, हरदि, धनी आदि मसालाक उत्पादनमे अग्रणी अछि। एहि हेतु कृषिक आधुनिकीकरण, उन्नत पटौनी प्रणाली, बायो टेकनोलोजी, पोस्ट-हारवेस्ट टेकनोलोजी तथा खाद्य एवं फल प्रसंस्करण उद्योगमे पूंजी निवेशकें स्वागत करब। आवस्यक अलकोहल तथा मदिराक उत्पादन ओ छोआ पर आधारित अन्य रसायन उद्योग तथा समन्वित चीनी उद्योग कॉम्पलेक्सक स्थापना सम्पूर्ण आर्थिक अन्त:शक्तिक

दोहनक हेतु आवश्यक। मिथिलांचलक आत्मा गाममे निवास करैछ। एखनो अधिकांश लोकक जीविकोपार्जनक आधार गाय, बड़द, महींस, बकरी एवं अन्य पशु अछि। कृषि संबंधी अनेको काजमे पालतू पशु काफी सहयोग दैछ। पशुधन एतयक पैघ सम्पत्ति मानल जाइछ। एतय पशुपालन मुख्यतः दूध, घी एवं दूधक अन्य पदार्थक प्राप्तिक हेतु, गोबर एवं मूत्र खादक लेल, चमड़ा ओ खालक लेल, हड्डीक हेतु, गोबरसं जलावनक हेतु गोइठा ओ चिपरीक हेतु, रोजगारक लेल, यातायातक साधनक रुपमे एवं कुटीर ओ ग्रामीण उद्योगक आधारक रुपमे कयल जाइछ। कुटीर उद्योगमे मुख्य अछि–दूध, घी, आइसक्रीम, मिठाई, पनीर, दही, मट्ठा आदिक धंधा, माल-जालक हड्डीसं खाद, स्टार्च ओ सोंधसं ककबा तथा खेलौना, चमड़ा तथा ऊन उद्योग, गोबर गैस प्लान्ट आदि। एहि अंचलमे दूधक व्यवसाय एखनो प्राचीन ढंगक अछि। श्वेत क्रांति आयल मुदा छिटफुट स्थान पर वैज्ञानिक पद्धतिसं दूधक उत्पादन ओ प्रसंस्करण भ' रहल अछि। पूरा अंचलमे ई उद्योग एखनो अविकसिते अवस्थामे अछि। सम्प्रति निम्नांकित स्थानमे दूध प्रसंस्करणक इकाई कार्यरत अछि :

क्रमांक	स्थान	क्षमता
1.	बरौनी संयुक्त दूध प्लान्ट बरौनी– दूध, घी, पाउडर, दूध	1,00,000 लीटर प्रति दिन
2.	मिल्क स्कीम दरभंगा-दूध	1,00,000 लीटर प्रति दिन
3.	मुजफ्फरपुर डेयरी– दूध, दही, लस्सी, पेड़ा	25000 लीटर
4.	हाजीपुर डेयरी दूध	10000-20000 लीटर
5.	समस्तीपुर चिलिंग सेन्टर	20,000 लीटर
6.	खगड़िया चिलिंग सेन्टर	20,000 लीटर
7.	सीतामढ़ी चिलिंग सेन्टर	3,6000 लीटर

बरौनी ओ मुजफ्फरपुर इकाईके छोड़ि उपरोक्त कोनो प्लान्ट अपन पूर्ण क्षमतामे कार्यरत नहि अछि।

1983 मे बिहार सरकार दुग्ध उत्पादन गुजरातक आनन्द पैटर्न पर करबाक योजना बनेलक। तदनुसार बिहार स्टेट कोआपरेटिव मिल्क प्रोड्यूसर्स फेडरेशन लिमिटेड बनायल गेल। एकर उद्देश्य छैक दूधक हेतु नीति निर्धारण एवं मिल्क यूनियनक माध्यमसं दूधक उपलब्धता, प्रसंस्करण ओ विपणन व्यवस्था। संगहि मालक गर्भाधान, माल-जालक बीमारी ओ ओकर उपचार, टीकाकरण, पौष्टिक आहार आदिक व्यवस्था। गाम-गाममे दूध सहकारी समिति बनायल गेल अछि। ओतय सं' दूधक संग्रह होमय लागल एवं निर्धारित केन्द्र पर दूध ठंडा करबाक हेतु पहुंचय लागल अछि।

■

मिथिलांचलमे व्यापार

प्राचीन कालमे ई अंचल आर्थिक दृष्टि सं' स्वावलम्बी छल। एतय दैनिक आवश्यकताक पूर्ति कृषि ओ गृह-उद्योग द्वारा भ' जाइत छल। एतयक उर्वर भूमिमे पर्याप्त खाद्यान्न फल, तरकारी ओ गृह उद्योगक हेतु कच्चा मालक उत्पादन भ' जाइत छल। एतय गृह उद्योग पूर्ण विकसित अवस्थामे छल। वैदिक युगमे व्यापारी लोकनि सुदूर प्रान्तक यात्रा करैत छलाह; जिनकर उद्देश्य मात्र धनोपार्जन छल। एहि निमित्त ओ पूंजी लगाय विविध देशक वस्तुक आयात-निर्यात करैत छलाह। विदेहक राजधानीकें गन्धारक संग व्यापारिक संबंध छल। ई व्यापारिक संबंध मुख्य रूपें जलमार्ग सं' छल। एतयक आन्तरिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारक दिग्दर्शन गुप्त एवं पाल राजा लोकनिक राजत्व कालमे होइत अछि। चौदहम-पन्द्रहम शताब्दीमे मिथिलांचलक व्यापार स्थल तथा जल मार्ग द्वारा होइत छल। स्थल मार्गक मुख्य साधन छल घोड़ा, बड़द, कठहीगाड़ी, गदहा एवं भरिया। तीरभुक्ति मे नौवहन योग्य नदीक भरमार अछि। प्राचीनकालमे गंगा, गंडक, बूढ़ी गंडक, बागमती, तिलयुगा, कोसी, महानन्दा ओ अनेक सहायक नदी मार्ग सं' सम्पन्न एहि अंचलमे निकटवर्ती क्षेत्र सं' नाव द्वारा व्यापार होइत छल। ओहि समयमे स्थान-स्थान पर हाट लगैत छल। विभिन्न हाटक नामकरण ओकर वस्तु विशेषक आधार पर होइत छल जेना धनहट्टा, सोनहट्टा, मछहट्टा, बड़दहटा आदि। सत्रहम शताब्दीक प्रारम्भहिमे डच, पुर्त्तगाली लोकनि सर्वप्रथम कलकत्तामे तदुपरान्त तिरहुतमे कारखाना सबहक स्थापना कय व्यापारकें प्रोत्साहित कयलनि। एकर सबसं' अधिक आर्थिक प्रभाव एतयक कृषि ओ उद्योग पर परल। कतेको वस्तुक खेती व्यापार हेतु आरम्भ भेल। कृषिक वाणिज्यीकरणक संग-संग अठारहम शताब्दी मे एतय विदेशी द्वारा शोरा ओ नील उद्योग के प्रोत्साहन देल गेल। व्यापार समुन्नत अवस्थामे छल तथा प्रायः देशक प्रत्येक भाग सं', मुख्यतः कलकत्ता, मुर्शिदाबाद तथा ढाकाक संग छल। आन्तरिक व्यापार अधिकांशतः जलमार्ग सं' नावक द्वारा एवं स्थल मार्ग सं' बैलगाड़ी द्वारा होइत छल। तराइ भाग सं' अधिकांश व्यापार पैदल भरिया द्वारा आ बखो से होइत छल। पहाड़ सं' लकड़ी नदी मार्ग द्वारा भसियाके आनल जाइत छल एवं मुख्यतः कलकत्ता पठा देल जाइत छल। चीन सं' रेशमी वस्त्र अबैत छल–ल्हासा ओ मोरंगक मार्ग सं' चाउर ओ लाहक लस्सा भुटान जाइत छल ओ ओतय सं' उनी वस्त्र ओ घोड़ा अबैत छल।

उनैसम शताब्दीक आरम्भ सं' अन्तधरि एतयक व्यापार साधारणतः पूर्ववत रहल। मुख्य व्यापार नदी मार्ग सं' होइत रहल। नदीक तट पर नव-नव व्यापार केन्द्र स्थापित भेल। गंडक तट पर हाजीपुर, लालगंज ओ बगहा, बागमतीक तट पर दरभंगा, कमतौल, बूढ़ी गंडकक तट पर खगड़िया, रोसरा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, कोसीक

तट पर रानीगंज, नाथपुर, साहेबगंज, राजगंज, रामपुर डुमरिया, देवीगंज, टालीगंज, खवासपुर आदि व्यापार केन्द छल। कारढगोला भवानीपुर सेहो एकरे तट पर छल। तहिना महानन्दाक तट पर दुलालगंज, कलियागंज, देवागंज आदि छल। व्यापारक मुख्य वस्तु छल चीनी, तीसी, तमाकू, मिरचाई, गहूँम, सुपारी, चाउर ओ नोन। कोसीक प्रबल बाढ़ि स' नाथपुर उनैसम शताब्दीक मध्यमे नष्ट भ' गेल तथा 1864 मे साहेबगज बाजार पूर्णरुपेण नदीक बाढ़ि स' उजड़ि गेल, जाहि स' एतयक उद्योग ओ व्यापारके आघात पहुंचल। पटना तथा कलकत्ता स' नावक द्वारा नोन, दालि, नीलक बीआ, सूती वस्त्र ओ मशाला आदि मंगाओल जाइत छल। चाउर दिनाजपुर, मालदह, मुर्शीदाबाद स' मंगायल जाइत छल। एतय स' तमाकू बाहर पठायल जाइत छल।

आरम्भ स' ई अंचल उद्योगक दृष्टिस' आत्मनिर्भर रहल। घरेलू उद्योगक स्थान मनुष्यक जीवनमे पैघ छल। विभिन्न जातिक लोक विभिन्न प्रकारक छोट-मोट कारखानामे कार्यरत छलाह। ईस्ट इंडिया कम्पनीक आगमनक बाद एतयक लघु उद्योग मृतप्राय होमय लागल तथा लोकक जीवनमे विदेशी वस्तु अपन महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कयलक। 1877 ई. मे मिथिलांचलक गृह उद्योगमे माटिक बर्त्तन, रंग बनयबाक कारखाना, कागत उद्योग आदि छल। ई सब उद्योग अपन आन्तरिक व्यापारक हेतु प्रसिद्ध छल एवं जतय पठायल जाइत छल ओत' अपन धाक बढ़िया जमौने छल। मधुबनी शहर खादी वस्त्रक उद्योग हेतु महत्वपूर्ण छल। एहि वस्त्रक सोंझा विदेशी कपड़ा झूस साबित भ' जाइत छल। पूर्णियाक उज्जर मलमल, जकरा 'खस' कहल जाइत छल, अपन विशिष्ट स्थान रखने छल। ईस्ट इंडिया कम्पनी प्रचुर मात्रामे खस खरीद कय अपन व्यापार चलौलक। बादमे मुर्शीदाबाद ओ कलकत्ताक व्यापारी सभ एकरा कीनकय अपन व्यापार प्रशस्त कयलनि।

उनैसम शताब्दीक अन्तमे रेल पथक निर्माण प्रारम्भ भ' गेल। नदी सब पर कतेको रेलवे पुल बनल। जाहि स' नदी सबमे पांक जमा भ' गेल ओ नदी सब उथर भ' गेल। फलस्वरुप एतय नदी सब नौतरण योग्य नहि रहल। एतयक जल-मार्गी व्यापार एहि शताब्दीक अन्त होइत-होइत समाप्त भ' गेल। स्थल मार्गीय व्यापार मुख्यतः पहाड़ संग होइत छल। तराइ ओ पहाड़क संग जे व्यापार होइत छल ओहि पर गोरखा सरकार द्वारा कर लगायल जाइत छल। 1816 मे सुगौली संधि भेल। ई सेरमहाल कहबैत छल। ई सेरमहाल सब ठेकेदारक हाथे बन्दोवस्त कय देल जाइत छल जे चौधरी कहबैत छल। यैह चौधरी सब आयात ओ निर्यात दुनू पर कर वसूल करैत छलाह। निर्यात सामग्रीक जांच सीमा पर होइत छल।

उनैसम शताब्दीमे तराइ ओ पहाड़क संग व्यापारक स्वरुप पूर्ववते छल। 1875 मे सर्वप्रथम पंजीयनक व्यवस्था भेल। एहि काजक हेतु सीमा पर अनेक स्थान पर पंजीयन स्थान कायम कयल गेल। चम्पारण जिलाक सीमा पर रक्सौल, कटकनवा, तथा घोड़ासाहन, मुजफ्फरपुर जिलाक सीमा पर बैरगनिया, बेला, भेजगंज, सोनबरसा ओ

सुरसंड, सहरसा जिलाक सीमा पर कुनौली तथा बीरपुर, पूर्णिया जिलाक सीमा पर अमौना, सिकटी तथा दिगल बैंकमे केन्द्रक स्थापना भेल जतय व्यापार संबंधी विवरण एकत्रित कयल जाइत छल। एहि अंचल स' अन्न, गोन, वस्त्र, नुर, रंग, फल, लोहाक सामान, तामा ओ पित्तरिक बर्तन, तेल, मसाला, गुड, तमाकू, सुपारी आदि बाहर पठाओल जाइत छल। ओतय स' अन्न, लस्सा, लाह, घी, मालजाल आदि एतय अबैत छल।

उनैसम शताब्दीक अन्त होइत-होइत एहि अंचलमे रेलमार्ग बनि गेल। रेलमार्ग यद्यपि पर्याप्त नहि बनि सकल, तथापि जल-मार्गीय व्यापार नष्ट भ' गेल। रेलमार्गक निर्माणमे मिथिलांचलक व्यापारिक हितक कोनो ध्यान नहि राखल गेल छैक। जलमार्ग द्वारा जे कलकत्ता, पटना आदि स' व्यापार होइत छल से सुविधा रेल द्वारा नहि देल गेल। फलस्वरुप एहि सभ स्थान स' व्यापारमे अपार कष्ट भेल। मोकामामे गंगा पर पुल नहि रहला स' कलकत्ता एवं पहलेजाघाटमे गंगापर पुल नहि रहला स' दक्षिण बिहारस' व्यापारमे बड दिक्कत छल। मोकामामे राजेन्द्र पुल (रेल ओ सड़क) एवं हाजीपुरमे महात्मा गांधी सेतुक निर्माण भ' गेला स' व्यापारमे किछु सुविधा भेल अछि। ट्रक स' मालक आवाजाहीमे सुविधा भेल छैक।

बीसम शताब्दीक प्रारम्भमे एतयक आन्तरिक व्यापार पूर्ववते रहल। एहि अंचल स' बंगाल ओ आसाम के चीनी, गुड, मखान, घी, आम, लीची, केरा, माछ, तमाकू, पटुआ, हड्डी ओ चमड़ा आदि वस्तु जाइत छल। मशीन, मशीनक पुर्जा, चाह, सुपारी, नोन-मशाला, चमड़ाक पदार्थ आदि बंगाल ओ आसाम स' एतय अबैत छल। एतय स' गोरखपुर एवं कानपुर कच्चा पटुआ, चमडा, मखान आदि जाइत छल। पान मुख्यत बनारस ओ इलाहाबाद जाइत छल। मखान एखनो कानपुर, आगरा, दिल्ली, पंजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात तथा महाराष्ट्र जाइत अछि। वस्त्र महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब ओ कानपुर स' अबैत अछि। कोयला, लोहा, सिमेन्ट, दक्षिण बिहार एवं मध्यप्रदेश स'अबैत छैक। हस्तशिल्प एवं मधुबनी पेंटिंग देस-विदेश एतय स' जा रहल अछि।

मिथिलांचलमे आन्तरिक व्यापारक आदि माध्यम हाट सेहो अछि जे सप्ताहमे एक या दू बेर कोनो निश्चित स्थान पर निश्चित दिन लगैत अछि। आसपासक गामक लोक ओ बनिया-व्यापारी सब ओतय जमा होइत छथि एवं अपन आवश्यकताक अनुसार चीज-वस्तु कीनैत छथि। एकर अलावा वर्षमे एकबेर स्थान-स्थान पर मेला लगैत अछि। बेतिया (अक्टूबरमे) सीताकुंड (मोतिहारी) (अप्रैलमे), अदापुर (अप्रैल), लौरिया (मार्च), सीतामढ़ी (रामनवमीक अवसर पर), कोन्हराघाट (नवम्बर), कुशेश्वर, सिंहेश्वर, कारागोला (माघी पूर्णीमा), खगरा (दिसम्बर) आदि मुख्य स्थान अछि। सोनपुरक मेला कार्तिक पूर्णिमाक अवसर पर लगैत अछि जे देशक सबस' पैघ माल-जालक मेला कहल जाइत अछि। मालक हाट सेहो जगह-जगह पर लगैत अछि जतय मुख्यत गाय, बरद, महीसक बिक्री होइछ।

स्वतंत्रा प्राप्तिक पूर्व विदेशी व्यापारक प्रमुख विशेषता छल निर्यातमे कच्चा माल ओ कृषि पदार्थक प्रधानता, आयातमे तैयार वस्तु, व्यापारिक सन्तुलनक अनुकूलता ओ विदेशी व्यापारमे अधिकांश भाग इंगलैंडक संग। स्वतंत्रताक बाद व्यापारिक सन्तुलन निरन्तर प्रतिकूल रहय लागल। ब्रिटेनक संग व्यापार घटय लागल ओ रूस एवं डालर-क्षेत्रमे बढ़य लागल। पंचवर्षीय योजना कालमे विदेशी विनियम उपार्जन पर जोर देल गेल। निर्यात कें प्रोत्साहित कयल गेल एवं आयात पर विभिन्न प्रकारक नियंत्रण लगायल गेल। किन्तु एहि स' आशाजनक भुगतान सन्तुलन नहि भ' सकल एवं 6 जून, 1966 कें भारत सरकार अपन मुद्राक समता-मूल्यकें स्वर्णक रुपमे अवमूल्यन कयलक, तथापि भुगतान संतुलन अनुकूल नहि भ' सकल। नवम्बर 1981 मे अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा-कोष स' 51 मिलियन डालर कर्ज लेबय परल।

भारत स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद निर्यात बढ़यबाक यथासाध्य प्रयास कयलक मुदा वांछित उपलब्धि नहि भेटि सकलै। निर्यात संवर्धनक अनेक प्रयास भेल। आयात प्रतिस्थापन कें प्रभावी ओ सरल कयल गेल।

बिहार सरकारक 11.50 करोड़ रुपयाक लागत स' हाजीपुरमे निर्यात प्रोत्साहन पार्कक स्थापनाक कार्य प्रगति पर अछि। एहि पार्कक निर्माण स' निर्यात व्यापारमे वृद्धिक पूर्ण संभावना अछि।

कृषि विपणन

कृषि विपणनक संबंधमे सर्वप्रथम 1928 मे रोयाल कमीसन ऑन एग्रीकल्चर रिपोर्टमे चर्चा कयल गेल। एहिमे कृषि विपणनक विभिन्न समस्याक आंकलन कयल गेल। 1935 मे कृषि विभागक अन्तर्गत कृषि विपणन विभागक कार्य शुरू भेल। 1937 मे एग्रीकल्चर प्रोडूयस (ग्रेडिंग एवं मार्केटिग) ऐक्ट बनायल गेल। दोसर पंचवर्षीय योजनाकालमे पुनः एहि समस्या पर ध्यान देल गेल। तेसर पंचवर्षीय योजना कालमे कृषिक बाजार व्यवस्थापक हेतु 'रेगुलेट मार्केटक' आवश्कता पर ध्यान देल गेल। बिहार राज्यमे कृषि विपणन व्यवस्था कें सुदृढ़ करबाक उद्देश्य स' 1960 मे बिहार कृषि उपज अधिनियम बनायल गेल। एहिमे सर्वप्रथम 10 बाजारक व्यवस्था भेल। बाद मे 60 टा बाजार समिति आओर बनल एवं एहि अधिनियमक धारा 33 ए के अन्तर्गत 1972 मे बिहार राज्य विपणन पर्षदक स्थापना कयल गेल। विश्व बैंक सेहो एहि योजनामे साहाय्य देलक। विपणन परिषदक मुख्य उद्देश्य निम्नांकित अछि :

(1) कृषक के कृषि उपजक लाभप्रद मूल्य दियाएब। (2) विचौलिया स' मुक्त व्यापार। (3) उपभोक्ता के उचित मूल्य पर बढ़िया कृषि पदार्थ उपलब्ध करायब। (4) कृषि विपणन व्यवस्थाक नेट-वर्क तैयार करब। (5) कृषि बाजार, लिंक पथ एवं पुलिया आदिक निर्माण करब। (6) कृषि पदार्थक वर्गीकरण, बाजार भावक प्रचार-प्रसार। (7) कृषकके आपात बिक्री स' बचयबाक हेतु गिरवीकरण योजना।

बिहार राज्य मे 1998 धरि 122 बाजार समितिक गठन भ' चुकल अछि। निर्मित बाजार प्रागण, केंद्रीय/राज्य अनुदान योजनान्तर्गत निर्मित ग्रामीण हाट, केन्द्रीय योजनान्तर्गत निर्मित ग्रामीण गोदाम, जकर संख्या 125 अछि, कृषक एवं व्यापरीक आवागमन के सुलभ करयक हेतु 55 टा पुल/पुलिया निर्मित, 555 कि. मी. लिंक पथक निर्माण आदि उपलब्ध भ' गेल अछि। शीतगृहक निर्माण बाजार प्रागणमे एखन धरि नहि भेल अछि। कृषक सम्पर्क एवं किसान संगोष्ठीक कोनो प्रावधान नहि भेल छैक। कम्प्यूटर स' बाजारकें सम्बद्ध नहि कयल गेल छैक। हाजीपुर, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर बाजार समिति क्षेत्रक विभिन्न ग्रामीण हाटमे फल सब्जी उत्पादक हेतु ग्रेडिंग एवं कलेक्टिंग सेन्टर एवं राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड स' सहायता अपेक्षित अछि। चापाकल, शौचालय एवं खुजल चबुतराक निर्माण अपेक्षित अछि।

बन्दरगाह

मिथिलांचलक व्यापारमे कलकत्ता बन्दरगाह बड़ु पैघ सहयोगी रहल अछि। समुद्र स' दूर रहबाक कारणे एहि अंचलमे बन्दरगाह नहि अछि। ई भूभाग सब दिन स' कलकत्ताक बन्दरगाह हिन्टरलैंड रहल। ड्रायपोर्ट नहि अछि। भारत-नेपाल सीमान्त क्षेत्र बीरगंज एवं रानीबाजार (बिराटनगर) जांच चौकीक लग ड्रायपोर्टक निर्माण नेपाल कय रहल अछि। ई निर्माण नेपालक वाणिज्य मंत्रालय द्वारा 'मल्टी मोडल ट्रान्जिट हैड ट्रेड फैसीलिटी प्रोजेक्ट' क अधीन भ' रहल छैक। एकरा अन्तर्गत भारतीय क्षेत्र सीमा जोगबनी स' सटले रानीबाजार जांच चौकीक बगलमे मानवरहित क्षेत्र स' सटले 3700 वर्गमीटर भूमि पर पचास कैन्टरक भंडारण क्षमताक संग लगभग 50 ट्रकक पार्किंगक हेतु ड्रायपोर्ट भवनक पक्का निर्माण कएल जा रहल छैक। नेपाल-चीन इन्टरगवर्नमेंट इकोनोमी एन्ड ट्रेड कमेटीक अनर्गत काज भ' रहल अछि।

निर्यात व्यापार

निर्यात व्यापार सरकारी प्रोत्साहनक अभावमे विकसित नहि भ' सकल छैक। बिहार राज्य एक्सपोर्ट निगम एहि दिशामे कोनो प्रयास नहि करैछ। फलस्वरुप समस्तीपुर ओ बेगूसरायक उत्पादित मिरचाई विश्वमे उत्कृष्ट मानल जाइछ जे मद्रास स' निर्यात 'समस्तीपुर चिली' कहि कय कयल जा रहल अछि। लीची 300 मेट्रीक टन निर्यात कयल जा सकैछ। मडागास्कर, जतयक लीचीक मुजफ्फरपुरक लीचीक तुलनामे कोनो स्थान नहि अछि, 300 मेट्रीक टन लीची निर्यात करैछ। बासमती चाउर जे कनाडाक बाजारमे खूब बिकाइत छैक 'पटना राइस' स' प्रसिद्ध अछि। सातु सेहो निर्यात होइछ। ग्रेडिंग, स्टैन्डराजेसन ओ एकत्रीकरणक समस्या पैघ अछि। मधुबनी पेंटिंगक अन्तर्राष्ट्रीय बाजार अछि, मुदा एकर सही ढंग स' निर्यात नहि भ' पबैत अछि।

गैट अर्थात जेनरल एग्रीमेंट आन टैरिफ एन्ड ट्रेडमे (तटकर तथा व्यापार संबंधी समझौता) 1947 मे 177 टा बहुपक्षीय विश्व व्यापार वार्ताक हेतु उरुग्वेमे शामिल

भेल। एहिमे 90 प्रतिशत विश्व व्यापारक संचालन होइछ। भारत एकर सदस्य अछि। एहि संगठन स' अमेरिका किछु संशांकित छल। 1947-48 मे 53 टा राष्ट्र हवानामे सम्मेलन कयलक मुदा कोनो ठोस कार्यक्रम नहि बनि सकल। 30 अक्तूबर 1947 कें जेनेवामे 23 राष्ट्र प्रशुल्क एवं व्यापार स' संबंधित एक सामान्य समझौता कयलक। कालान्तरमे यैह समझौता व्यापारक सजग प्रहरी बनल एवं 1 जनवरी, 1995 स' एकरे परिणति 'विश्व व्यापार संगठन' भेल। 15 अप्रैल, 1994 के मराकशमे (मोरक्को) भारत सहित 125 राष्ट्र विश्व व्यापार संगठन के स्वीकृति देलक। एकर स्थापनाक फलस्वरुप अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारक विस्तार होयत एवं आय ओ रोजगारक वृद्धि सेहो।

■



यातायातक साधन

राष्ट्रक आर्थिक विकासमे यातायात साधनक विशेष महत्त्व अछि। मात्र आर्थिक नहि सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं प्रशासकीय दृष्टिकोण स' एकर महत्व छैक। यदि कृषि एवं उद्योग राष्ट्ररुपी प्राणीक शरीर ओ हड्डी थिक त' यातायात ओकर जीवन तन्तु। राष्ट्रक आर्थिक जीवनमे यातायातक वैह महत्त्व अछि जे शरीरमे रक्त-संचालनवला धमनीक। आजुक आर्थिक व्यवस्थाक अन्तिम उद्देश्य उत्पादने नहि। उत्पादनक उद्देश्य उपभोग स' अछि। एहि हेतु वस्तु ओ सेवाक विनियम एवं वितरणमे यातायातक सर्वोपरि स्थान छैक। यातायातक साधनकें मानव-जीवनक विकास स' घनिष्ट संबंध छैक। एहि अंचलक विकासमे समुचित यातायात व्यवस्था नहि रहला स' बड़ पैघ असौकर्य भ' रहल अछि। मानव सभ्यताक इतिहास यातायातक साधनक विकासक इतिहास कहल जाइछ। सभ्याताक इतिहासमे सड़क निर्माण करयवला पथ-प्रर्दशकक काज कयने छथि। ओ आगू बढ़ैत गेला एवं सभ्यता हुनक अनुसरण करैत गेल। सड़कक संगहि गाम ओ नगरक निर्माण ओ विकास भेल। एहि स' वाणिज्य एव व्यवसायक विकास होबय लागल ओ सम्पूर्ण विश्व एक सूत्रमे बन्हा गेल अछि।

प्राचीन पथ-पद्धति एहि अंचलक खूब विकसति छल। प्रागऐतिहासिक कालमे मिथिलाक, विदेहक स्थान प्रख्यात व्यापारीक रुपमे मानल जाइछ। तक्षशिला होइत पथ काशी एवं मिथिला धरि छल। जातक स' पता चलैत अछि जे बनारस स' तक्षशिलाक रास्ता घनघोर जंगलक मध्य छल जाहिमे डाकू ओ हिंसक पशुक भय सतत बनल रहैत छल। तक्षशिला ओहि युगक भारतीय तथा विदेशी व्यापारक केन्द्र स्थल छल। बौद्ध साहित्य स' स्पष्ट होइछ जे बनारस श्रावस्तीक व्यापारी तक्षशिलामे व्यापारक निमित्त अबैत छलाह।

पेशावर स' गंगाक समतल मैदानमे दू गोट रास्ता छल। पेशावर स' सहारनपुर होइत लखनऊ धरिक रेलवे लाइन उत्तरी रास्ताक द्योतक थिक। एहि रास्ता स' वहिर्गिरि सन्निकटे छल। ई रास्ता लाहौर कें संलग्न करबाक निमित्त स' यद्यपि बजीराबाद स' दक्षिण दिस किछु मुड़ि जाइत छल तथापि ओतय स' जालन्धर पहुंचैत छल। पुनः सोझ भ' जाइत छल। एहि पथक समानान्तर दक्षिणी रास्ता चलैत छल जे लाहौर स' फिरोजपुर आ भटिन्डा होइत दिल्ली पहुंचैत छल। लखनऊ स' उत्तरी रास्ता गंगाक उत्तर होइत तिरहुत पहुंचैत छल। ओतय स' कटिहार तथा पार्वतीपुर होइत आसाम पहुंचि जाइत छल। दक्षिणी रास्ता प्रयाग स' काशी पहुंचैत आ गंगाक दहिन तट स' भागलपुर होइत कलकत्ता पहुंचि जाइत छल अथवा पटना होइत कलकत्ता धरि जाइत छल।

वैशाली स' दक्षिण जेबाक महापथक शाखा पर अनेक पड़ाव छल जतय भगवान बुद्ध राजगृह स' कुशीनाराक अपन अन्तिम यात्रामे निवास कयने छलाह। ओ राजगृह

स' अंबलाहिक एवं नालन्दा होइत वैशाली पहुंचल छलाह। प्रयागक समीप कौशाम्बी स' एक रास्ता यद्यपि साकेत होइत कावस्ती धरि जाइत छल, किन्तु प्रधान-पथ उत्तर-पूब दिस होइत सोनपुर पहुंचैत छल एवं ओतय स' वैशाली होइत ओ उत्तरी रास्तामे मिल जाइत छल। ई उत्तरी मार्ग अम्बला होइत हस्तिनापुर पहुंचैत छल तथा पार करैत ओ साकेत अबैत छल आ उत्तर दिस श्रावस्ती स' कपिलवस्तु जाइत छल। ओतय स' दक्षिण-पूब दिसि घूमि पावापुरी एवं कुशीनारा होइत वैशालीमे दक्षिणी रास्तामे मिलैत छल। वैशाली स' दक्षिण राजगृहक रास्ता पाटलिग्राम, सोनपुर तथा राजगृहक निमित्त एहि मार्गक उल्लेख महाभारतमे भेटैत अछि। कृष्ण एवं भीम एहि रास्ता स' जरासंधक ओतय राजगिरी पहुंचल छलाह। महाभारतक अनुसार ई रास्ता कुरुक्षेत्र स' आरम्भ कय कुरूजंगल होइत सरयू पार करैत कपिलवस्तु होइत मिथिला पहुंचैत छल। मिथिलांचलक पथ-पद्धतिक उल्लेख प्रसिद्ध चीनी यात्री युवानच्वाङक यात्रा विवरणमे सेहो अछि।

उनैसम शताब्दीक पूर्वार्द्ध धरि एहि अंचलमे सड़कक अत्यन्त अभाव छल। मात्र एकपेरिया रास्ता छल। सड़कक निर्माणमे नीलक खेतीमे लागल कोठीवाल साहेब किछु सड़कक निर्माण कयलनि। 1873-74 मे अकाल सहायता काजक अन्तर्गत अनेक नवीन सड़क बनल। दरभंगा ओ मुजफ्फपुर जिलाक 555 मील, खगड़ियाक 8 मील पूर्णिया-किशनगंज जिलामे 371 तथा 1876 ई मे सड़कक कुल लम्बाई 3939 मील छल। सब कच्ची सड़क छल। किछु सड़क प्रतिवर्ष बाढ़ि स' क्षतिग्रस्त भ' जाइत अछि। भदवारिमे किछु मार्ग अवरुद्ध सेहो भ' जाइत छैक।

बीसम शताब्दीक आरम्भमे मात्र 7892 मील सड़क छल। पश्चिमी ओ पूर्वी चम्पारणमे 1307 मील, मुजफ्फरपुर-वैशाली-सीतामढ़ीमे 1604 मील, दरभंगा-समस्तीपुर-मधुबनीमे 1734 मील, खगड़ियामे 794 मील, सहरसा-सुपौलमे 300 मील एवं पूर्णिया-किशनगंज-अररियामे 2113 मील लम्बा सड़क छल। सब कच्ची सड़क छल। 1947 ई. धरि एहि अचलमे एकोटा पक्की सड़क नहि छल। स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद 917 मील पक्की सड़क निम्न मार्गमे बनल। बगहा-बेतिया-मोतिहारी-मुजफ्फरपुर, हाजीपुर, सुरसंड, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, जयनगर, दरभंगा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, बछवारा, बेगूसराय, पिपरा, मधेपुरा, मधेपुरा-पूर्णिया, किसनगंज, जोगवनी-सरसी-पूर्णिया एवं पूर्णिया मनिहारी घाट। प्रथम पंचवर्षीय योजना कालमे सम्पूर्ण बिहार राज्य मे 2943 मील सड़क बनल, जाहिमे एहि अंचलमे मात्र 740 मील।

बिहार राज्य पथ परिवहन पूर्वमे राज्य सरकारक नियंत्रणमे संचालित छल। सहज एवं सुलभ ढंग स' पथ परिवहनक सुविधा उपलब्ध करयबाक दृष्टि स' 1959 मे बिहार राज्य पथ परिवहन निगमक स्थापना कयल गेल।

1961-62 धरि दरभंगा-मधुबनी-समस्तीपुर जिलामे राज्य सड़क विभागक अधीन मात्र रखरखावक हेतु 246 मील पक्की सड़क 18 मार्ग मे छल।

क्रमांक	सड़कक नाम	लम्बाइ (मीलमे)
1.	दरभंगा-रहिका जयनगर	35
2.	दरभंगा-समस्तीपुर	28
3.	रहिका-बेनीपट्टी-पुपरी	24
4.	ढ़ोली-कल्याणपुर	13
5.	सकरी-बहेड़ा	10
6.	दरभंगा-सकरी	13
7.	रहिका-मधुबनी	6
8.	दरभंगा-मुजफ्फरपुर (दरभंगा जिलाक सीमाधरि)	10
9.	घोघड़डीहा-फुलपरास	5
10.	सकरी-झंझारपुर-फुलपरास-लौकहा	10 (सड़क 50 मीलमे)
11.	बहेड़ा-बिरौल-कुशेश्वरस्थान	20 (सड़क 25 मीलमे)
12.	मधुबनी-सौराठ	5
13.	दरभंगा-बहेड़ी-सिंघिया-रोसरा	6 (सड़क 39 मीलमे)
14.	समस्तीपुर-दलसिंहसराय	17
15.	समस्तीपुर-ताजपुर	9
16.	जयनगर-लदनिया	11
17.	समस्तीपुर-मुजफ्फरपुर (पुरनका राष्ट्रीय पथ)	14
18.	मधुबनी-पंडौल-सकरी	10
	कुल जोड़	**246**

एकर आलावा 30 मील सड़क चीनी मिलक अधीन छल जे रैयाम, सकरी, लोहट, समस्तीपुर ओ हसनपुर चीनीक कारखाना स' जुड़ल छल। एकर अलावा 161 मील कच्ची सड़क छल।

क्रमांक	सड़कक नाम	लम्बाइ (मीलमे)
1.	सकरी-झंझारपुर-फुलपरास-लौकहा	40
2.	बहेड़ा-बिरौल-कुशेश्वर स्थान	5
3.	महनार-मोहीद्दीननगर-बछवाड़ा	25
4.	दरभंगा-बहेड़ी-सिंघिया-रोसरा	33
5.	जयनगर-लदनिया	3
6.	मुजफ्फरपुर-ताजपुर-दलसिंहसराय	17
7.	समस्तीपुर-रोसड़ा	16
8.	समस्तीपुर-सरायरंजन-पटोरी	22
	कुल जोड़	**161**

1962-63 धरि मुजफ्फपुर-वैशाली-सोतामढ़ी-शिवहर जिलामे राज्य सरकारक अधीन रखरखावक हेतु 18 मार्गमे 288 मील मात्र सड़क छल।

क्रमांक	सड़कक नाम	लम्बाइ (मीलमे)
1.	मुजफ्फरपुर-हाजीपुर	34
2.	मुजफ्फरपुर-रेवाघाट	25
3.	मुजफ्फरपुर-चम्पारण जिलाक सीमाधरि	23
4.	मुजफ्फरपुर-पूसा रोड	16
5.	गोरौल-भटनलिया	3
6.	गोरौल-सोन्धो	4
7.	हाजीपुर-लालगंज-वैशाली	26
8.	मानिकपुर लिन्क सड़क	2
9.	हाजीपुर-भैरोपुर-महनार	20
10.	महनार-मांहोद्दीननगर	4
11.	गंज-करहरा	13
12.	हाजीपुर-महुआ	12.5
13.	मुजफ्फरपुर-महुआ	18.5
14.	महनार-महनार बाजार	4
15.	मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी	37
16.	जपहा-महनार	8
17.	सीतामढ़ी-सुरसंड	19
18.	सीतामढ़ी-सोनबरसा	19
	कुल जोड़	288

एकर आलावा एहि जिलाक अन्तर्गत 1962-63 मे निम्न 244 मील सड़कक जीर्णोद्धार भ' रहल छल :

क्रमांक	सड़कक नाम	लम्बाइ (मीलमे)
1.	मोतिहारी-साहेबगज	14
2.	मोतिहारी-बरुराज	4
3.	लालगंज-फकुली	12
4.	हाजीपुर-बिदुपुर	7
5.	महुआ-ताजपुर	24
6.	मुजफ्फरपुर-देवरिया	23
7.	देवरिया-साहेबगंज	11
8.	रेवाघाट-देवरिया	15
9.	रुन्नीसैदपुर-कटरा-किओटरा(निर्माणधीन छल- आब बनिगेल)	
10.	मुजफ्फरपुर-बोचहा-क्योबर (दरभंगाक सीमा धरि)	25
11.	सीतामढ़ी-शिवहर-मसौरा-बेलारघाट	20
12.	सीतामढ़ी-बाजपट्टी-पुपरी	16
13.	रीगा-परसावनी	8
14.	रीगा-मेजरगंज	5
15.	सुरसंड-बेनीपट्टी भिट्ठा होइत	12
16.	कुमार बेला परिहारी होइत	16
17.	मझौलिया-कटरा	12
18.	मीनापुर-शिवहर	20
	कुल जोड़	244

अररिया-किशनगंज-पूर्णिया जिलामे 1966-67 धरि 585 कि मी. पक्की सड़क एवं 5089 कि. मी. कच्ची सड़क जाहि मे 766 कि. मी. ग्रामीण सड़क छल :

क्रमांक	सड़कक नाम	कि.मी.
(अ) राष्ट्रीय राजपथ		
1.	राष्ट्रीय राजपथ -31-कटरिया-किसनगंज	130
(ब) राजपथ		
2.	पूर्णिया-रुपौली, धमदाहा होइत	35
3.	पूर्णिया-मुरलीगंज बनमनखी होइत	57
4.	जोगबनी-कुरसेला-सरसी	115
5.	फारबिसगंज-नरपतगंज	15
6.	बथनाहा-बीरपुर	25
7.	बैसी-अमौर	15
8.	किसनगंज-बहादुरगंज	30
9.	अररिया-दिरवलबैक	55
10.	पूर्णिया-मनिहारी	48
(स) जिलाबोर्डक सड़क		
11.	पक्की सड़क	60

12. कच्ची सड़क		4305
13. गामक सड़क		776
कुल जोड़	**585**	**5081**

31 मार्च, 1967 सार्वजनिक अनुरक्षित नगरपालिका सड़कक अतिरिक्त जिलावार लम्बाइ (किलोमीटरमे) एहि तरहें छल :

	पक्की	कच्ची	कुल
पूर्वी-पश्चिमी चम्पारण	691	109	800
दरभंगा-समस्तीपुर-मधुबनी	710	341	1051
मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी-वैशाली-शिवहर	670	253	943
पूर्णिया-किसनगंज-अररिया	654	214	868
सहरसा-मधेपुरा-अररिया	423	83	506

1974-75 मे बिहार सरकारक योजना विभाग आर्थिक प्रगतिक अध्ययन कयलक जकरा अनुसार सड़कक निर्माण निम्न तरहें छल। एतय प्रत्येक 1,00,000 व्यक्ति पर मात्र 5 मील पक्की सड़क अछि जखन कि भारतमे 89 मील, इंगलैडमे 392 मील, फ्रांसमे 914 मील तथा संयुक्त राज्य अमेरिकामे 2500 मील अछि। एहि अंचलमे प्रत्येक 100 वर्गमीलमे पक्की सड़क 4 मील छैक जखन कि भारतमे 22 मील, इंगलैडमे 202 मील, फ्रांसमे 184 मील तथा संयुक्त राज्य अमेरिकामे 103 मील छैक। एहि आंकड़ा स' मिथिलांचलक स्थिति अत्यन्त कमजोर साबित होइछ।

क्रमांक	जिला	पक्की सड़कक लम्बाइ 000 कि. मी.	प्रति लाख जनसंख्याक हिसाबमे
1.	पूर्वी चम्पारण	157.13	41.99
2.	पश्चिमी चम्पारण	81.57	17.08
3.	मुजफ्फरपुर	199.10	30.83
4.	वैशाली	260.31	36.49
5.	सीतामढी-शिवहर	176.61	28.24
6.	दरभगा	167.29	51.61
7.	मधुबनी	117.11	20.51
8.	समस्तीपुर	134.96	19.95
9.	सहरसा-सुपौल	89.42	19.90

10.	बेगूसराय	267.12	41.25
11.	पूर्णिया-किसनगंज-अररिया	147.41	36.91
12.	कटिहार	52.82	12.71

1977-78 धरि मिथिलांचलमे सड़कक लम्बाइ निम्न प्रकारक छल (लम्बाइ किलो मीटरमे):—

क्रमांक जिला	राष्ट्रीय सड़क	राज्य राजपथ	जिला सड़क मेजर	जिला सड़क अन्य
1. वैशाली	–	112	55	222
2. मुजफ्फरपुर	141	194	142	142
3. सीतामढ़ी-शिवहर	–	82	155	144
4. पूर्वी चम्पारण	129	70	144	201
5. पश्चिम चम्पारण	–	122	195	159
6. मधुबनी	–	113	327	125
7. दरभंगा	–	102	179	180
8. समस्तीपुर	–	58	259	172
9. सहरसा-सुपौल	–	218	278	153
10. पूर्णिया-किसनगंज-अररिया	67	240	397	102
11. कटिहार	35	70	108	73
12. बेगूसराय	55	33	153	39
कुल जोड़ (कि. मी.)	**327**	**1414**	**2392**	**1732**

बिहार राज्य योजना बोर्ड 1977-78 मे राज्यक एहि अंचलमे सड़कक आवश्यकताक एहि तरहें आकलन कयने छल :

आवयकता	939	1536	10206	11509
बनल छैक	327	1414	2392	1732

राष्ट्रीय राजपथ मात्र 5 जिलामे अछि जखन कि आवश्यकता सब जिलामे छल। राजपथक निर्माणमे पश्चिम चम्पारण, समस्तीपुर, पूर्णिया ओ कटिहार जिलामे योजनाक अनुरुप सड़क नहि बनल।

मिथिलांचलक एकटा पैघ हिस्सा एखनो गाममे रहैत अछि। गामके गाम स' आओर गामके शहर स' सड़क मार्ग द्वारा जोड़िकय राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के अधिक सुदृढ़ कयल जा सकैछ। भारत सरकार पंचम पंचवर्षीय योजनमे 'न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम' (मिनिमम नीड्स प्रोग्राम)क अन्तर्गत ग्रामीण सड़कक निर्माण पर जोर

देलक। छठम पंचवर्षीय योजना (1980-85) कालमे ग्रामीण सड़क निर्माणकें प्रमुखता भेटलै। एहि योजनामे लक्ष्य राखल गेल जे डेढ़ हजार आबादीबला सब गामकें सड़क मार्ग स' जोरि देल जाय। एहि योजनाक अन्तर्गत राज्य सरकार निम्नांकित जिलाक 4112 गामकें 7743.65 कि.मी. सड़क स' जोड़बाक प्रारूप तैयार कयलक।

क्रमांक	जिला	गामक संख्या	सड़कक लम्बाइ (जोरबाक हेतु कि.मी. मे)
1.	मुजफ्फरपुर	313	492.00
2.	सीतामढ़ी-शिवहर	306	596.00
3.	वैशाली	245	366.00
4.	दरभंगा	277	734.00
5.	समस्तीपुर	379	671.00
6.	मधुबनी	389	793.80
7.	पूर्वी चम्पारण	394	691.25
8.	पश्चिम चम्पारण	266	588.00
9.	बेगूसराय	229	512.00
10.	पूर्णिया-किसनगंज-अररिया	618	1125.00
11.	कटिहार	173	304.00
12.	सहरसा-सुपौल	523	869.00
	कुल जोड़	**4112**	**7742.65**

एहि अंचलक ग्रामीण क्षेत्रक सामाजिक ओ आर्थिक विकास बहुत अंशमे सड़कक विकास पर निर्भर करैछ किऐक त' यैह एकमात्र साधन अछि, जे गामकें राष्ट्रीय विकासक धारा स' जोरैत अछि। सड़क निर्माण एवं सामाजिक आर्थिक विकासमे अत्यन्त गहींर संबंध छैक। सड़कक माध्यम स' अधिकाधिक बुनियादी सुविधा सहज प्राप्त भ' जाइछ। परिणामस्वरुप सामाजिक परिवर्तन-गरीबी, बेरोजगारी, ओ निरक्षारताक अन्त। एकरा माध्यम स' कृषि भूमिक प्रयोग, फसलक उत्पादन, उत्पादनकें मंडी पहुंचब, कृषकक खपत, आय ढांचा आदिमे परिवर्तन जे गामक समग्र विकासक द्योतक अछि। अयबा-जयबाक माध्यम उपलब्ध भ' गेलास' कृषकं अतिरिक्त अन्य प्रकारक मजदूरी, रोजगार योजनाक लाभ उठा सकैत छथि एवं अपनाकें गरीबीक चंगुल स' मुक्त कय सकैत छथि। किन्तु एहि अंचलक सड़क-पथ जर्जर भ' गेल अछि।

जंगल, पहाड़, नदी ओ दियारा स' परिपूर्ण भारत-नेपालक सीमावर्ती एहि अंचलक पश्चिमी चम्पारण जिलाक लगभग सब सड़क जर्जर भ' गेल अछि। एहि जिलामे

सड़क तीन विभागक अधीन अछि। लोकनिर्माण विभाग (पी. डब्ल्यू. डी.) ग्राम्य अभियंत्रण संगठन (आर.ई.ओ.) तथा जिला परिषद। 1240 कि.मी. क्षमतावला पथ प्रमंडल, बेतियाक अधीन अछि। बेतिया-बाल्मीकिनगर सड़क पर प्रति किलोमीटर सैकड़ों छोट-पैघ खधिया बनि गेल छैक। बेतिया-नरकटियागंज, रामनगर-नरकटियागंज, नरकटियागंज-लौरिया आदि मुख्य पथक स्थिति दयनीय भ' गेल अछि। बेतिया-नौतन पथ विगत-सात-आठ वर्ष स' लाखो व्यय भ' गेला पर अपन जर्जरता रुपी अभिशाप स' मुक्त नहि भ' सकल अछि। यैह हाल बेतिया-बैरिया, पखनाहा, सरिसवा, सड़कक भ' गेल छैक। बेतिया-छपवा मुख्यमार्ग, जे एकमात्र दोहरा मार्ग अछि, चलबा योग्य नहि लगैछ। नरकटियागंज-भितिहरवा, नरकटियागंज-भिखनाठोरी पथक पहचान काफी विचित्र एवं दुखद प्रतीत होइछ। अपराधक विश्वविद्यालयक रुपमे कुख्यात जोगापट्टी प्रखंडक सब गामके जोरयवला बेतिया-नवलपुर सड़कक मरम्मत नहि भेल अछि। बेतिया शहरक सड़क सेहो दयनीय अछि। यैह गाथा 1998 धरि मिथिलांचलक सब जिलाक पथक अछि।

भारत सरकार 142 कि.मी. लम्बा हाजीपुर-मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी-सोनबरसा सडकके अप्रैल 1999 मे राष्ट्रीय राज्यमार्गक श्रेणी प्रदान कयने अछि जे एन.एच. 77 क नामस' जानल जायत अछि। एहि सड़कक रखरखाव ओ देखरेख आब आंचलिक पदाधिकारी, भूतल परिवहन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा कयल जायत। बिहार सरकारक राष्ट्रीय राजमार्ग प्रभागक अन्तर्गत एकरा राखल गेल छैक।

समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम, इन्दिरा आवास योजना, भूमि सुधार, जवाहर रोजगार योजना, त्वरित ग्रामीण जल आपूर्त्ति कार्यक्रम, ग्रामीण युवा स्वरोजगार, प्रशिक्षण योजना, ग्रामीण महिला एवं बाल विकास कार्यक्रम, राष्ट्रीय पेयजल मिशन सदृश केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम तथा न्यून्तम आवश्यकता कार्यक्रम सदृश राज्य सरकारक कार्यक्रमक लक्ष्यकें प्राप्त करयमे गामकें राष्ट्रीय मुख्यधारा स' जोड़बामे ग्रामीण सड़कक विकास महत्त्वपूर्ण भूमिका छैक। भारत सरकार समस्त देशमे सड़क निर्माणक हेतु रोड डेवलप्मेंट प्लान (1981-2000) तैयार कयने अछि। एहि योजनाक तहत ग्रामीण क्षेत्रमे 22,12,000 किलोमीटर लम्बा सड़क बनयबाक छैक। 2000 ई. धरि पांच सय आबादीबाला सब गामकें सड़क स' जोड़बाक प्रयास छैक। केरल, हरियाणा, पंजाबक लगभग प्रत्येक गाम सड़क स' जोड़ि देल गेल अछि। गुजरातमे 74 प्रतिशत, आंध्रप्रदेशमे 43 प्रतिशत, राजस्थानमे 21 प्रतिशत एवं उड़ीसामे मात्र 15 प्रतिशत गाम सड़कस' जोरल जा सकल अछि। भारत सरकार आठम योजनाकालमे प्रतिवर्ष 8000 करोड़ रुपया खर्च करबाक प्रावधान कयलक। निजी क्षेत्र कें एहि हेतु आमंत्रित कयने अछि। बी.ओ.टी. (बिल्ड, ऑपरेट ओ ट्रान्सफर) के वैधानिक रुप देल गेल छैक। सड़क निर्माण कें उद्योगक श्रेणी, आयकर मुक्त ऋणपत्र संरचना उद्योग के तहत कयल गेल अछि।

रेलपथ: मिथिलांचलमे रेलपथक इतिहास फरवरी 1874 स' प्रारम्भ भेल। दरभंगा राज्यक स्टेवेन्स महोदय तिरहुतमे रेलपथक निर्माण हेतु भारत सरकारक रिचार्ड टेम्पुलके प्रारूप समर्पित कयल। एकरा अन्तर्गत 17 अप्रैल 1874 कें बाजीतपुर स' दरभंगा धरि 53 मील रेल लाइन पर रेलगाड़ी आयल। एहि रेलपथक नाम 'तिरहुत स्टेट रेलवे' परल। 1888 मे ईस्टर्न बंगाल स्टेट रेलवेक विस्तार भेल आ 1902 मे कटिहार-बरौनी-समस्तीपुर-सोनपुर रेलपथकें पूर्वमे पार्बतीपुर तथा पश्चिममे गोरखपुर स' मिला देल गेल। कटिहार लग कोसीपुल तथा तुरतीपुर मे गोगरा नदी पर रेलवे पुल बनायल गेल। बीसम शताब्दीक प्रारम्भ स' प्रथम महायुद्ध धरि कुल 788.45 मील लम्बा रेलपथ छल 1906 मे 614.30 मील रेलपथ बढ़िकय 1914-15 मे 788.45भ' गेल। बंगाल नॉर्थ वेस्टर्न रेलवे कें भारत सरकार अपना अधीन कयलक ओ एकर नाम अवध-तिरहुत परल। आब यैह अवध-तिरहुत रेलवे नार्थ ईस्टर्न रेलवे भ' गेल अछि। एतयक रेलपथ कोसीक उपद्रव स' नष्ट भ' गेल, जाहिमे निर्मली स' बलुआ होइत खनवा घाट, भपटियाही स' सुपौल तथा फारबिसगंज स' अंचराघाट। अनेको स्थान पर एखनहु बाढ़िक समयमे रेल यातायात बन्द भ' जाइछ। मोकामाघाट, पहलेजाघाट, मुंगेरघाट, मनिहारी घाट ओ महादेवपुरघाटमे रेलवे पुलक निर्माण अत्यावश्यक भ' गेल। 1893-94 मे पहलेजा-दीघास' हटाकय सिमरिया-मोकामा घाट पर दय देल गेल। 1950-51 मे सम्पूर्ण देशमे 7500 कि.मी. रेलपथ बनल या नवीकरण कयल गेल, जाहिमे बिहार राज्यमे मात्र 375 कि.मी. बनल जे मात्र 5 प्रतिशत अछि। जखन कि बिहारक जनसंख्या स्वतंत्रता बाद दुगूना भ' गेल छैक।

मार्च 1957 धरि एतय 1125 मील रेलमार्गक विकास भेल। एहिमे 1025 मीटर गेज तथा लगभग 50 मील नैरोगेज बनल। एहि अंचलमे 100000 व्यक्ति पर मात्र 6 मील रेलमार्ग एहि समयमे छल, जखन कि सम्पूर्ण भारतमे 10 मील, इंगलैंडमे 40 मील ओ अमेरिकामे 148 मील छल। 1959 मे मोकामामे दोहरी रेल एवं सड़क पुल 'राजेन्द्र सेतु बनल। एहि स' सर्वप्रथम दक्षिण बिहार ओ कलकत्ताकें सड़क ओ रेलपथ स' जोरल गेल। रेलपथ एकहरा अछि। दोसर एहि अंचलमे कमला-बलान पर रेल-सड़क पुलक निर्माण भेल जाहि पर 14 लाख टाका व्यय भेल। एहि पुल स' झंझारपुर ओ मधुबनीके जोरि देल गेल छैक। एहि अंचलक रेल पुल पुरान भ' गेल अछि एवं एकर रखरखाव संतोषजनक नहि अछि।

1974 मे मिथिलांचलकें पूर्वी उत्तर प्रदेश स' जोड़बाक उद्देश्य स' बगहा-छितौनी रेल-पुलक उद्घाटन भेल। एहि हेतु बगहा स' बाल्मिकीनगर 9 किलोमीटर 7 करोड़ टाकाक लागत स' रेलपथ निर्माण करय परल। अन्यथा रेल-पुलक निर्माण हेतु आवश्यक साधन नहि जुटि सकैत छल। 22 फरवरी 1974 कें 75 किलोमीटर सकरी-हसनपुर रेलपथक उद्घाटन भेल। राज्य सरकार भूमिक अधिग्रहणक हेतु 69 लाख टाका व्यय सेहो कयलक किन्तु निर्माण काज एखन धरि अनिश्चित अवस्थामे अछि। 31 मार्च 1974

कें झंझारपुर-लौकहा 42 किलोमीटर रेल लाइनक उद्घाटन भेल। एहि मार्गमे गाड़ी चलि रहल अछि। निर्मली-फारबिसगंज रेलपथ कें चालू कयल गेल छैक। जनवरी 1975 मे समस्तीपुर-मुजफ्फरपुर रेल लाइन पर बड़ी लाइनक विस्तार कयल गेल। मुजफ्फरपुर-हाजीपुर सेहो बडी लाइन स' जोड़ि देल गेल अछि।

मानसी-सहरसा बड़ी लाइनक काज मार्च 2002 धरि पूरा करबाक लक्ष्य अछि। एहि 44 कि.मी. आमान परिवर्तन पर लगभग 48 करोड़ टाकाक व्ययक अनुमान छैक। एहिमे 10 पैघ रेल पुलक निर्माण होयत। 1998 धरि मात्र एकटा पुलक निर्माण भेल अछि एवं दूटा अन्य पुल (50 एवं 52) पर काज लगिचियायल छैक। बाढ़िक कारण काजमे असुविधा भ' रहल छैक। आमान परिवर्तनमे 22 कि.मी. माटिक काज एवं 13 छोट पुलमे 4 पूरा ओ 6 छोट पुलक काज लगिचियायल छैक। दोसर काज 268 कि.मी. जयनगर-दरभंगा-नरकटियागंज आमान परिवर्त्तन एखन धरि शुरु नहि भेल छैक जखन कि केन्द्रीय मंत्रिमंडल माह अक्टूबर 1998 मे अपन स्वीकृति दय देने अछि।

माल यातायातक सुविधाक हेतु बरौनीक गडहरामे एशियाक सबस' पैघ माल पल्टी करयबला यार्ड कार्यरत अछि। एतय बड़ी लाइन स' आयल छोटी लाइनक बैगनमे मालकें पलटल जाइछ।

रेल प्रशासनक हेतु आंचलिक कार्यालय समस्त बिहारमे एकोटा नहि छल। 1950 मे पटनामे एवं 1973 मे दरभंगामे बनयबाक सुरसार भेल, किन्तु योजना कागते पर रहल। 1997 मे पूर्व-मध्य रेलवेक स्थापना हाजीपुरमे भेल। एहिमे सोनपुर, दानापुर, समस्तीपुर ओ कटिहारक मंडल कार्यालय, जे कलकत्ता अंचलमे छल, एहि नवीन अंचलक अधीन कयल गेल अछि। सोनपुर ओ समस्तीपुरमे उत्तर-पूर्व रेलवेक मंडल कार्यालय, दानापुर पूर्वीय रेलक एवं कटिहार उत्तर-पूब फ्रन्टियर रेलक मंडल कार्यालय एहि अंचलमे आबि गेल अछि। एकर भवन निर्माण पूरा भ' गेल अछि एवं 4.85 करोड़ रुपया स्वीकृत अछि, मुदा विधिवत उद्घाटन नहि भेल छैक। हसनपुर-सकरी-समस्तीपुर, कुशेश्वर स्थान-खगड़िया, मुजफ्फरपुर-सीतामढी एवं मानसी-सहरसा-फारबिसगज लाइन स्वीकृत भेल मुदा काज प्रारम्भ नहि भ' सकल। 1999-2000 क रेल बजटमे चौदह नव ट्रेन स्वीकृत भेल जाहिमे एहि अंचलक हेतु मात्र एकटा ट्रेन–अमृतसर-दरभंगा एक्सप्रेस नरकटियागंज होइत सप्ताहमे दू दिन चलत। दिल्ली-गोरखपुर एक्सप्रेसके रक्सौल धरि नरकटियागंज होइत एवं अमृतसर-बरौनी एक्सप्रेस के कटिहार धरि बढ़ायल गेल अछि। बनमनखी-बिहारीगंज (एम.जी.) रेल-बस सेवा चालू कयल जायत। छपरा-हाजीपुर-कर्पूरीग्राम-सिहो धरि दोहरी लाइनक सेहो प्रावधान कयल गेल अछि।

जल पथ : मिथिलांचलमे नौतरण योग्य नदीक बाहुल्य अछि। रेलक विकास स' पूर्व एतयक जल पथक अपन विशेष महत्व छल। गडक, बूढ़ीगंडक, कोसी, महानदी गगा एवं अन्य कतिपय नदीमे सब समय जल रहला स' नाव द्वारा यातायातक मार्ग सुलभ

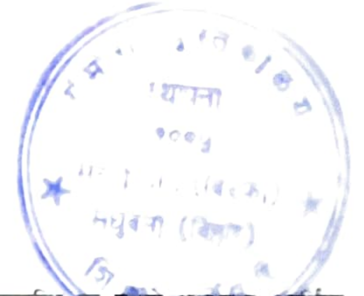
छल संगहि ई व्यापार-व्यवसायमे पैघ सहायक छल। गंडक नदीक तट पर सत्तारघाट, गोविन्दगंज, बगहा, लालगंज, हाजीपुर, बूढ़ीगंडकक तट पर सुगौली मुजफ्फरपुर, पूसा, समस्तीपुर, रोसड़ा तथा खगड़िया, लखनदेईक तट पर सीतामढ़ी, बागमतीक कछेर पर दरभंगा, कमलाक तट पर चिसामापानी तथा जयनगर, बलानक तट पर झंझारपुर, तिलयुगाक तट पर कुनौली एवं निर्मली आ महानदीक तट पर दुलालगंज, देवगंज, इंगलिस बाजार, भोला हाट आदि प्रमुख शहर स' यातायात एवं व्यापारिक व्यवस्था छल। गंगा, बूढ़ी गंडक तथा घाघरा नदीक माध्यम स' अद्यावधि प्रचुर मात्रामे एखनो व्यापार होइछ।

बीसम शताब्दीक आरम्भ स' जहिना सड़क ओ रेलपथ विकसित होमय लागल, जलपथ क्रमशः कम भ' गेल। दोसर नदीक मार्गकें साफ नहि कयल जा रहल अछि। एहि स' जाहि सब नदीमे सालभरि नौकारोहण भ' सकैत अछि, ओ मार्ग पांक, बालु आदि स' अवरूद्ध भ' जाइछ। तेसर रेलपथ ओ सड़क माध्यम स' मालक आवाजाही संभव भ' गेल छैक, मुदा एहि स' वस्तुक मूल्य बेसी भ' जाइत छैक। जलपथ सस्त परैछ। एहि अंचलक प्रत्येक शहरमे सब्जी, फल, माछ ओ दूध मुख्यतः एखनो नाव स' भोरे-भोर शहरमे पहुंचि जाइत अछि।

एहि अंचलक नदी सबके नियंत्रित कय जलपथक सुविधा दय देला स' यातायतक खर्च ओ समय कम लागत तथा आन्तरिक व्यापारकें प्रोत्साहन भेटत तथा मालक भाड़ा कम लागत। जर्मनीमे एहने व्यवस्था कयल गेल अछि। ओतय रेलपथक संग-संग जलपथक विकासमे सरकार तथा आमजन सदैव प्रयत्नशील एवं सचेष्ट रहल अछि। किछु वर्ष पूर्व अनेक नहरि द्वारा ओतुका राइन, एल्ब तथा डान्यूब नदीकें संबंधित कय देला स' व्यापारी जहाज ओ नाव राइनलैंड स' सोझे डान्यूब घाटी धरि जा रहल छैक। एहने योजना मिथिलांचलक आर्थिक विकासक हेतु उपयुक्त होयत।

वायुपथ : आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय स्थितिमे वायुमार्गक महत्व अत्यधिक बढ़ि गेल अछि। वायुपथ द्वारा विश्वक एक भाग दोसर भाग स' निकट भ' गेल छैक। मिथिलांचलमे वायुमार्ग एखनो नहि अछि। बीसम शताब्दीक अन्त धरि प्रारम्भो नहि भ' सकल। किछु वर्ष पूर्व दरभंगा-पूर्णिया-कलकत्ताक बीच हवाई जहाज चलैत छल जे माछ, आम ओ मखानक व्यवसायमे संलग्न छल। सम्प्रति बन्द अछि। दरभंगाक हवाई अड्डाकें भारत सरकारक रक्षा मंत्रालय अधिग्रहण कय लेलक। राज्य सरकारक छोटका हवाई जहाज चलैत अछि जाहि स' मात्र सरकारी काज संभव छैक। आम नागरिक हेतु वायुपथक सुविधा एखनो नहि भेल छैक।

■



ऊर्जा

सुलभ, सस्त निर्भर योग्य ऊर्जा साधनक उपलब्धि पर कोनो भूभागक आर्थिक विकास निर्भर करैत अछि। आधारभूत संरचनामे, जाहि पर औद्योगिक विकास निर्भर करैछ, ऊर्जाक महत्वपूर्ण स्थान छैक। ताप विद्युत शक्तिक आपूर्ति बिहार राज्यमे 1958 स' बिहार राज्य विद्युत बोर्ड कय रहल अछि। एहि बोर्डक कार्यकलाप उद्यमीक हेतु पूर्णतः असन्तोषजनक अछि। रेलक आवागमनक असुविधाक कारणे कोयला आधारित विद्युत उत्पादन एखन धरि संभव नहि भ' सकल छैक। मिथिलाचलमे पन-बिजलीक सब सुविधा उपलब्ध छैक, किन्तु एहि ऊर्जा स्रोतक विकास पर समुचित ध्यान नहि देल गेल अछि। पारम्परिक ऊर्जाक पूर्ण अभाव छैक। एकैसम शताब्दीक आगमनक स्वागत लालटेन युग स' एहि क्षेत्रमे भेल। गैरपारम्परिक या वैकल्पिक ऊर्जा सौर, पवन, बायो गैस, आदि एखन प्रारम्भिक आवस्थामे अछि। उद्योग-धंधा चलयबाक क्षमता ई ऊर्जा एखन धरि नहि प्राप्त कय सकल अछि। ऊर्जाक अभाव एहि क्षेत्रक आर्थिक विकासमे पैघ बाधक भेल अछि। प्रति व्यक्ति बिजलीक खपत एहि क्षेत्रमे मात्र 18 किलोवाट अछि, जखन कि सम्पूर्ण बिहारमे 47 किलोवाट एवं भारतवर्षमे 147 किलोवाट छैक। सम्पूर्ण बिहारक कुल खपतक मात्र 14 प्रतिशत एतय अछि।

स्वतंत्रताक पूर्व बिजलीक उत्पादन एत' नगण्य छल। 1950 में समस्त बिहारमे बिजलीक खपत प्रति व्यक्ति 3 किलोवाट छल। समस्त राज्यमे 13 डीजल पावर हाउस छल। सर्वप्रथम एहि क्षेत्रमे बरौनी ताप विद्युत गृह बनायल गेल। बरौनीमे 145 मेगावाट उत्पादन क्षमाक क्रमिक इकाई बनल।

1 इकाई	15 MW	26.01. 66
2 इकाई	15 MW	16.11.63
3 इकाई	15 MW	20.10.63
4 इकाई	50 MW	09.11.69
5 इकाई	50 MW	01.12.71
6 इकाई	110 MW	06.12.80
7 इकाई	110 MW	10.06.98

बरौनीक पहिल तीनटा इकाई जर्जर भ' गेल अछि। अन्य चारिटा इकाई कार्यरत अछि।

एहि क्षेत्रमे जल-शक्तिक अनेको स्थान अछि, जतय पनबिजली संयंत्र स्थापित कय स्थानीय आवश्यकताक पूर्ति कयल जा सकैछ। तृतीय पंचवर्षीय योजना कालमे 2.20 करोड़ रुपया लागत पर कोसी पनबिजली घरक निर्माण कें स्वीकृति भेटल। एहि परियोजनाक तहत मुख्य पूर्वी कोसी नहरमे लगभग 4 मीटर पूर्व निर्मित जलप्रपातक उपयोग स' 20 मेगावाट पनबिजलीक उत्पादन लक्ष्य राखल गेल। 1964 मे मुख्य पूर्वी कोसी नहरक कटैया नामक स्थान पर बिजली घरक निर्माण शुरू भेल। जापान स' खरीदल गेल पांच-पांच मेगावाट चारिटा टरबाइनक निर्माण काज 1971-72 मे पूरा भेल। प्रति टरबाइनक कार्य क्षमता बादमे साढ़े चारि मेगावाट संभव भ' सकल। सिल्ट इजेक्टरक आभावमे बालूक भराव होइछ, एहि स' टरबाइनक संचालन बाधित होइछ। संगहि डिजाइनक गड़बड़ी स' आब स्पष्ट भेल अछि जे 18 मेगावाटक बदला मात्र 6 मेगावाट बिजलीक उत्पादन भ' सकैछ। सम्प्रति मात्र 3 मेगावाट बिजलीक उत्पादन भ' रहल अछि।

ग्रामीण विद्युतीकरणमे भारत सरकारक ग्रामीण विद्युतीकरण निगम सहयोग कय रहल अछि। 31 मार्च 1977 धरि निम्नांकित 4767 गाममे बिजली उपलब्ध भ' गेल अछि। जाहिमे 1030 गाममे एहि निगमक माध्यमे काज भेल।

क्रमांक	जिला	स्कीम अनुमोदित	गामक संख्या	आई. ई. सी. स्कीमक अन्तर्गत गामक संख्या	विद्युतीकृत गामक संख्या
1.	पश्चिम चम्पारण	1	1357	70	349
2.	पूर्वी चम्पारण	2	1287	76	377
3.	सीतामढ़ी-शिवहर	1	993	63	309
4.	मुजफ्फरपुर	4	1726	104	627
5.	वैशाली	3	1391	22	569
6.	समस्तीपुर	3	1213	33	420
7.	दरभंगा	6	943	125	309
8.	मधुबनी	5	1028	104	305
9.	सहरसा-सुपौल	6	1302	191	407
10.	पूर्णिया-किसनगज-अररिया	13	2493	132	344
11.	कटिहार	3	1239	4	270
12.	बेगूसराय	4	693	106	481
		51	**15665**	**1030**	**4757**

ई निगम 1988-89 धरि विद्युतीकरणक योजना एहि तरहे कयने छल

1. आधा बांस बोरिंगमे बिजलीक सुविधा। 2. कुल बोरिंगमे, निजी ओ राजकीय, विद्युतीकरण। 3. एच. पी. मोबाइल पम्पिंग सेट (नदी ओ निर्मित कुआं) 25 प्रतिशत 4. 50 प्रतिशत पैघ कुआमे बिजलीक सुविधा। 5. कुल पम्पिंग स्टेशनमे बिजलीक आपूर्ति।

ग्रामीण विद्युतीकरणमे सामान्य प्रगति भेल अछि एवं 31 मार्च 1987 धरि निम्नांकित संख्यामे ग्राम्य विद्युतीकरण भेल

क्रमांक	जिलाक नाम	आवादीवला गाम	विद्युतीकृत
1.	मुजफ्फरपुर	1727	1266
2.	सीतामढ़ी-शिवहर	993	657
3.	पूर्वी चम्पारण	1287	791
4.	पश्चिम चम्पारण	1357	656
5.	वैशाली	1331	1065
6.	दरभंगा	943	814
7.	मधुबनी	1028	1012
8.	समस्तीपुर	1213	1018
9.	बेगूसराय	692	692
10.	सहरसा-सुपौल	950	626
11.	मधेपुरा	352	224
12.	पूर्णिया-किसनगंज-अररिया	2493	927
15.	कटिहार	1239	524
14.	खगड़िया	235	206
	कुल संख्या	**15, 839**	**10, 478**

1986-87 धरि 10478 आबादीवला गाममे बिजली पहुचल, मुदा बिजलीक रख-रखाव दयनीय अछि। ग्रामीणक सहयोगक सेहो अभाव अछि। समय पर बिजली बिलक भुगतान नहि कयल जाइत अछि।

1980 मे एहि अंचलक एकटा आर्थिक सर्वेक्षणमे 12 मध्यम औद्योगिक इकाईमे 1,20,216 व्यक्ति कार्यरत छलाह जाहिमे 26 प्रतिशत महिला छलीह। 95 प्रतिशत श्रमिक एहन इकाईमे कार्यरत छलाह, जाहिमे बिजली नहि छलैक। यैह स्थिति लघु औद्योगिक इकाईक छल।

बिजलीक खपतमे एहि भूभागक उपेक्षा निम्नांकित क्षेत्रीय असंतुलन तालिका स' स्पष्ट होइछ। खपत (किलोवाट मे)

वर्ष	मिथिलांचल	द. बिहार	छोटानागपुर	सम्पूर्ण बिहार	आखिल भारतीय
1951	0.42	7.96	71.37	19.80	17.78
1965-66	3.96	30.73	166.76	37.70	61.93
1977-78	15.25	41.23	240.04	87.32	120.73
1984-85	17.01	44.09	264.98	87.56	154.00

उपरोक्त क्षेत्रीय असंतुलन मिथिलांचलमे बिजलीक खपतक व्यथा उजागर करैछ।

मिथिलांचलक अधिकांश गाम एखनो प्रकाशक लेल डिबिया आ लालटेन पर निर्भर अछि। राज्यमे 14,000 गाममे सरकारी फाइल पर विद्युतीकरण भ' चुकल अछि। आब सरकार स्वयं एहि आरोप के स्वीकार कयलक। 1996-97 मे राज्य योजना स' सरकार 100 करोड टाका ग्रामीण विद्युतीकरण हेतु स्वीकृत कयलक। केन्द्र सरकार एहि हेतु पहिने करोड़ो टाका दैत छल जे 1994 स' बन्द कय देने अछि। फलस्वरुप 1994-1997 गाममे बिजलीकरणक काज ठप रहल। संचरणक विधिवत व्यवस्था अत्यन्त दयनीय रहबाक कारणे स्थिति दिनोंदिन खराब भ' रहल अछि। दरअसल उत्पादन हो या संचरणक विस्तार अथवा नीचास्तर धरि बिजली वितरणक व्यवस्थामे एहि अंचलक तिरस्कर भेल छैक। एहना स्थितिमे आर्थिक विकासकें अवरूद्ध होयब स्वाभाविक अछि।

बिजलीक उत्पादन क्षमता एहि अंचलमे एखन एहि तरहें अछि :

ताप विद्युत उत्पादन :			
1. बरौनी	2 × 50 मेगावाट	100	मेगावाट
	2 × 100 "	200	"
2. मुजफ्फरपुर	2 × 110 मेगावाट	220	मेगावाट
पनबिजली उत्पादन :			
3. कोसी	4 × 5 मेगावाट	20	मेगावाट
4. गंडक	3 × 5	15	मेगावाट
	कुल उत्पादन	**575**	**मेगावाट**

बिहार राज्य विद्युत बोर्ड वर्ष 1981 मे 1570 मेगावाट बिजली उत्पादन कयलक जखन कि सम्पूर्ण भारतमे 4679 मेगावाट भेल छल। मिथिलांचलमे मात्र 490 मेगावाट उत्पादन होइछ। एहिमे 455 मेगावाट ताप बिजली, 20 मेगावाट पनबिजली एवं 15 मेगावट डीजल स' उत्पादन कयल जाइत अछि। एकर अलावा 65 मेगावाट बिजली चुखा ताप विद्युत, सिलीगुड़ी होइत पूर्णियामे उपलब्ध होइछ।

मिथिलांचलमे विद्युत संचरण व्यवस्था बिहार राज्य विद्युत बोर्ड द्वारा एखनुत व्यवस्थित नहि भ' सकल अछि। आइ धरि 220 के. वी. लाइनक कोनो ग्रिडक निर्माण नहि भेल छैक। एहि स' एहि अंचलमे जबर्दस्त विद्युत संकट व्याप्त रहैछ। एहि अंचल के बिजली आपूर्त्ति हेतु एकमात्र साधन मोकामा पुल केबुल लाइन (हाथीदह क्रासिंग) बरौनी ताप विद्युत केन्द्रक समीप अछि। एहि दोहरा परिपथ स' 100-150 मेगावाट बिजली संचरणक व्यवस्थाक छल। किन्तु दुर्भाग्यवश 1955 मे एकटा परिपथ जरि गेल जकर मरम्मत मार्च 1999 धरि नहि भ' सकल। टूटा संचरण लिंक क्रासिंगक व्यवस्था भ' रहल छल जे, पूरा होमयवला छल।

(1) बरौनी-बिहारशरीफ-दोहरा परिपथ 220 के वी

(2) मुजफ्फरपुर-फतवार बिहारशरीफ–बोधगया-दोहरा परिपथ 220 के वी

विद्युत शक्ति वितरण हेतु 33 के वी. क अनेक उपकेन्द्र कार्यरत अछि। वितरण प्रणलीमे 33 के. वी. ओ 11 के. वी. लाइनक संख्यामे वृद्धिक बजाय कमी भ' गेल छैक। जरल ट्रांसफार्मरक मरम्मति समय पर नहि भ' रहल अछि।

मिथिलांचलमे विद्युत रेल संकर्षण लाइन अद्यपर्यन्त नहि बनल अछि। सातम आ आठम पंचवर्षीय योजनामे एहि हेतु कोनो प्रावधान नहि कयल गेल। नवम पंचवर्षीय योजना बीत रहल अछि। बिहारक रेल मंत्रीक कार्यकालोमे एहि पर ध्यान नहि देल गेल।

भारतक औद्योगिक विकास बैंक 1989 मे मिथिलांचलक आर्थिक विकास विषय पर एक सेमिनार कयने छल एवं आठम पंचवर्षीय योजना काल (1995) धरि विद्युत शक्तिक मांग के अंकने छल जे एहि तरहें छल

(i) समस्त राज्यक मांग (डी वी सी क्षेत्र के छोरि)	700	मे वाट
(ii) समस्त बिहार राज्यक माग	2200	मे वाट
(iii) उत्तर बिहारक मांग	120	मे वाट
(iv) उत्तर बिहारमे 1995 धरि संभावित माग	550	मे वाट
(1) राज्यक वर्तमान क्षमता (बी एस इ बी)	1479	मे वाट
(2) चुक्का स' प्राप्त	65	मे वाट
(3) फरक्का ताप केन्द्रमे हिस्सा	135	मे वाट
(4) कहलगांव ताप केन्द्रमे हिस्सा	180	मे वाट
(5) तेनुघाट ताप बिजली गृह (5 × 210 मे वाट)	1050	मे वाट

आठम पचवर्षीय योजनाक अन्त धरि 2000 मेगावाटक कुल मांगमे मात्र 1408 मेगावाट उपलब्ध भ' रहल छल। एहि आपूर्ति के ठीक करबाक हेतु लघुकालीन ओ दीर्घकालीन योजना बनायल गेल। मरम्मत आदिमे 21 करोड़ रुपया एवं दीर्घकालीन योजनाक हेतु 1370 करोड़ रुपया आंकल गेल छल। एहिमे मिथिलांचलमे प्रति व्यक्ति बिजली उपयोग 70 किलोवाटक योजना छल जे मात्र 18 किलोवाट अछि।

प्रस्तावित योजनामे			करोड़मे रुपया
(1) उत्पादन (4 x 210 मे वाट)			1008
(2) संचरण एवं विवरण			
(i) 200 के.वी. लाइन (डी/सी) 100 कि.मी.		12.00	
(ii) 132 के.वी. लाइन (डी/सी) 200 कि.मी.		16.00	
(iii) 33 के.वी. लाइन (एस/सी) 330 कि.मी.		6.00	
(iv) 11 के.वी. लाइन (एस/सी) 5,000 कि.मी.		64.00	
(v) 415 के.वी. लाइन (एस/सी) 20,000 कि.मी.		160.00	258
(3) उपकेन्द्र			
(i) 200 के.वी./132 के.वी.	1	8.00	
(ii) 132 के.वी./33 के.वी.	3	12.00	
(iii) 33 के.वी./11 के.वी.	28	19.00	
(iv) 11 के.वी./415 के.वी.	5000	65.00	104
कुल जोड़			**1370**

भारतीय औद्योगिक बैकक योजना जे मिथिलांचलक औद्योगिक विकासमे विद्युत आपूर्तिक हेतु बनल छल, मात्र सेमिनार ओ कागजे पर लिखल रहि गेल। राज्य ओ भारत सरकार एहि दिशामे कोनो प्रयास नहि कयलक।

बिहार राज्यमे विद्युत उत्पादन पर जोर नहि देल गेल। केन्द्रीय निवेश दर अत्यल्प रहल। प्रथम पंचवर्षीय योजना स' आठम योजना काल धरि निवेश नगण्य छल। बिजली आपूर्ति उत्पादन द्वारा नहि खरीद कय पूरा करबाक योजना बनल। तखन ज्ञात भेल जे संचरण ओ वितरण व्यवस्था चौपट स्थितिमे अछि। एक आकलनक अनुसार संचरण घाटामे 25 प्रतिशत बिजली नष्ट भ' जाइछ। राज्य सरकार बिजली संचरण व्यवस्थाकें दुरुस्त करबाक योजना बनौने अछि। बिहारशरीफ स' मिथिलांचलमे 200-200 मेगावाट बिजली संचरण एखन संभव नहि अछि। पूर्णिया स' बेगूसराय एवं बेगूसराय स' समस्तीपुरमे नवीन संचरण व्यवस्था करबाक योजना छैक। संचरण व्यवस्था पर 1998-

99 मे 100 करोड़ रुपया तथा ग्रामीण विद्युतीकरण पर लगभग 125 करोड़ रुपया खर्चक योजना छल। हाथीदह गंगा क्रासिंग धरि 148 किलोमीटर संचरण लाइन 1999 मे पूरा करबाक योजना छल। दोसर बेगूसराय स' पूर्णिया धरि 384 किलोमीटर लम्बा लिंक लाइन 2000 धरि पूरा करबाक योजना अछि। मुजफ्फरपुर स' बेगूसराय धरि 280 किलोमीटर लिंक लाइन दिसम्बर 2000 धरि पूरा करबाक योजना छैक।

■

श्रम-शक्ति

किछु अर्थशास्त्रीक मत छन्हि जे कोनो देशक वास्तविक धन ओहि देशक भूमि, पानि, कल-कारखाना, वन, खदान, पशुमे नहि वरन ओहि देशक स्वस्थ एवं सुखी पुरुष, महिला ओ बच्चामे निहित अछि। आदम स्मिथक मत छन्हि जे प्रत्येक देशक वार्षिक श्रम कोष वैह थिक जे मौलिक रूप स' जीवनक अनिवार्यता एवं सुविधाक पूर्ति करैछ। वास्तवमे मानव उत्पादनक साधन एवं साध्य दुनू अछि। देशक उत्पादकताक वृद्धिक हेतु शिक्षित, स्वस्थ एवं परिश्रमी श्रमिक अनिवार्य अछि।

खेतिहर मजदूर

खेतिहर मजदूर स' ओहि ग्रामीण मजदूरक बोध होइछ जे कृषि कार्यमे लागल रहैत छथि। खेतिहर मजदूर वर्ग तथा अन्य ग्रामीण मजदूर वर्गमे अन्तर करब कठिन अछि। कृषि श्रम जांच समिति खेतिहर मजदूरक श्रेणीमे कृषि कार्यमे लागल ओहि सब मजदूर कें रखलक जे वर्ष भरिमे आधा या आधा स' अधिक भागमे मजदूरी करैत छथि। मिथिलांचलमे कुल ग्रामीण परिवारक आधा स' अधिक भूमिहीन मजदूर परिवार अछि। भारतक आर्थिक विकासमे मजदूर शब्दक अर्थ छल संगठित उद्योगमे कार्यरत श्रामिक स'। तें औद्योगिक श्रमिकक समस्या पर विशेष ध्यान देल गेल अछि। खेतिहर मजदूरक समस्या उपेक्षित रहल। कृषि सुधार समितिक अनुसार कृषि विकासक कोनो योजनामे खेतिहर मजदूरक समस्या पर समुचित ध्यान नहि देब कृषि व्यवस्थाक एक दर्दनाक समस्याक उपेक्षा करब होयत। 1950-51 मे भारत सरकार खेतिहर मजदूरक समस्याक अध्ययन हेतु एकटा समिति नियुक्ति कयलक। पुन: प्रथम पंचवर्षीय योजना कालमे एहि समस्याक अध्ययन कयल गेल। खेतिहर मजदूर कें तीन वर्गमे विभाजित कयल जाइत अछि:—

(1) खेतमे काज करयवला–हरवाह, खेतमे मांटि कटिनिहार आदि।

(2) कृषि स ' संबधित काज–गाड़ीवान, इनार-कूप खुननिहार आदि।

(3) कृषिक अतिरिक्त अन्य सहयोगी उद्योग–कमार, बढ़ही आदि।

मिथिला कृषि प्रधान अंचल अछि एवं खेतिहर मजदूरक संख्या एतय अत्यधिक छैक। हिनका सभक अनेक कठिनाइ ओ समस्या छन्हि। अत्यल्प मजदूरी भेटैत छन्हि। बड़ु दयनीय स्थितिमे अपन गुजर-बसर करैत छथि। 1950 मे कृषि श्रम जांच समितिक अनुसार एतय पुरुष खेतिहर मजदूरक औसत दैनिक मजदूरी एक रुपया उन्नैस पैसा स' एक रुपया एकतीस पैसा धरि छल। महिला श्रमिकक मात्र साठि पैसा स' एक टाका धरि छल। मजदूरीक कोनो प्रामाणिक तरीका नहि छल। हिनका लोकनिकें मजदूरी या त नगदी या अन्नक रूपमे या दुनू भेटैत छल। हिनक औसत आय बहुत कम छल।

प्रति व्यक्ति औसत वार्षिक आय मात्र 95.00 रुपया। एहि स' स्पष्ट अछि जे हिनक जीवन-स्तर निम्न कोटिक छन्हि। हिनक काज करबाक समय सेहो निश्चित नहि अछि। हिनका लगातार काज नहि भेटैत छन्हि। ई अधिकांश समय बेकार रहैत छथि। बेकारी तथा अर्द्ध-बेकारीक भीषण समस्या छैक। कर्जक बोझ बराबरि बढ़ैत जाइछ। न्यूनतम आवश्यकताक हेतु ऋण लेबय परैत छैक। मूल्यवृद्धिक अनुपातमे मजदूरीमे वृद्धि नहि कयल जाइछ। हिनका बीच सगठनक पूर्ण अभाव अछि। हिनक खोपड़ीक जमीन पर हिनक अधिकार नहि छन्हि। बीमारी, बुढ़ापा तथा अन्य परिस्थिति स' उबरबाक हेतु सामाजिक सुरक्षाक कोनो व्यवस्था नहि छैक। अर्द्ध-बेकारी तथा सामाजिक कठिनाइ स' ग्रस्त खेतिहर मजदूरक पैघ संख्या कृषि-व्यवस्थाक स्थापित तथा गम्भीर शक्तिहीनताक सूचक ओ लज्जाजनक स्थिति अछि। की एहि अचलक एहि वर्गक कठिनाइ ओ समस्याकें बिना दूर कयने ग्रामीण अर्थव्यवस्थाक नीव सुदृढ़ ओ सम्पन्न भ' सकैछ ?

ब्रिटिश शासनकालमे एहि भूभागक खेतिहार मजदूक दयनीय स्थितिकें सुधारबाक कोनो समुचित प्रयास नहि कयल गेल। स्वतत्रता प्राप्तिक बाद छिट-पुट काज भेल मुदा ठोस परिणाम दृष्टिगोचर नहि भ' रहल अछि। हिनक होनावस्थाक प्रधान कारण अछि

(1) जनसंख्याक अत्यधिक वृद्धिक परिणामस्वरुप कृषियोग्य भूमिक निरन्तर उपविभाजन होइत रहल, जाहि स' जोत भूमि छोट होइत गेल एव एहि कारणे कृषि-कार्य अलाभकर भ' गेल।

(2) कुटीर ओ ग्रामीण उद्योगक ह्रास–एतयक लोक अपन जरुरतक वस्तुक उत्पादन करैत छलाह एवं खुश-फैल जीवन-यापन करैत छलाह। ब्रिटिश शासनकालक प्रारम्भ स' कुटीर आ ग्रामीण उद्योगक विनाश होमय लागल। कारीगर लोकनि बेकार भ' गेलाह। जीविकाक हेतु कृषि-कार्यमे लगलाह, जाहि स' खेतिहर मजदूरक संख्यामे वृद्धि भेल।

(3) कर्जक बोझ–एतय एहि वर्गक लोक कर्जमे जन्म लैत छथि, कर्जेमे जीवन व्यतीत करैत छथि आ अन्तमे कर्ज भार स' जीवन अन्त होइत छन्हि।

(4) हिनका सालोभरि काज नहि रहैत छन्हि। वर्षमे अधिकाश भाग ई सभ बेकार रहैत छथि।

(5) मजदूरी भुगतानक दोषपूर्ण पद्धति–पहिने अन्न मजदूरीमे भटैत छलै। आब नगदो देल जा रहल अछि। मूल्यवृद्धिक अनुपातमे मजदूरी नहि बढ़ैत छैक। न्यूनतम मजदूरी सरकारी घोषणाक अनुसार नहि देल जाइछ।

(6) दोषपूर्ण रैयती कानून तथा अनुपस्थित जमीन मालिकक दोषपूर्ण व्यवहार–जमीनक मालिक गाम स' बाहर रहैत छथि मुदा हिनका स' सम्पूर्ण उपजाक हकदारो रखैत छथि।

(7) संगठनक पूर्ण अभाव छैक जाहि स' आर्थिक विवशता हिनका लोकनिक बढ़ल जा रहल छन्हि। बामपंथी दल छिट-फुट किसान संगठन यथासमय बनयलक मुदा कारगर नहि सिद्ध भेल अछि।

स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद सरकार खेतिहर मजदूरक प्रति थोड़ेक साकांक्ष भेल, किन्तु फल नगण्य अछि। न्यूनतम मजदूरीक दर निशिचित भेल, काजक समय निश्चित कयल गेल, कुटीर अथवा पूरक उद्योग घंधाक विकास, शिक्षा तथा स्वास्थ्य संबंधी सुधार, आवश्यक व्यवस्था, भूमिहीन मजदूरक लेल भूमिक व्यवस्था, सहकारी साख समिति द्वारा कर्जक व्यवस्था कयल गेल एवं अन्य लाभकारी योजनाक प्रारुप बनल। किछु योजनामे काज भेल, किन्तु भूमिक उचित बंटवारा एखन धरि नहि भ' सकल। भूमि सीमा निर्धारण कानून अवश्य बनल मुदा अधिक भूमि सरकार अधिग्रहण नहि कय सकल। भूदानमे भूमि भेटल मुदा भूमिहीनक बीच सही ढंग स' भूमिक बंटवारा नहि भेल। भूमि सुधारक अधिनियम सब विफल भेल। फलस्वरुप एहि अंचलक खेतिहर मजदूरक पलायन भेल। कृषि व्यवस्था लचरि गेल। आर्थिक स्थिति दिनोंदिन ह्रासे होइत रहल।

औद्योगिक श्रमिक

आजुक पूंजीवादी उत्पादन व्यवस्था स्पष्टत: दू वर्गमे विभाजित अछि। पूंजीपति एवं उद्योगपतिक वर्ग। एहि वर्गक उद्देश्य उत्पादन स' अत्यधिक लाभक उपार्जन। दोसर वर्ग अछि श्रमिक। श्रमिक अपन श्रम बेचिकय आजीविका प्राप्त करैत छथि एवं अपन जीवनक सर्वांगीण विकासक हेतु तत्पर रहैत छथि। छोट-छोट बात पर हिनका दुनूक बीच विवाद भ' जाइछ एवं औद्योगिक संबंध खराब भ' जाइछ। परिणामस्वरुप हड़ताल ओ तालाबंदी भ' जाइछ। एहि बन्दीक प्रभाव मात्र अहि दुनू वर्ग पर नहि वरन् सम्पूर्ण समाज पर परैत अछि। आर्थिक व्यवस्था चरमरा जाइछ एवं विकास अवरुद्ध भ' जाइछ। तें औद्योगिक समृद्धिक हेतु श्रम एवं पूंजीक बीच शान्तिपूर्ण संबंध परमावश्यक अछि। आर्थिक विकासक हेतु उद्योगीकरणक महत्व प्रमुख छैक, जे बिना औद्योगिक शान्ति एवं सद्भावक असंभव। मजदूरी निर्धारणक निश्चित ओ वैज्ञानिक आधारक अभाव, छुट्टी ओ काजक अवधिमे अनियमितता, भरती, प्रोन्नति ओ छटनी आदिमे पक्षपातपूर्ण रवैया एवं राजनेता लोकनिक स्वार्थपरक दखलंदाजी औद्योगिक संघर्षक मुख्य कारण अछि।

भारतमे श्रमिक संघक आन्दोलन 1875 मे मुम्बईमे प्रसिद्ध समाज सुधारक श्री शोरावजी शापुरजीक नेतृत्वमे प्रारम्भ भेल। एक कारखाना आयोग बनायल गेल एवं 1881 मे पहिल कारखाना अधिनियम बनायल गेल। प्रथम विश्वयुद्धक समाप्ति पर श्रमिक संगठनमे तेजी आयल एवं 1919 मे अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संघक स्थापना भेल। 1926 मे प्रथम श्रमिक संघ अधिनियम पारित भेल, जाहि स' श्रमिक संघक स्थिति वैधानिक भ' गेल। 1947 मे देशकें स्वतंत्र भेला पर प्रत्येक राजनैतिक दल श्रमिक संघ

बनौलक। किन्तु श्रमिक संघ ओतेक प्रगति नहि कयलक अछि जाहि तरहें एकर विकास विकसित देशमे भेल छैक। 1926 मे बनल विधानक 1960 मे संशोधन भेल। अधिनियम पुरान भ' गेल अछि। उद्योगीकरण बढ़ि गेल, श्रमिकक दृष्टिकोणमे परिवर्तन भेल, सामान्य मान्यता बदलि गेल ओ पूंजीपतिक दृष्टिकोण बदलल अछि। एहेन स्थितिमे नवीन अधिनियम बनायल जाय, जाहि स' संघक स्थिति सुदृढ भ' सकय तथा देशक औद्योगिक विकासमे कोनो प्रतिरोध नहि उत्पन्न हो।

संतुष्ट मजदूरे स' औद्योगिक विकास संभव। मजदूरक सामाजिक एवं मानसिक उन्नतिक लेल श्रम-कल्याण काज परमावश्यक। 1937 मे अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन एवं भारत सरकारक श्रम जांच समिति जलपान गृह, आराम तथा खेलकूदक सुविधा, दवाईक व्यवस्था, आवागमनक सुविधा, आवास व्यवस्था, सहकारी समिति, मातृ एवं शिशु गृह, शौचालयक व्यवस्था, सामाजिक बीमा, भविष्य निधि आदिक व्यवस्थाक सुझाव देने अछि। संगहि वैज्ञानिक पद्धति स' नियुक्ति, कारखानामे स्वच्छता, प्रकाश ओ वायु, दुर्घनाटक रोक-थाम सेहो श्रम कल्याण थिक। एहि अचलमे उद्योगीकरणक श्रीगणेश ठीक स' नहि भेल अछि। श्रम कल्याण काजमे समुचित व्यवस्थापक अभाव छैक।

■



औद्योगिक ओ आर्थिक नीति

प्रारम्भमे राज्यक काज मात्र बाहरी आक्रमण स' देशक सुरक्षा तथा देशक भीतर शान्ति ओ व्यवस्था कायम राखब बुझल जाइत छल। आरंभमे मुक्त व्यापारवादी अर्थ नीतिक मान्यता छल। सरकारक हस्तक्षेप व्यक्तिगत स्वतंत्रताक अपहरण मानल जाइत छल। मानव सभ्यताक विकासक संगे-सग राज्यक काजमे उत्तरोत्तर वृद्धि भेल। राजनीतिक काजक सग आर्थिक क्षेत्रमे हस्तक्षेप बढय लागल। विश्वमे एक दिस पूंजीवादी ओ दोसर दिस साम्यवादी आर्थिक ढाचा अछि। भारतमे सरकार जनतांत्रिक समाजवादक नीतिके अपनौने अछि। उनसैम शताब्दीमे ब्रिटेनमे स्वतंत्र व्यापारक युग छल। भारतके यैह नीति अपनाबय परल। प्रथम महायुद्धमे एहि नीतिमे आंशिक परिवर्त्तन भेल तथा युद्धक लेल आवश्यक वस्तुक उत्पादन बढल। एतहि औद्योगिक क्षेत्रमे प्रथम राजकीय हस्तक्षेपक श्रीगणेश भेल। 1916 में सरकार औद्योगिक आयोग गठित कयलक। 1919 मे सवैधानिक सुधारक अनुसार उद्योग के प्रान्तीय विषय बनायल गेल एवं प्रान्तीय सरकारके औद्योगिक विकासक हेतु सहायता देबाक अधिकार भेटल। दोसर विश्वयुद्ध (1939-45) कालमे युद्धक सामग्री तैयार करबाक लेल प्रोत्साहन सरकार दिस स' भेटल। स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद अप्रैल 1948 मे भारत सरकार औद्योगिक नीति प्रस्तुत कयलक। उद्योगके चारि भागमे बांटल गेल। पहिलमे अस्त्र-शस्त्र, अणु-शक्ति आदिक उत्पादन सरकारी एकाधिकारमे, दोसर सरकारी नियंत्रण क्षेत्रमे आधारभूत उद्योग कोयला, लोहा एवं इस्पात, वायुयान आदि; तेसर 20 अन्य उद्योग निजी क्षेत्र किन्तु सरकारी सामान्य नियमन एवं नियंत्रणमे नोन, मोटरगाड़ी, ट्रैक्टर, रसायन, खाद, सीमेंट, चीनी, कागत आदि चारिम शेष सब उद्योग निजी क्षेत्रमे राखल गेल। कुटीर एवं लघु उद्योगके महत्व देल गेल। उत्तम औद्योगिक (विकास एवं नियम) अधिनियमके 45 उद्योग पर लागू कयल गेल। देशक संतुलित औद्योगिक विकासके विकसित करयमे ई अधिनियम पैघ योगदान कयलक।

1954 मे भारतीय संसद समाजवादी ढांचाक सामाजिक व्यवस्था कें अपन सामाजिक तथा आर्थिक नीतिके आदर्श रुपमे स्वीकार कयलक। संविधानक सिद्धान्त, समाजवादी व्यवस्थाक उद्धेश्य तथा गत अनुभवक आधार पर अप्रैल 1956 मे औद्योगिक नीतिक घोषणा कयल गेल। उद्योग-धंधा कें तीन भागमे बांटल गेल। प्रथम सरकारी एकाधिकारमे 17 उद्योग–अस्त्र-शस्त्र, परमाणु-शक्ति, वायुयान निर्माण, वायु एवं रेल यातायात, टेलीफोन आदि; दोसर 12 उद्योग-आलमुनियम, खाद, कृत्रिम रबर, रासायनिक पल्प आदि; तेसरमे जकर विकास सामान्यत: निजी क्षेत्रक अधीन कयल गेल। किन्तु एहि नीतिमे उद्योगक विभिन्न विभाजनके विशेष परिस्थितिमे परिवर्त्तन कयल जा सकैछ। निजी क्षेत्र पर सरकार उचित ध्यान देत जाहि स' स्वस्थ उद्योगक विकासके प्रोत्साहन भेटत। वृहत तथा कुटीर ओ लघु उद्योग-धंधाक विकासमे समन्वय राखल जायत एवं विभिन्न क्षेत्रक उद्योगक संतुलित विकासमे सहायक होयत। एहि नीतिमे एक मिश्रित अथवा नियंत्रित आर्थिक व्यवस्थाक निर्माणक आयोजन छल, जाहि स' देशक आर्थिक विकासमे सरकारी तथा निजी दुनू क्षेत्र समन्वय राखत। किन्तु एहि नीतिक आलोचनामे कहल जाइछ जे राजकीय उपक्रमके अनुचित रुप स' विस्तृत कयल गेल। निजी क्षेत्र के राष्ट्रीयकरणाक धमकी भेटय लागल ओ राष्ट्रीयकृत कयलो गेल। एहि स' उद्योगक विकास बधित भेल। 1970 मे सरकार नवीन औद्योगिक लाइसेंसिंग नीतिक घोषणा कयलक। पुन: 1975 मे देशमे राजनीतिक परिवर्तन भेल एवं दिसम्बर 1977 मे नव औद्योगिक नीति घोषित भेल। एकर अन्तर्गत ग्रामीण तथा छोट-छोट शहरमे अवस्थित कुटीर एव लघु उद्योगके अत्यधिक महत्व देल गेल। जुलाई 1980 मे समन्वित औद्योगिक विकासक हेतु औद्योगिक नीतिक घोषणा भेल। एहिमे संस्थापित क्षमताक अधिकतम उपयोग, अधिकतम उत्पादन तथा अधिकतम उत्पादकताक प्राप्ति; अधिकाधिक रोजगारक अवसरक सृजन, प्रादेशिक विषमता दूर करब, निर्यात संवर्धन तथा आयात-प्रतिस्थापन उद्योगक अधिकाधिक विकास एव उच्च मूल्य ओ खराब किस्मक विरुद्ध उपभोक्ता सरक्षण पर विशेष ध्यान देल गेल। राजकीय उपक्रमक महत्व बढल। मइ 1990 मे औद्योगिक नीतिक घोषणा कयल गेल। एहिमे उद्योग-धंधा के रोजगारोन्मुखक सग ग्रामीण क्षेत्रक दिस हस्तांरित ओ लघु एव कुटीर उद्योगके विशेष महत्व देल गेल। एहि नीतिमे उद्योग धंधा के नौकरशाही शिकंजा स' मुक्त करबाक हेतु नियंत्रण तथा लाइसेंसिंग प्रणाली के सरल बनायल गेल।

भारतीय अर्थव्यवस्थाक विकासोन्मुखी प्रवृतिके देखैत ई स्पष्ट अछि जे एहिमे विकासक अनन्त संभावना अन्तर्निहित छैक। गरीबी उन्मूलन, रोजगारक अवसरक सृजन, क्षेत्रीय असन्तुलन, प्रौद्योगिकी परिवर्त्तन, भुगतान सन्तुलनक विपन्नताके दूर करब, उद्योग, वाणिज्य ओ व्यापारक क्षेत्रमे दूरगामी परिवर्तन तथा भारतीय अर्थव्यवस्था कें कुशल एव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मक बनयबाक हेतु सरकारक विकास संबंधी नीतिमे परिवर्तन आवश्यक बुझि 1991 मे नवीन आर्थिक नीतिक घोषणा कयल गेल, जकर चारिटा पक्ष–पतिस्पर्धा, निजीकरण, उदारीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीयकरण अछि। एहिमे प्रतिबन्ध ओ नियंत्रणक प्राचीन व्यवस्था स' हटिकय निजी क्षेत्रक विस्तारक सगे-सगे जे क्षेत्र ओ दिशा सार्वजनिक क्षेत्रक हेतु सुरक्षित छल ओ आब संयत्रक स्थापना, दूरसंचार ओ शक्ति उत्पादन, सड़क ओ वायुमे निवेशक वृद्धिक सग प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, अधुनातन प्रबंधकीय तकनीक, विदेशी विशेषज्ञक सेवा, बाजारक विशेषज्ञता तथा निर्यात संबर्द्धन स' विदेशी आयात पर निर्भरता के कम करैत भुगतान असंतुलन के दूर करब संभव होयत। एहि दिशामे बहुराष्ट्रीय निगमक प्रति अत्यन्त उदारवादी दृष्टिकोण अपनायल गेल अछि। एहि स' देशके उच्चस्तरक नवीनतम तकनीक, विदेशी विशेषज्ञक सेवामे भारी मात्रामे विदेशी पूंजी ओ उन्नत अधुनातन

प्रौद्योगिकी प्राप्त भ' सकय। उच्च प्राथमिकता वला क्षेत्र ओ उद्योगमे 51 प्रतिशत धरि विदेशी पूंजी निवेशक अनुमति प्रदान कयल गेल अछि।

नोवन आर्थिक नीतिमे निजीक्षेत्रक कार्य संचालन पर लगायल गेल अनेक कठिन प्रतिबंधकें हटायल गेल या ढ़ील कय देल गेल। जाहि स' निजी क्षेत्रक निवेश, उत्पादन, बिक्री, उत्पादनक प्रविधि ओ वस्तुक गुणवत्ताक सुधारक दिशामे अपन पूरा योग्यता एवं क्षमताक अनुसार काज कय सकय। उदारीकरणक सम्यक ज्ञान एहि स' स्पष्ट होइछ 18 उद्योगकें छोरि सब उद्योगकें लाइसेन्समुक्त कय देल गेल। एकाधिकार एवं प्रतिबन्धात्मक व्यापार अधिनियम स' प्रभावित होमयबला कम्पनीक पूंजी ओ उत्पादन क्षमता विस्तार पर प्रतिबंध हटायल गेल, एकाधिकार एवं प्रतिबंधात्मक व्यापार अधिनियम 100 करोड़ या एहि स' बेसी परिसम्पत्ति वला कम्पनी पर लागू कयल गेल, मशीन विदेश स' बिना पूर्वानुमति कें आयात कयल जा सकैछ एंव लघु क्षेत्रमे पूंजी निवेशक सीमा 7.5 लाख स' 10 लाख कय देल गेल। निजी क्षेत्रकें प्रोत्साहन नीति देशक मिश्रित अर्थव्यवस्थाकें अधिक बाजारोन्मुख बनयबामे सहायक होयत। प्रत्यक्ष नियंत्रण (लाइसेन्स, कोटा) हटा लेला स' निजी ओ सार्वजनिक क्षेत्रमे आपसी प्रतिस्पर्द्धाक प्रवृतिकें प्रोत्साहन भेटल अछि। बहुराष्ट्रीय कम्पनीक प्रवेशकें अधिकाधिक सुअवसर प्रदान कयल गेल छैक। किन्तु देशहितमे बहुराष्ट्रीय कम्पनी द्वारा गैरप्राथमिकता वला वस्तुक (सौन्दर्य प्रसाधन, सुगन्धी, स्नान करयबला साबुन, चाह, बिस्कुट, ब्लेड, पेस्ट, पेय पदार्थ जेली, साउस आदि) उत्पादन पर कठोर प्रतिबंध लगायल जाय। हुनक स्वागत केवल ओहि क्षेत्रमे अल्पकालक हेतु कयल जाय जाहिमे उच्च तकनीक ओ पूंजीक मात्रा बेसी लगैत हो।

24 जुलाई 1991 कें भारत सरकार अपन उपरोक्त औद्योगिक नीतिमे क्रांतिकारी परिवर्तनक बाद 6 अगस्त 1991 कें एक नवीन लघु औद्योगिक नीतिक घोषणा कयलक। एहि नीतिक अन्तर्गत अति लघु इकाइमे पूंजी निवेशक सीमा 2 लाख टाका स' बढ़ायकय 5 लाख कय देलक। एहि क्षेत्रमे उत्पादन क्षमता कें अधिक सशक्त करबाक उद्देश्य छैक। जाहि स' ई क्षेत्र उत्पादन, रोजगार ओ निर्यात वृद्धिमे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था कें पूरा योगदान दय सकय। अति लघु उद्योग कें जमीन आवंटन ओ बिजलीक सुविधा निरन्तर उपलब्ध होयत, जखन कि लघु उद्योग कें मात्र एक बेर। सरकार राष्ट्रीय इक्विटी कोष योजना कें विस्तार कयलक अछि एवं त्रृण योजनाक सीमा कें बढ़ायल गेल छैक। भारतीय लघु उद्योग विकास बैंकक मार्फत लघु उद्योगक बिलम्बित भुगतान समस्याक समाधानक प्रयास कयलक अछि। लघु उद्योग कें ग्रामीण एवं पछुआयल क्षेत्रमे सरलता स' स्थापित करबाक दृष्टि स' कृषि एवं उद्योगक संबंध कें सुदृढ़ करबाक योजना बनौने अछि। आयातित कच्चा मालक उपयुक्त ओ उचित वितरण सुनिश्चित कयल गेल छैक। राष्ट्रीय लघु उद्योग जिलास्तर पर व्यापक उपभोगक वस्तुकें कॉमन ब्रान्डक नामक अधीन बिक्री कें केन्द्रित करत।

बिहार सरकार एहि राज्य कें देशक सर्वोत्तम राज्य बनयबाक दृष्टि स' 20 अगस्त 1995 कें उद्योगीकरणक हेतु अपन औद्योगिक नीतिक घोषणा कयलक। एकर विशेषता अछि :

(1) उद्योग स्थापित करबाक हेतु जमीनक लीजक अवधि 30 वर्ष स' बढ़ाकय 90 साल कयल गेल। (2) 500 मेगावाट शक्तिक जेनरेटरक उपयोग कयला स' न्यूनतम गारंटी नहि लागत। (3) 25 मेगावाट क्षमता धरिक कैप्टिव पावर प्लान्ट लगौला पर कोनो विद्युत उत्पादन शुल्क देय नहि होयत। (4) विद्युत आपूर्ति नहि भेला पर उद्योग कें रिलीफ देल जायत। (5) बिक्री करक सुविधा पिछड़ल जिलामे 10 वर्ष धरि एव विकसित जिलामे 8 वर्ष धरि। (6) नवीन उद्योगक हेतु कच्चा माल पर बिक्री कर नहि लागत। (7) स्तरीय आधारभूत संरचना निर्माणक हेतु प्रवासी भारतीय एवं बहुराष्ट्रीय कम्पनीकें आमंत्रित कयल जायत। केन्द्र सरकारक 1991 क आर्थिक नीतिक अनुरुपे अहू मे प्रावधान अछि। पूंजी निवेशकें आकर्षिक करबाक हेतु देसी-विदेशी पूंजीपति कें बढ़िया छूट ओ सब्सिडी देल गेल छैक।

औद्योगिक नीति 1995 क अन्तर्गत राज्य सरकार लघु उद्योगक द्रुत विकासक हेतु उदारीकरण प्रक्रिया कें सरल बनयबाक दिशामे अनेक सराहनीय निर्णय लेने अछि :

(1) लघु एवं कुटीर उद्योग द्वारा उत्पादित सामानकें सरकारी खरीदमे प्राथमिकता। (2) कच्चा मालक खरीद पर बिक्री दरक विमुक्तिक सुविधा लेबाक विकल्प। (3) बिक्री करक स्थगन तैयार माल पर 10 वर्ष या 8 वर्ष उद्योगक श्रेणीक अनुसार। (4) प्रधानमंत्री रोजगार योजनाक अन्तर्गत उद्योग, व्यापार एवं सेवा प्रक्षेत्रमे नव उपक्रम कें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, तकनीकी योग्यताधारी तथा कमजोर वर्गक लोक कें, जे जन्मजाते परम्परागत उद्योग स' जुरल छथि, प्राथमिकताक आधार पर संचरनात्मक सुविधा उपलब्ध करब (6) लघु, मध्यम तथा वृहत उद्योग द्वारा उत्पादित मालक विपणन व्यवस्था।

एहि नीतिमे राज्य सरकार रुग्ण उद्योगक अनवरत समस्या एवं बन्द परल इकाई स' बेरोजगारी ओ स्थिर निवेश कयल पूंजीक हेतु प्रभावी उपाय तथा संभव साहाय्यक हेतु कृतसंकल्प अछि। रुग्ण उद्योगक पुनर्वास हेतु राज्यस्तरीय शीर्ष संस्थाके पर्याप्त शक्ति प्रदान कयल जायत जाहि स' ई संस्था प्रबंधन एवं वित्तीय पुनर्रचना कार्यक्रम के प्रभावी ढ़ंग स' कार्यान्वित कय सकय। बिक्री करक विमुक्ति या स्थगन या न्यूनतम गारंटीक हकदार एहन इकाई भ' सकैछ। पुनर्वास पैकेज सुनिश्चित समय-सीमाक अन्दर कार्यान्वित कयल जायत।

बदलैत परिवेशमे राज्य सरकार आर्थिक विकास लेल निर्यातक महत्व के स्वीकार कयने अछि। एहि हेतु बिहार स' निर्यात वृद्धिक हेतु अनेक प्रस्ताव रखने अछि। एकटा राज्यस्तरीय निर्यात विकास परिषदक स्थापनाक संकल्प छल। हाजीपुरमे भारत सरकारक

यता स' स्थापित होमयबला निर्यात उन्नयन औद्योगिक पार्क निर्यातोन्मुखी इकाई उच्च कोटिक गुणवत्ताक संरचनात्मक सुविधा प्रदान कयल जायत। निर्यात प्रोसेसिंग नक स्थापनामे निजी क्षेत्र के प्रोत्साहित कयल जायत। निर्यात उत्पादन हेतु वश्यकतानुसार प्रशिक्षण एव डिजाइन केन्द्र स्थापित कयल जायत एवं वर्कशॉप ओ मिनार सेहो आयोजित होयत।

1991 मे भारत सरकारक घोषित आर्थिक नीति ओ उदारीकरणक सफलता पर डिया टुडेक हेतु मुम्बईक विपणन सर्वेक्षण एजेन्सी-मार्ग-देश भरिक 1172 टा शहरी मध्यवर्गीय घरक खर्चा ओ आर्थिक उदारीकरण सर्वेक्षणक परिणाम निम्नांकित अछि:

सरकारक आर्थिक नीतिक वजह स'	उदारीकरण नीतिक मुख्य असर की होयत
(1) जिन्दगी नोक भेल– 18 प्रतिशत	(1) धनी वर्ग के लाभ–67 प्रतिशत
(2) हमरा पर प्रभाव– 54 प्रतिशत	(2) मूल्य वृद्धि होयत–79 प्रतिशत
(3) जिन्दगी बदतर भेल– 28 प्रतिशत	(3) भ्रष्टाचार बढ़त–68 प्रतिशत

बिहार सरकारक 1995 क आर्थिक नीतिक परिणाम मार्च 1991 धरि शून्य रहल। पूजी निवेश नहि भेल, उद्योग जे चलैत छल से रुग्ण भ' गेल। रुग्ण उद्योग अपन रुग्णता स' जर्जर भेल, बेरोजगारी बढ़ल ओ श्रमिकक पलायन भेल एवं आर्थिक स्थिति विपन्नताक सीमाकें पार कय गेल। बिहारक खासकय मिथिलांचलक औद्योगिक विकास मात्र राज्य सरकारक दिवास्वप्न बनिकय रहि गेल।

गुप्त धन: भारत.य अर्थव्यवस्थाक कोढ़

गुप्त मुद्रा अनेक नाम स' जानल जाइछ। यथा, भूमिगत, नुकायल, समानान्तर, अनौपचारिक, अनियमित, दू नम्बर आदि। ओ आय जे विभिन्न आर्थिक क्रिया द्वारा प्राप्त होइछ। एहि आयक कोनो रेकर्ड नहि होइछ। एहन आय पर कर ओ कोनो अन्य कानून क पालन नहि करबाक कारण राष्ट्रीय आय कम भ' जाइछ। एहि धनक उपयोग बचत या उपभोगक रूपमे कयल जाइछ। विभिन्न प्रकारक परिसम्पत्ति प्राप्त कयल जाइछ। गुप्त धनक संचय गलत विधि स' आय द्वारा कयल जाइत अछि। एकरा अनेक 'बेनामी' रुप से राखल जाइछ। गुप्त मुद्राक संबंध ओहि मुद्रा स' अछि जे चलनमे अछि। गुप्त मुद्रा, गुप्त आय एवं गुप्त धनक एक अंश थिक। एहि अर्थव्यवस्थाक चारि तत्व छैक–

(1) गुप्त मुद्रा, (2) गुप्त आय, (3) गुप्त धन एवं (4) गुप्त लेन-देन।

एहिमे ओहन सब आर्थिक क्रिया के शामिल करयक चाही जकरा समानान्तर अर्थव्यवस्था स' जानल जाइछ। समानान्तर व्यवस्थामे भौतिक वस्तु एव सेवा, विनियोग,

बचत एवं आयक प्रवाह रहैछ, किन्तु एकर कोनो रेकर्ड नहि राखल जाइछ। एहि व्यवस्थामे ओ सब लेन-देन शामिल होइछ जे आय नुकाक विनियोग [illegible] अछि एवं एकर निरन्तर उत्पादन होइत रहैछ। गुप्त अर्थव्यवस्था विभिन्न विधीसे गैर कानूनी ढंग स' जुरल अछि। एकर दायरा बहु व्यापक तथा ई औपचारिक एवं गैर-औपचारिक [illegible] बाजारमे होमयवला लेन-देन स' सम्बद्ध अछि।

अपना देशमे गुप्त अर्थव्यवस्थाक आकार राष्ट्रीयक 30 प्रतिशत स' 100 प्रतिशत आंकल जाइछ। लगभग 3,00,000 करोड़ रुपया प्रतिवर्ष गुप्त आयक सृजन होइछ। ई आय देशक लगभग 30 प्रतिशत परिवारक हाथमे केन्द्रित अछि। एहि आयक उपयोग सोना-जवाहरातक खरीद, विलासिताक वस्तुक उपभोग, विदेशमे अवकाश कालीन करब, विदेशमे धन जमा करब जाहि स' बिना जाँच-पड़ताल के धन-राशि सुरक्षित रहि सकय। स्वतत्रताक प्रारम्भिक वर्षमे प्रो. निकोल्य काल्डोर सर्वप्रथम 200 करोड़ गुप्त मुद्राक अनुमान कयलनि। 1983-84 मे सकल घरेलू उत्पादक 18 प्रतिशत आकल गेल। किछु दिन बाद प्रो. राजा चेल्लैया एकरा 21 प्रतिशत अर्थात 36786 करोड़ रुपया अकलनि। आब प्रतिवर्ष 80,000 करोड़ रुपया गुप्त मुद्राक रूपमे वृद्धि रहल अछि। किछु विशिष्ट राष्ट्रीय आयक 50 प्रतिशत गुप्त मुद्राके मानैत छथि। एहि तरहें प्रतिवर्ष 5,00, 000 करोड गुप्त मुद्रा उत्पन्न भ' रहल अछि। एहि राशिक तुलनामे भारत सरकारक 1,80,000 करोड रुपयाक आय नगण्य लगैत अछि।

गुप्त आयक सक्रामक समस्या अर्थव्यवस्थामे दीर्घकाल स' अछि। एहि समस्या स' निपटक हेतु 1946 एव 1978 मे विमुद्रीकरण कयल गेल। पैघ मूल्यक नोटके वापस लेल गेल। जाहिमे एक हजार रुपयाक नोटक चलन आपस लय लेल गेल। गुप्त आयक सृजनके एहि उपाय स' कम नहि कयल जा सकल। सरकार स्वैच्छिक घोषणा योजनाक माध्यम स' प्रयास कयलक एव एखन एहि हेतु घोषित योजना निम्न अछि

गुप्त मुद्रा के स्वैच्छिक ढ़ंग स' बाहर करयक उपाय

क्रम संख्या	वर्ष	उपाय
1.	1946	विमुद्रीकरण
2.	1951	स्वैच्छिक प्रकटीकरण योजना
3.	1965	स्वैच्छिक प्रकटीकरण योजना दू प्रकारक छल (क) 60-40 योजना (ख) [illegible] योजना
4.	1975	स्वैच्छिक प्रकटीकरण योजना
5.	1978	विमुद्रीकरण
6.	1981	विशेषधारक बांड
7.	1985	स्वैच्छिक प्रकटीकरण योजना

8.	1986	इंदिरा विकासपत्र
9.	1991	(क) राष्ट्रीय विकास योजनामे स्वैच्छिक जमा योजना
		(ख) विदेशी मुद्रा प्रेषण योजना
		(ग) भारतीय स्टेट बैंक भारत विकास बांड
		(घ) उदारीकरणक नीति: विभिन्न प्रकारक नियंत्रण के हटायब, जकरा अन्तर्गत औद्योगिक नीति, आयात-निर्यात नीति द्वारा लाइसेंस/परमिट व्यवस्थाक समाप्ति।
10.	1997	आयक स्वैच्छिक घोषणा

किन्तु, राजनीतिक इच्छा-शक्तिक कमीक कारणें एहि समस्याक निदान लेल कोनो ठोस प्रयास नहि भेल छैक।

बर्लिन स्थित ट्रांसपरेसी इन्टरनेशनलक अनुसार भारत विश्वक प्रमुख भ्रष्ट देशमे एक अछि। ई संस्था घूस लेन-देन करयबला देशक सर्वेक्षण करैछ। नाइजीरिया सर्वाधिक भ्रष्ट देश, ओकर बाद पाकिस्तान, तकर बाद केन्याक स्थान अछि। क्रमानुसार बंगलादेश, चीन, कैमरून, बेनेजुएला, रूस, भारत आदि देशक नाम छैक। न्यूजीलैंडक नाम सब स' अन्तमे अछि। जर्मनीमे घूस कें उपयोगी व्यय मानल जाइछ।

लोकतंत्र ओ राजनीतिक भ्रष्टाचारमे घनिष्ठ संबंध छैक। प्रतियोगी एवं विश्वीकृत व्यापारिक परिवेशमे, व्यवसायीगण यैह सोचैत छथि जे प्रेम एवं युद्धक भांति, व्यापार व्यवसायमे सब किछु जायजे छैक। एहि कारणें सार्वजनिक सम्पर्क अधिकारी, सम्पर्क कायम करयबला व्यक्ति, दलाल, पैकार आदिक संख्यामे अंधाधुंध वृद्धि भेल अछि- मुख्यत: देश ओ राज्यक राजधानीमे। ई व्यक्ति सभ राजनीति एवं नौकरशाहकें प्रभावित कय अपन मुताविक काज साधैत छथि। प्रश्न अछि जे कि राजनीतिक भ्रष्टाचार समाप्त नहि कयल जा सकैछ। आर्थिक विकासक मार्गमे गुप्त धन बड़ पैघ अड़चन उपस्थित कयने अछि।

बैंकिंग ओ वित्तीय व्यवस्था

आर्थिक विकासमे बैंक ओ वित्तीय संस्थाक महत्वपूर्ण भूमिका आजुक आर्थिक जगत मे भ' गेल छैक। दुर्भाग्य जे कोनो बैंक ओ राष्ट्रीय स्तरक वित्तीय संस्थाक प्रधान कार्यालय बिहारमे नहि छैक त' मिथिलांचक कोन कथा। ग्रामीण बैंकक प्रधान कार्यालय जरूर अछि। 1969 मे बैंकक राष्ट्रीयकरणक बाद रिजर्व बैंकक मानकक अनुसार कृषि क्षेत्र के 18 प्रतिशत ओ प्राथमिकतावला क्षेत्र कें 40 प्रतिशत ऋृण देबाक प्रावधान छैक। प्राथिमकतावला क्षेत्रमे त्रृणक अनुपात दिनानुदिन कम भ' रहल अछि। तखन ग्रामीण क्षेत्रमे लघु, ग्रामीण, कुटीर उद्योग-व्यवसायक विकास कोना संभव

होयत। एहि मानक के लागू करयबामे रिजर्व बैंक कोनो उत्तरदायित्व नहि निभा रहल अछि। एकर विपरीत नवीन आर्थिक नीतिक तहत राष्ट्रीयकृत बैंक निजी वा विदेशी बैंक स' प्रतिस्पर्द्धामे भिड़ल देखबामे अबैछ। आजुक वित्तीय व्यवस्था-तंत्रक सब स' पैघ कमजोरी ई छैक जे ओ विकासक जरूरतक प्रति संवेदनशील नहि अछि। एखन बैंक व्यापारक हेतु त्रृण नहि देबय चाहैत अछि, मात्र सरकारी प्रतिभूतिमे निवेश करैत अछि। ब्याज दरक ढांचा कठोर बना देल गेल छैक। 1995-96 मे 18-22 प्रतिशत ब्याज दर छल। वित्तीय संस्थाक दर 18 प्रतिशत छल। ब्याज भुगतानक खर्च वृद्धि भेल अछि। 1996-97 मे 13.85 प्रतिशत ब्याज दर भ' गेल छल। बैंक ओ वित्तीय संस्थाके उत्पादन करबाक हेतु प्रोत्साहन देबाक चाही। बैंक पर ई दायित्व होयबाक चाही जे ओकरा द्वारा देल गेल त्रृणक अंतिम उपयोग के नियमन करय। एहि विषयमे टंडन ओ चोरे कमेटीक मानकक आधार पर कम्पनीक अनुश्रवण बैंक द्वारा कयल जाय।

आजुक आर्थिक व्यवस्थामे उधारक सुविधा एक महत्वपूर्ण संरचना मानल जाइछ। 1981 धरि मात्र 894 वाणिज्यिक बैंक एहि अंचलमे छल। मार्च 1987 धरि बिहारमे 2467 वाणिज्यिक बैंक एवं 1775 ग्रामीण बैंकक शाखा छल। प्राथमिक ओ केन्द्रीय सहकारी बैंकक शाखा एहिमे नहि अछि। उधार जमा अनुपात बहुत कम छल। 1970 मे बैंकक जमा उधार अनुपात भारतमे 76 प्रतिशत छल जे घटिकय 1987 मे 61.00 प्रतिशत भ' गेल। यैह अनुपात बिहारमे भारतक 76 प्रतिशतक जगह 41.6 प्रतिशत एवं 1987 मे घटिकय जे भारतक 61.00 प्रतिशत छल से 37.2 प्रतिशत भ' गेल। एहि स' स्पष्ट होइछ जे बैंक वित्त व्यवस्थामे एहि क्षेत्रमे उचित ध्यान नहि दैछ। सम्पूर्ण बिहारक जखन ई स्थिति अछि तखन मिथिलांचल अवहेलित अछि एहिमे कोन आश्चर्य।

उपरोक्त विकृतिके ठीक करब वित्त व्यवस्थाके कारगर बनयबाक हेतु उदारीकरणक चरित्र ओ क्रम पर पुनर्विचार परमावश्यक अछि। वित्त क्षेत्रक नीतिमे उद्योग ओ कृषि विकासमे त्रृणक महत्ता पर समुचित ध्यान देबय परत। बैंक त्रृणक फैलाव एवं एकर प्रयोग अर्थव्यवस्थाक स्वास्थ्य पर असर करैछ। सरकार के कृषि एवं श्रम प्रधान उद्योगमे निवेश बढ़बय पड़तैक तथा क्षेत्रीय असमानता ओ कृषक एवं कारीगरक आय वृद्धिक लेल ग्रामीण विकास पर खर्च बढ़बय परतैक। नवम पंचवर्षीय योजनाक दृष्टिकोण पत्र मे यैह लक्ष्य अछि।

बिहार सरकारक आर्थिक अधोगति

राज्यक आयक अनुमान सकल घरेलू उत्पादक आधार पर आकल जाइत अछि। सकल घरेलू उत्पाद राज्यमे उत्पादित वस्तु ओ सेवाक मूल्यके कहल जाइछ। सकल घरेलू उत्पादमे सकल पूजी निर्माणक अहम भूमिका छैक। सकल पूजी निर्माणक प्रभाव राज्यक अर्थव्यवस्था पर परैछ। वर्ष 1990-91 स' 1994-95 क अवधिमे सकल पूजी निर्माणक स्थिति एहि तरहें छल

1990-91	—	1103.43	करोड़ रुपया
1991-92	—	904.62	करोड़ रुपया
1992-93	—	1087.21	करोड़ रुपया
1993-94	—	1065.80	करोड़ रुपया
1994-95	—	683.89	करोड़ रुपया

पूंजीगत व्ययमे 1990-91 क तुलनामे 1994-95 मे 46.38 प्रतिशत ह्रास भेल। एहि स' वर्ष 1995-96 क सकल घरेलू उत्पाद प्रभावित भेल। पूंजीगत व्यय ओ गत वर्षक तुलनामे प्रतिशत एहि तरहें अछि :

1990-91	—	2152.57	करोड़ रुपया	100	प्रतिशत
1991-92	—	2010.50	करोड़ रुपया	93.72	प्रतिशत
1992-93	—	2356.61	करोड़ रुपया	116.80	प्रतिशत
1993-94	—	2244.04	करोड़ रुपया	95.18	प्रतिशत
1994-95	—	1154.20	करोड़ रुपया	51.44	प्रतिशत

गरीबी रेखा स' नीचा गुजर करयवला बिहारमे 1987-88 मे 52.13 प्रतिशत व्यक्ति छलाह जे 1993-94 मे बढ़िकय 54.96 प्रतिशत भ' गेल। जखन एहि अन्तराल मे भारतवर्ष मे 38.36 प्रतिशत स' घटिकय 35.97 प्रतिशत पर चल आयल। 1991 क जनगणनामे साक्षरता 52.21 प्रतिशत समस्त देशक छल जखन कि एतय मात्र 38.48 प्रतिशत। महिलामे मात्र 22.89 प्रतिशत छल। राज्यक नेट डोमेस्टिक प्रोडक्ट (NSDP) आजुक मूल्यक आधार पर 1980-81 मे जे 6.01 प्रतिशत छल से 1990-91 मे 5.93 प्रतिशत एवं 1996-97 मे घटिकय 3.05 प्रतिशत भ' गेल। 1990-91 स' 1996-97 मे 0.42 प्रतिशत सकल घरेलू उत्पादमे (GDP) ह्रास भेल छैक। 1997-98 धरि 600 स' 800 करोड़ टाका व्ययमे वित्तीय घाटा रहैत छल। 1998-99 मे 3000 करोड़ टाका भ' गेल एवं अनुमानत: 1999-2000 मे सेहो 3000 करोड़ रुपया स' उपरे रहत।

राज्य सरकारक उपक्रमक स्थिति दयनीय अछि। मार्च 1997 धरि 642 करोड़ रुपया राज्य सरकार अपन हिस्सा पूंजी लगौने अछि जखन कि लाभांश अर्जन शून्य छैक। 12 टा राज्य सरकारक इकाईमे 173 करोड़ रुपया लागल अछि, जकर घाटा मार्च 1997 धरि 769 करोड़ रुपया भ' गेल छैक। बिहार राज्य विद्युत बोर्ड कें 2000 करोड़ रुपया घाटा भ' चुकल छैक। बिहार सरकार 2000-2005 धरि 72, 996 करोड़ टाका घाटा व्ययक बजटमे आकने अछि, जे 2000-2001 मे 13,345 करोड़ रुपया अनुमानित अछि। बिहार सरकारक आर्थिक दिवालियापनक संक्षिप्त विवरण यैह अछि। मिथिलांचल सेहो एहि स' ग्रसित अछि।

यूरो मुद्रा

एक जनवरी 1999 स' यूरोपीय संघक एगारहटा देश एकीकृत यूरोपीय मुद्रा अपनौलक

जकरा 'यूरो' नामकरण कयल गेल अछि। ई केन्द्रीय मौद्रिक इकाई अपन पहिले दिन स' जर्मनीक ड्यूस मार्क, फ्रैंचक फ्रैंक ओ इटलीक लीराक स्थान लय लेने छैक, जखन कि एहि मुद्रा सबहक प्रचलनक समाप्तिमे तीन वर्ष लागत। आस्ट्रिया, बेल्जियम, फिनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, आयरलैंड, इटली, लक्जमबर्ग, नीदरलैंड, पुर्तगाल ओ स्पेन एहि मुद्राकें अपनौने अछि। मास्टिक संधिमे लगायल गेल शर्त के मानलाक बाद एहि एकीकृत मुद्रा कें अपनाओल गेल अछि। एहिमे यूनान, ब्रिटेन, डेनमार्क ओ स्वीडन सम्मिलित नहि भेल अछि। ई संस्थान आगू चलिकय यूरोपीय केन्द्रीय बैंकक रुप लेत।

एहि एकीकृत मुद्राक संबंधमे महत्वपूर्ण बात ई अछि जे विश्वक मुद्रा प्रणालीमे ई संतुलन कारकक रुपमे काज करत। जाहि स' अमेरिकी डालर पर प्रभाव पड़त। बाजारक आकार ओ विश्वक प्रमुख व्यावसायिक तथा आर्थिक शक्ति होयबाक कारणें एहि एकीकृत मुद्राक प्रति आकर्षण स्वाभाविक छैक। आशा कयल जाइछ जे मध्यम अवधिमे अमेरिकी डालरक बराबर व्यापार, निवेश तथा भंडारणक मुद्रा बनि सकैछ। यूरो क्षेत्रक एगारह सदस्य 29 करोड़ लोकक प्रतिनिधित्व करत जखन कि अमेरिकाक 26.8 करोड़ ओ जापानक 12.6 करोड़ जनसंख्या अछि। एहि देशक विश्व व्यापारमे 18.6 प्रतिशत हिस्सा छैक, अमेरिकाक 16.6 प्रतिशत ओ जापानक 8.2 प्रतिशत। यूरो विश्व व्यापारक माध्यममे डालर के कड़ा टक्कर देत।

भारत एहि स' लाभान्वित होयत। भारतीय निर्यात के लेन-देनमे 50 प्रतिशत गिरावट संभव छैक। व्यापार विपणनक लाभ भेटि सकत। यूरोपीय संघक निर्यातक संभावनामे वृद्धि होयत। आयात सेहो अधिक होयत, सदस्य देशक अधिक निवेशक कारणें विनियम दरमे हठात परिवर्त्तन स' व्यापार पर आघात होइछ से कम भ' जायत। एहि स' व्यापारीकें लाभ होयत। एहि स' एशियाक यूरो क्षेत्र ओ भारतक बीच सुदृढ़ व्यापारिक संबंध स्थापित करबाक मौका बढ़ि जायत। त्रृणक ब्याज-दर एक नव विनियम दर पर आधारित होयत।

डा. अमर्त्य सेनक कल्याणकारी अर्थव्यवस्थामे योगदान

आजुक दुनियामे भुखमरीक समस्याक समाधानमे खाद्य उत्पादन निस्सन्देह एक महत्त्वपूर्ण घटक अछि, लेकिन अन्य समस्याक समाधान सर्वोपरि छैक। सामान्य आर्थिक विकासक वृद्धि, रोजगारक अवसरकें बढ़ायब, उत्पादनमे विविधताक व्यवस्था, चिकित्सकीय एवं स्वास्थ्य सुविधामे वृद्धि करब, बुनियादी शिक्षा एवं साक्षरताक आयाम के बढ़ायब, दुर्बल माता एवं शिशुक भोजनक विशेष व्यवस्था, लोकतंत्र ओ समाचार मीडिया के मजबूत करब, लिंग आधारित असमानता के दूर करब एवं अन्य एहने काज करब परमावश्यक। एहि भिन्न-भिन्न आवश्यकताक पूर्तिक लेल एक उचित व्यापक विश्लेषण जरूरी छैक, जे समसामयिक विश्वमे भूखक विविधपक्षीय स्वरुपक प्रति संवेदनशील हो। भूखक समस्याकें अन्य अभाव स' अलग नहि कयल जा सकैछ ओ निश्चित रुप

स' एकरा लेल अधिक व्यापक दृष्टिकोण जरूरी छैक। भूख मूलत: सामान्य निर्धनताक ओ खाद्य पात्रता तथा पर्याप्त स्वास्थ्य एवं सामाजिक देखभालक व्यवस्थाक अभावक समस्या थिक, खाद्य उत्पादनक मात्राक समस्या नहि। व्यापार एवं विनिमयक माध्यम स' खाद्य पदार्थ प्राप्त कयल जा सकैछ। विश्व मंडीमे खाद्य सामग्रीक क्रय-विक्रय होइछ। मुद्रास्फीतिक दौड़मे पिछड़यवला समूह भुखमरीक शिकार होइत अछि। 1943 क बंगालक अकाल जाहिमे 25 स' 30 लाख लोकक मृत्यु भेल छल 'तेजीक अकाल' छल। मुद्रास्फीतिक कारण खाद्य पदार्थक अभाव भेल छल। व्यापक बेरोजगारी छल। जनन-क्षमता, जनसंख्या वृद्धि, खाद्य असुरक्षा ओ भूखक समस्याकें बढबैत अछि। युवती के अधिकार सम्पन्न बनयबामे मात्र परिवार नियोजने नहि अछि। सामान्यत: स्त्रीक आर्थिक एवं सामाजिक स्तरकें उन्नत करब सेहो छैक। महिला रोजगारक सम्भावना ओ सम्पत्तिक अधिकारमे भागीदारी तथा हुनका बीच शिक्षाक प्रसारक महत्वपूर्ण भूमिका होयत। अकाल युद्ध एवं सैनिक कारवाइ स' सेहो जुड़ल रहैछ। युद्ध स' मात्र उत्पादक परिसम्पत्ति नष्ट नहि होइछ, अपितु निवेश ओ आर्थिक विकासक प्रोत्साहनमे अभाव भ' जाइछ। जीवनक प्रारम्भिक वर्षमे अल्पपोषक दीर्घावधिमे स्वास्थ्य पर एवं प्रतिभाक विकास पर प्रभाव परैछ। राजनीतिक ओ नागरिक अधिकारक प्रयोग स' आजुक दुनियामे भूखक समस्या ओ एकर बहुविधि परिणाममे काफी परिवर्त्तन आबि सकैछ। भूखकें मिटयबाक हेतु एहि समस्याकें व्यापक परिप्रेक्ष्यमे बुझबाक चाही। एहिमे मात्र खाद्य उत्पादन ओ कृषिक विस्तारे नहि बल्कि सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था ओ अधिक व्यापक रूप स' राजनीतिक ओ सामाजिक व्यवस्थाक कार्यप्रणाली शामिल हो, जे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुप स' खाद्य पदार्थ प्राप्त करब तथा स्वस्थ एवं पोषण पयबाक लोकक क्षमता के प्रभावित करय ओ सुविचारित सरकारी नीतिक माध्यम स' समस्याक समाधान हो। भूखक अर्थ भोजन स' पैघ अछि। आजुक एहि विश्वमे भूखकें मेटेबाक लेल खाद्य-आपूर्तिक अलावा अन्य प्रोत्साहनक आवश्यकता छैक।

मिथिलांचलक सर्वांगीण विकासक हेतु डा. सेनक कल्याणकारी अर्थव्यवस्था बहुत महत्वपूर्ण अछि। एतय मानव संसाधनक विकास कयल जाय। शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा ओ भूमि सुधारक दिस अधिक प्रयास परमावश्यक छैक।



संचार सेवा

तकनीकी प्रतिस्पर्द्धा एवं द्रुत गति स' भ' रहल औद्योगिक विकासक वर्तमान युगमे संचारक विशेष महत्व अछि। कोनो राष्ट्रक हेतु संचार सेवा मात्र सूचना सम्प्रेषणक हेतु आवश्यके नहि अछि बल्कि देशक चौमुखी विकासमे एकर महत्वपूर्ण योगदान छैक। पूर्वमे एहन मानल जाइत छल जे मीडिया सांस्कृतिक अभिव्यक्ति एवं लोकक रहन-सहन, तौर-तरीका आदिक विषयमे जानकारी देबाक माध्यम होयत किन्तु वास्तवमे आइ मीडियाक अपन एक संस्कृति विकसित भ' गेल छैक। कम्प्यूटर तकनीक तथा नेटवर्क आ अन्य अंतरव्यक्तिक एवं संस्थागत संचार माध्यम एक मुख्य शक्तिक रुप मे कारगर भेल छैक। एकर महत्वक दू कारण छैक। पहिल एहि तकनीकी केन्द्राभिमुख भयकें एक दोसर स' जुड़ब तथा दोसर एक विस्तृत पैमाना पर एकर उपयोग जे कि माइक्रोप्रोसेसर एवं चिप्स कें अयला स' संभव भ' सकल छैक। दूरसंचार तकनीकी तथा कम्प्यूटरक बढ़ैत उपयोग स' व्यवसाय चलयबाक तरीका तथा प्रसारण एवं दूर-संचार व्यवस्थामे बदलाव आयल छैक। एक 'टु वे वीडियो सिस्टम' तथा दोसर नेटवर्क स' जुड़ल व्यक्तिगत कम्प्यूटरक संग कार्यालयमे या घर बैसल विश्वक कोनो कोन स' सूचनाक आदान-प्रदान कय सकैत छी तथा वीडियो माध्यम स' द्विपक्षीय वार्तालाप कयल जा सकैछ। संचारक क्षेत्रमे एहि परिवर्तनक परिप्रेक्ष्यमे बीसम शताब्दीक समापन वर्षमे दू बिन्दु अपन पहचान बना लेने अछि एवं एकैसम शताब्दीक संचार क्षेत्र पर वृहत रुप स' अपन अस्तित्व बरकरार राखत ओ थिक 'सेटेलाइट टेलीविजन' तथा 'सूचना सुपर हाइवे'।

नव तकनीक सरकार द्वारा प्रसारित रेडियो ओ टेलीविजनक एकाधिपत्य के भग कय देने अछि एवं ओकर संचालन करयवला नियम ओ कानून के बेकार कय देने अछि। अनेक विदेशी चैनेलक उपलब्धता आकाशमार्ग द्वारा भ' रहल आक्रमण स' चिंता उपस्थित कय देने अछि। आधुनिक पश्चिमी देश अपन आर्थिक तथा राजनैतिक हितक ध्यानमे बहुराष्ट्रीय ओ अन्य व्यापार चैनलक माध्यम स' नवीन संचार तकनीकके तेसर दुनियामे धकेलबाक पूर्ण प्रयास कयने अछि। तेसर दुनियामे एकरा प्रति खिंचाव सेहो अछि।

मीडिया एकटा शक्ति अछि आ मीडियाक विकासमे योगदान छैक। सूचना प्रौद्योगिकी पर राजनेता, योजनाकर्त्ता, प्रशासक, व्यापारी, वैज्ञानिक, शोधकर्त्ता, मीडिया स' जुड़ल व्यक्ति मनोरंजनकर्त्ता सब दूरदर्शी व्यक्तिक काफी ध्यान गेल अछि। कारण एकर राष्ट्रीय विकास, विश्व व्यापार तथा वाणिज्यक संवर्द्धन, उद्योग आ कृषिक विकास, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, राष्ट्रीय एकता तथा अंतहीन आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक काजमे अत्यधिक महत्व अछि। सूचना प्रौद्योगिकी विकासक कार्यक विकल्प नहि मुदा अनुभव कयल जा रहल अछि जे ई सामाजिक-आर्थिक उद्देश्य

पूर्तिक लेल एक बढ़िया साधन थिक। मिथिलांचलमे जतय जनसंख्या विशाल अछि एवं तेजी स' बढ़ि रहल अछि, प्रति व्यक्ति आय कम अछि, अशिक्षाक स्तर पैघ अछि, सूचना प्रौद्योगिकी परिवर्त्तनक हेतु उत्प्रेरक काज कय सकैछ आ समृद्धि एवं सुन्दर जीवन-स्तरक लेल पथ-प्रदर्शक भ' सकैछ।

माहात्मा गाधीक 125 म जयन्तीक अवसर पर 1995 मे भारत सरकार पंचायत सचार सेवा योजना शुरू कयलक। एकर अधीन साधनहीन सुदूर ग्रामीण इलाकामे डाक विभाग द्वारा पंचायत संचार सेवा केन्द्र स्थापित करबाक निर्णय लेल गेल। एहि योजना स' लाखो ग्रामीण बेरोजगारके रोजगार उपलब्ध होयत ओतहि कम लागत पर अपेक्षाकृत अधिक डाक सुविधाक प्रसार एहेन क्षेत्रमे कयल जा सकत जतय सेवा केन्द्र स्थापित करबाक लेल ग्राम पंचायत के डाक विभाग स' अनुबन्ध करबय परत एवं ग्राम पंचायत एहि हेतु भवन उपलब्ध करायत। योजनामे ग्राम पंचायत के स्वैच्छिक भागीदारीक प्रावधान कयल गेल छैक। पंचायत संचार सेवा केन्द्रके डाक संबंधी काज सुचारु रुप स' निष्पादन तथा प्रबंधनक लेल ग्राम पंचायत डाक विभागक प्रति उत्तरदायी होयत। प्रत्येक केन्द्र पर डाक संबंधी काम-काज निपटयबाक लेल एक-एकटा ग्रामीण शिक्षित बेरोजगार कें नियुक्त कयल जायत। एकर चयन पंचायत समिति द्वारा ग्राम पंचायत स्तर पर कयल जायत। एहि संचार सेवा केन्द्र द्वारा संदेशक आदान-प्रदानमे सहायता होयत संगहि साक्षारताक प्रचार-प्रसारमे सहायक सिद्ध होयत। विकासक लाभकें ग्रामोन्मुखी करबामे सरकारके एहि प्रचार योजना स' लाभ होयत।

अस्सीक दशकमे संचार विशेषज्ञ कहैत छलाह ''पहिने पिछड़ल देश ओ छल जतय औद्योगिक क्रान्ति नहि भेल छल। आब भविष्यमे पिछड़ल भूभाग ओ कहल जायत जे संचार क्रान्ति स' अपना कें अछूत राखत''। एहि बीचमे आई टी अर्थात सूचना प्रौद्योगिकी पहुंच, विविधता, उपयोग तथा विस्तारमे अविश्वसनीय प्रगति कयने अछि। संचार उपग्रह, जाहिमे सुदूर संवेदन उपग्रह, निम्नस्तरीय कक्षाक उपग्रह (इरोडियम उपग्रह) समुद्री उपग्रह (सतह पर चलयबला छोट भू-केन्द्र), अधिक गति तथा बहुमुखी कम्प्यूटर, काम्पेक्ट डिस्क, डिजिटल कम्प्रेशन तकनीक, लोकल एरिया काम्पेक्ट डिस्क, डिजिटल वाइड एरिया नेटवर्क (एल ए एन, एम ए एन तथा डब्लयू ए एन) तथा नेटवर्कक इनटरनेट तथा उच्च गतिवला स्थलीय चैनल जाहिमे आप्टिकल फाइबर, रेडियो, टांजिस्टर जाहिमे एच. डी. टी. वी. तथा केवल टी. वी. सम्मिलित अछि–ई सब समय ओ दूरीक अवधारणामे एतेक परिवर्तन अनलक अछि, जाहि स' मानव एवं मानव, समाज एवं समाज, देश एवं देशक बीच संचारमे कोनो बाधा नहि रहि गेल छैक। सब किछु आमने-सामने अतरव्यक्ति संचार सन प्रतीत होइछ। आधुनिक संचारकर्ताक लेल कोनो इलाका दूर या पहुंच स' असंभव नहि। दूरी ओ समयकें जीतबामे सफलता प्राप्त कयलक अछि।

सूचना प्रौद्योगिकी पर राजनेता, योजनाकर्ता, प्रशासक, व्यापारी, वैज्ञानिक, शोधकर्ता, मीडिया स' जुड़ल व्यक्ति, मनोरंजनकर्ता एवं सब दूरदर्शी व्यक्ति ध्यान आकृष्ट कयने अछि। कारण जे एकरा स' राष्ट्रीय विकास, विश्व व्यापार एवं वाणिज्यक संवर्द्धन, उद्योग ओ कृषिक विकास स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, राष्ट्रीय एकता तथा अनेको अन्य आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक काजमे अत्यधिक महत्व अछि। सूचना प्रौद्योगिकी विकासक काजक कोनो विकल्प नहि अछि। किन्तु ई सर्वमान्य भ' गेल अछि जे सामाजिक-आर्थिक विकासक हेतु एक बढ़िया साधन अछि।

मिथिलांचलक जनसख्या विशाल अछि आ ओ तेजी स' बढ़ि रहल अछि। आय प्रतिव्यक्ति अत्यल्प अछि, अशिक्षा व्याप्त अछि। सूचना प्रौद्योगिकी परिवर्तनक लेल प्रत्येक काज कय सकैछ तथा समृद्धि एवं सुन्दर जीवन-स्तरक हेतु पथ-प्रदर्शक भय सकैत अछि।

1981 क जनगणनाक अनुसार मिथिलांचलमे 4586 डाक तार कार्यालय छल। एतय 6978 व्यक्ति के ई सेवा भेटैछ, जखनकि भारतमे औसत 4831 व्यक्ति पर ई सेवा उपलब्ध छैक। भारतक औसत सख्या प्राप्त करयमे एतय 2000 आ ओर डाकतार विभागक कार्यालय खुजयक चाही। सातम पंचवर्षीय योजना कालमे 6000 नव डाकतार कार्यालय खुजय लेल छल। बिहारक कोटामे कतेक आयल से अज्ञात अछि।

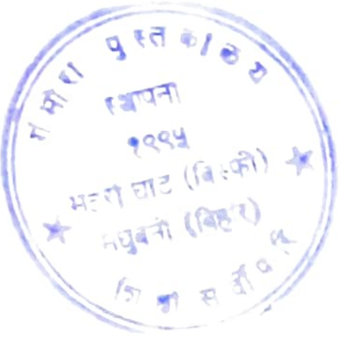
1999-2000 धरि टेलीफोन सेवामे विस्तारक योजना अछि। एहिमे सर्वप्रथम पटना-हाजीपुर 400 लाइनक डिजिटल इलेक्ट्रोनिक एक्सचेंजक निर्माण भ' चुकल अछि। प्राचीन टेलीफोन एक्सचेंजक नवीकरण भ' रहल अछि। जाहिमे हस्तचालित एक्सचेंजक डिजिटल इलेक्ट्रोनिक परिवर्त्तन सेहो छैक। 3900 लाइनक मैक्स प्रकारक एक्सचेंज मुजफ्फरपुरमे अछि। सातम योजना कालमे डिजिटल यू एच एफ 30 चैनल पद्धति निम्नांकित मार्ग मे प्रस्तावित छल।

(i) कटिहार-साहेबगंज, (ii) मधेपुरा-सहरसा, (iii) मधेपुरा उदाकिसुनगज। एहि प्रणालीक 120 चैनल (8 Mb/s) निम्नमार्ग मे प्रस्तावित छल। (i) मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी (ii) पटना-हाजीपुर, (iii) सहरसा-दरभंगा। मुजफ्फरपुर-दरभगा-समस्तीपुरमे 34/Mb/s प्रणालीक निर्माण सेहो छैक। आठम योजना कालमे भागलपुर-नवगछिया, बेतिया-बगहा, दरभंगा-बेनीपुर, पूर्णिया-अररिया, सहरसा-सुपौल, सहरसा-बीरपुर, समस्तीपुर–दलसिंहसराय, समस्तीपुर-रोसड़ा, मधुबनी–झंझारपुर, मधुबनी-बेनीपट्टी, किसनगज–झटकिया। सब 15 डिजटल UHP 30 चैनल स' जोरल जायत। डिजीटल 120 चैनल स', मधुबनी-दरभंगा, साहेबगंज-कटिहार, सीतामढ़ी–शिवहर ओ मुंगेर-खगड़ियाके जोरल जायत। नवम पंचवर्षीय योजना कालमे भागलपुर-नवगछिया, दरभगा-बेनीपुर, पूर्णिया-अररिया, सहरसा-सुपौल, सहरसा-बीरपुर, समस्तीपुर-दलसिहसराय, समस्तीपुर-रोसड़ा मार्गमे UHF 120 डिजिटिल चैनेलक उपयोग होयत। एकर अतिरिक्त दरभगा-

जयनगर, मुजफ्फरपुर-मोतीपुर, मुजफ्फरपुर-ढोली, हाजीपुर-महुआ, मधुबनी-झंझारपुर, दरभंगा-सकरी, समस्तीपुर-पटोरी, समस्तीपुर-पूसा ओ बेगूसराय-बरौनी मार्गमे एहि सेवाक विस्तार प्रस्तावित छल। 35 Mb/s 480 डिजिटल माइक्रोवेव प्रणाली स' मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी, कटिहार-पूर्णिया, मोतिहारी–गोपालगंज, कटिहार-साहेबगंज, पूर्णिया–मधेपुरा-सहरसा, कटिहार-भागलपुर-मुंगेर के जोरबाक प्रावधान छैक। DOT के 12 ऑप्टिकल फाइबर केबुल प्रणाली पटना स' गौहाटी होइत जोरबाक प्रावधान कयने अछि। एहि प्रणाली स' अत्यधिक लाभ अर्जनक हेतु पटना-मुजफ्फपुर-दरभंगा समस्तीपुर–बरौनी-खगड़िया-गुलाबबाग-किसनगंज-कटिहार प्रणाली स' जोरब श्रेयस्कर होयत। औद्योगिक ओ वाणिज्य व्यसायक दृष्टि स' टेलेक्स सेवाक विस्तार परमावश्यक। हाजीपुर, मुजफ्फरपुर, बेगूसराय, कटिहार, पूर्णिया, दरभंगा, बेतिया, समस्तीपुर-सहरसा, फारबिसगंज, हाजीपुर, मुजफ्फरपुर, बेगूसराय, कटिहार, पूर्णिया, दरभंगा, बेतिया, समस्तीपुर, सहरसा,फरबिसगंज ओ सीतामढ़ी के एहि सुविधा स' जोरबाक प्रयास परमावश्यक छैक। मिथिलांचलक लगभग 27,000 गामकें वर्ष 2000 धरि टेलीफोन सुविधा स' जोरबाक प्रयास चलि रहल छैक।

सैटेलाइट युग मे संचार सेवा औद्योगिक ओ आर्थिक विकासक हेतु एक प्रमुख आधारभूत संरचना अछि, जकर सर्वांगीण विकास मिथिलांचलक हेतु परमावश्यक।

■



संदर्भ

1. मिथिलातत्व विमर्श म. म. प. परमेश्वर झा, मैथिली अकादमी
2. मिथिलाक इतिहास डा. उपेन्द्र ठाकुर
3. Mithila, A Union Republic Dr. Laksman Jha, Darbhanga 1952
4. The Northern Border
5. Mithila will Rise
6. मिथिलाक संक्षिप्त राजनैतिक इतिहास राधाकृष्ण चौधरी, वैदेही समिति, दरभंगा
7. The making of Indian Princes Edward Thompson, curzon Press
8. History of Tirhuth Shyam Narayan Singh, Calcutta
9. वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन (1975-76) बिहार सरकार, पटना
10. जब नदी बंधी, जयप्रभा अध्ययन एव अनुसंधान केन्द्र, मधुपुर 1991
    बाढ़ नियंत्रण की कोसी यात्रा—पृष्ठ 20-61 तक
11. बाढ से त्रस्त—सिंचाई से पस्त दिनेश कुमार मिश्र 1990
12. Bihar District Gazetter Debesh Mukherjee, Saharsa (1965)
13. The Indian Nation Patna April, 1970
14. बन्दिनी महानन्दा दिनेश कुमार मिश्र 1994
15. Anvesak Vol. 28, Number 1—Jan–June'98, Development Programme and Policies for small scale Sector
16. मिथिलाक उद्योग ओ व्यापार—विद्यापति सिंह
17. मिथिला भाषा ओ आर्थिक स्थिति डा. लक्ष्मण झा एव डा. लक्ष्मीनारायण सिंह
18. Wealths of Mithila, Dr. Lakshminarayan Singh
19. Economics of North Bihar, Dr. Prabodh K. Jha
20. The Economic Heritage of Mithila S.K. Jha, B. Jha
21. बिहार उपलब्धियों का वर्ष (1996- 97), सूचना एव जन-सम्पर्क विभाग, बिहार, पटना
22. बिहार विकास की गाथा, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना 1995
23. बिहार का संकट और उसका हल, त्रिपुरारि शरण 1974
24. National Seminar on Development, A.N. Sinha Institute of Social studies and Bihar Vikas Abhiyan Samiti, Patna
25. A Peep into Seventyfive years of Bihar, Bihar Research Society
26. Bihar : A profile M.N. Karna
27. बिहार एक झलक 1995—सांख्यिकी एवं मूल्याकन निदेशालय, बिहार सरकार
28. CMIE Profile of Districts November 1993
29. Changing Pattern of Regional Disparity in Bihar during 1980-81 to 1990-91 Director of statistics And Evaluation, Govt. of Bihar, Patna 1994
30. L.N. Mishra Commemoration Volume Bihar Research Society

31. **Small scale industry** Survey Report
32. **The Developing world** E.S. Simpson
33. **Globalization and Fragmentation** Lan clark
34. **Women and Industrialigation in Asia** Susan Horsion
35. Human Development Report UNDP 1996
36. **The Cambridge Economic History of India** Vol 2.
37. **Agrarian Unrest And Socio-Economic change in Bihar 1900-1980** Arvind N. Das
38. **A Draft Perspective Plan Bihar** 1978-79
39. **Techno-Economic Survey of Bihar**
40. **Bihar Report of a study Team** Sponsored by IDBI and other
41. **मिथिला भारती** मैथिली साहित्य संस्थान 1970
    मिथिलाक पथ-पद्धति एवं अन्तर्देशीय व्यापार जन नारायण ठाकुर
    मिथिलामे कसीदाक परम्परा दयाशंकर उपाध्याय अंक 3—1972
42. **Basic Road statistics of India** Govt. of India
43. **विहार राज्यकी जिलावार आर्थिक प्रगति**–अध्ययन प्रतिवेदन
44. **State Level Public Enterprise in Bihar**
45. **Seminar on Industrialization of North Bihar** Industrial Development Bank of India 1989
46. **Sickness of small scale Industries in India** Rageshwar Mishra 1984 A.N. Institute of Social Studies, Patna
47. **नीति, कार्यक्रम और पहल** (मार्च 1998–मार्च 1999) पत्र सूचना कार्यालय भारत सरकार, नयी दिल्ली
48. **द्रुत सर्वेक्षण योजना का वार्षिक प्रतिवेदन**–योजना विभाग
49. **कन्फेड्रेशन ऑफ इन्डियन इन्डस्ट्री** शताब्दी राष्ट्रीय सम्मेलन एवं वार्षिक सत्र 25-26 अप्रैल 1995, नई दिल्ली
50. **Destination Bihar Invshment opportunity** Prepared by Deptt. of Industries, govt of Bihar in 1995 at meet of NRI in Patna.
51. **The approach to New Industrial Policy 1995 An outline**



नरेन्द्र झा

दरभंगा जिलाक तरौनी गाममे अनन्तचतुर्दशी, 1936 मे जन्म । दरभंगा, दिल्ली ओ कलकत्तामे अध्ययन । कलकत्ते स' चार्टर्ड एकाउन्टेंटक डिग्री आ ओतहि किछु वर्ष अपन पेशाक संगहि 'मिथिला दर्शन' आ 'मिथिला मिहिर' मे मिथिलाक उद्योग-धंधा आ अर्थव्यवस्था पर नियमित लेखन । मैथिली आंदोलन आ सांस्कृतिक गतिविधिमे संलग्न । सम्प्रति पेशा स' जुड़ल रहैत यदाकदा 'आरंभ'क संगहि मिथिलांचलक अर्थव्यवस्था पर आकाशवाणी, पटनाक लेल लेखन

सम्पर्क

झा एण्ड एसोसिएट्स
मदनधारी भवन,
एस. पी. वर्मा रोड,
पटना-800 001
फोन : 224932

2224932



शिखा प्रकाशन